।। ओ३म ।।

धर्म से जीवन

ईश्वर की सृष्टि के अद्भुत व्याख्याता पूज्यपाद गुरूदेव श्रृंगी मुनि कृष्णदत जी महाराज द्वारा विशेष योग समाधि मे,देवयान की आत्माओ को सम्बोधित प्रवचनो का संकलन
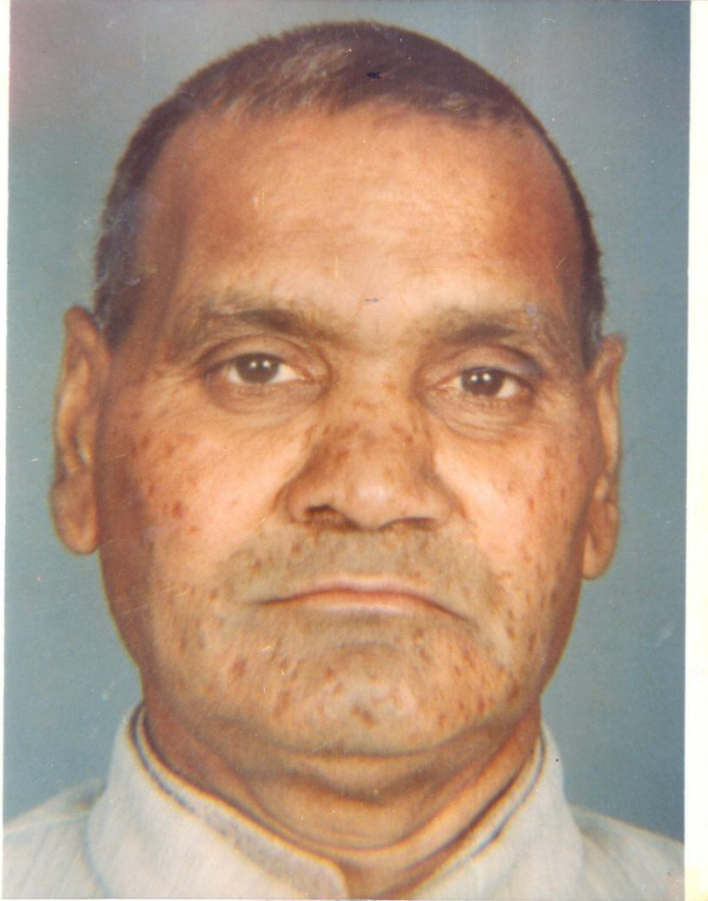
प्रकाशक :

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)

अन्तरजाल सम्पादक : श्री सुकेश त्यागी – अवैतनिक

अन्तरजाल विशेष सहयोग : डा०सतीश शर्मा (अमेरिका)– अवैतनिक

अन्तरजाल पुस्तक संस्करण : प्रथम प्रेषण

सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,१११

विक्रम सम्वत् : अश्विन शुक्ल पूणिमा ,२०६७

गुरुदेव का जीवन

१४ सितम्बर १९४२,उतर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के ,ग्रम खुर्रमपुर सलेमाबाद मे एक बालक का जन्म हुआ ।

बालक जन्म से ही एक विलक्षण से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी वह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा मे, कुछ अन्तराल लेटजाता या लिटा दिया जाता तो उसकी गर्दन दायें बायें हिलने लगती , कुछ मन्त्रोच्चारण और उसके बाद पुरातन संस्कृति पर आधारित ४५ मिनट के लगभग एक दिव्य प्रवचन होता । बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ मे आवाज अस्पष्ट होती और जैसे आयु बढने लगी वेसे ही आवाज और विषय दानो स्पष्ट होने लगे । पर एक अपठित बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विषय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था । प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की एंसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विषय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था ।

इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनो से ही हुआ । कि यह सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालो मे श्रृंगी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल मे आदि ब्रह्म के शाप के कारण इस युग मे जन्म का कारण बनी । गुरुदेव इस जन्म मे भले ही अपठित रहे,लेकिन शवासन की मुद्रा मे आते ही इनका पूर्वजन्मित ज्ञान,उदबुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष–स्थ आत्माओ का दिव्य उद्‌बोधन ,प्रवचन करते और शरीर की स्थिति यहॉ होने के कारण हम सबको भी इनकी दिव्य वाणी सुनाई देती । इन पंवचनो मे ईश्वरीय की सृष्टि का अद्‌भुत रहस्य समाया हुआ है , ब्रह्माण्ड की विशालता , सृष्टि का उद्‌देश्य,विभिन्न कालो का आंखो देखा वर्णन भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का दर्शन क्या कुछ दिव्य न हीं है इन प्रवचनो मे ये किसी भी मनुष्य का,समाज का और राष्ट्र का मार्ग दर्शन करने का सामर्थ्य रखते है ।

२० वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्य और मार्गदर्शन करते रहे ।

दिल्ली के कुछ प्रबुद्ध महानुभवो ने प्रवचनो की इस निधि को शब्द ध्वनि लेखन उपकरण के द्वारा संग्रहित करके ,पुस्तक रूप मे प्रकाशित करने का निश्चय किया, जिसके लिए वैदिक अनुसन्धान समिति नामक संस्था का गठन किया । जिसके अर्न्तगत सन् १९६२ से प्रवचनो को संग्रहति और प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इस दिव्यात्मा ने पूर्व निर्धारित ५० वर्ष के जीवन को भोगकर सन् १९९२ मे महाप्रयाण किया ।

इस अन्तराल इनके १५०० प्रवचन, शब्द ध्वनि लेखित यन्त्र के द्वारा ग्रहण किये गये । जिनको धीरे–धीरे प्रकाशित किया जा रहा है.वैदिक जीवन और वैदिक संस्कृति का जो स्वरूप इनमे समाया हुआ है । उसके सम्वर्धन , संरक्षण और प्रसारण के लिए हर वैदिक धर्मी के सहयोग की अपेक्षा है । जिससे वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति से निहित यह महान ज्ञान जनमानस मे प्रसारित हो सके।

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)

धर्म से जीवन

विषय सूची — पृष्ठ संख्या

राजा रावण का राष्ट्र———02—02—82 5

राजा रावण के पुत्र ---------- 5
विद्यालय का सूत्र ---------- 5
नैतिकता ---------- 5
विज्ञान ---------- 6
वैज्ञानिक महाराजा कुम्भकरण ---------- 6
मंगल का वायुमण्डल ---------- 7
इन्द्र ---------- 7
राजाओं की गोष्ठियाँ ---------- 7
राजा का कर्तव्य ---------- 7
त्रिपुरी के राजा मेघनाद ---------- 8
पातालपुरी के राजा अहिरावण ---------- 8
वैज्ञानिक सम्पाति ---------- 8
नैतिकवाद ---------- 8

परम्पराओं से विज्ञान———3.2.82 9

प्रभु मिलन की आकांक्षा ---------- 9
आनन्द की प्राप्ति ---------- 9
पुष्पक विमान ---------- 10
वैज्ञानिक कुम्भकरण ---------- 10
समाज का कर्तव्य ---------- 10
राष्ट्र का कर्त्तव्य ---------- 10
त्रेता कालीन विज्ञान ---------- 11
बुद्धिमनों से पवित्र राष्ट्र ---------- 11
साधक राजा रावण ---------- 11
अनुसंधान का विषय ---------- 12
मोहनी विद्या ---------- 12
राजा रावण का राष्ट्र ---------- 12
कर्तव्यवाद ---------- 12

परमात्मा का विज्ञान———09—02—84 13

परमात्मा की गाथा ---------- 13
रक्षक—देवता ---------- 13
माता वसुन्धरा ---------- 13
महाराजा अश्वपति का वृष्टि याग ---------- 14
वेद मन्त्र का मन्थन ---------- 14
यज्ञं भविताः यज्ञं रथाः यज्ञं यजन्नं ब्रह्माः वाचन्नमो द्यौ रथाः। ---------- 14
अद्भुत क्रिया याग ---------- 14
ऋषियों का मत्तव्य ---------- 14
अन्तरिक्ष में पूर्वजों के चित्र ---------- 15
याग कर्म से विज्ञान ---------- 15
ब्रह्माण्ड से गुँथा शरीर ---------- 15
मन्त्र में ब्रह्म की गाथा ---------- 16

याग स्वरूप पर ऋषियों का चिन्तन———10—09—84 16

यज्ञोमयी स्वरूप परमात्मा ---------- 16
विष्णु ---------- 17
दार्शनिक स्वरूप ---------- 17
महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश जी की विवेचना ---------- 17
कागा प्रवृत्ति ---------- 17
महर्षि कागभुषुण्ड जी का मौन अनुष्ठान ---------- 17
मौन का अभिप्राय ---------- 17
स्थूल रूप में मौन ---------- 17
वेदों में याग ---------- 18
मोक्ष का मूलक ---------- 18
वैदिकता के ह्रास के कारण ---------- 18
परमात्मा की सृष्टि का निहारना ---------- 18
द्यौ गामी वैदिक रथ का स्वरूप ---------- 18
जैसा साकल्य वैसा क्रियाकलाप ---------- 19
बाह्य जगत की अनुकूलता ---------- 19
अग्नि स्वरूप साकल्य ---------- 19
देवताओं की हवि ---------- 19
आत्मा का आसन ---------- 19
आत्म कल्याण के लिए याग ---------- 19
विष्णु याग ---------- 20
गोमेघ याग ---------- 20
अजामेघ याग ---------- 20
अग्निष्टोम ---------- 20
वाजपेयी याग ---------- 21

राष्ट्रीयता———18—04—84 21

स्वाभाविक गुण ---------- 21
सतोगुण में पालना ---------- 21
विष्णु याग ---------- 21
पूज्य महानन्द जी ---------- 22
द्रव्य का सदुपयोग ---------- 22
द्रव्य की लोलुपता का प्रभाव ---------- 22

धर्म से जीवन

विषय सूची पृष्ठ संखया

पद की लोलुपता का प्रभाव---------- 22

विज्ञान का दुरुपयोग ---------- 22

अग्नि काण्ड---------- 23

महाराजा अश्वपति का वृष्टि याग---------- 23

याग से वायुमण्डल की शुद्धि ---------- 23

गोघृत की विशेषता---------- 23

आत्मा का याग---------- 23

याग में अहिंसा ---------- 23

शिक्षा प्रणाली की अवहेलना ---------- 23

धर्म रूपी रूढ़ि---------- 24

धर्म में जीवन---------- 24

साधना से आत्मबल ---------- 24

आहार, व्यवहार की पवित्रता---------- 24

पूज्यपाद गुरूदेव ---------- 24

अन्न की पवित्रता———16—09—87.......... 25

परमात्मा की अनुपत चेतना---------- 25

मृत्यु का स्वरूप ---------- 25

प्राण की वृत्तियाँ ---------- 25

महर्षि जमदग्नि और महर्षि पारेत्वर की चर्चाएँ ---------- 25

ऋषि मुनियों का स्वरूप---------- 25

जड़, चेतना का स्वभाव---------- 26

शरीर, परमाणुओं का संघात ---------- 26

शरीर से पूर्व परमाणुओं की स्थिति ---------- 26

प्रभु के विज्ञान की विवेचना---------- 27

अहिंसा परमो र्धमः में गान---------- 27

प्रभु की प्रतिभा ---------- 27

अन्न के रूप में परमाणु ---------- 27

साझा अन्न---------- 27

पुरोहित का दायित्व ---------- 28

माता कौशल्या के उदगार---------- 28

चरित्र में राष्ट्र ——— 01—10—88.......... 28

प्रकाश की आकांशा ---------- 28

परमपिता के आश्रित---------- 28

विष्णु---------- 29

मन्त्रों की माला---------- 29

त्रेता काल का धनुर्याग ---------- 29

विज्ञान की तत्परता---------- 29

उद्दालक गोत्र के ऋषि ---------- 29

इन्द्रियों पर संयम ---------- 30

महात्मा कुक्कुट मुनि द्वारा लंका भ्रमण ---------- 30

कुबेर भवन---------- 30

लंका के क्रियाकलाप---------- 30

प्रकृति की गतियाँ ---------- 31

माता वसुन्धरा---------- 31

यन्त्रो से सूर्य की परिक्रमा---------- 31

परमाणु में ब्रह्माण्ड दर्शन ---------- 31

अति क्रोध में नाग प्राण ---------- 32

एक दिवस और एक रात्रि में चन्द्रमा पर ---------- 32

यान से 72 लोकों में भ्रमण---------- 32

आयुर्वेद की गति ---------- 32

रावण के राष्ट्र में अग्नि ---------- 32

चरित्र निर्माणशाला का अभाव ---------- 33

अधिकारी को ही अधिकार---------- 33

चरित्र का अभिप्राय---------- 33

अपनेपन का भान ---------- 33

महात्मा दधीचि का कर्तव्यवाद———02—3—1989.......... 33

इन्द्र---------- 34

योगेश्वर---------- 34

माताओं से प्रेरणा---------- 34

चन्द्रमा से सोम---------- 34

ब्रह्म की जिज्ञासा---------- 34

महाराजा इन्द्र का आदेश---------- 35

महर्षि पाण्डुक्त ---------- 35

अश्वमेघ---------- 35

महात्मा दधीचि ---------- 35

कर्तव्यपालन---------- 35

कर्तव्यवाद की अनिवार्यता ---------- 35

अश्व के मुखारबिन्द से ब्रह्म विद्या---------- 36

महात्मा दधीचि को पुनः कण्ठ स्थापना ---------- 36

आत्मा का लोक---------- 36

मानव दर्शन---------- 36

गर्भस्थ शिशु से वार्ता---------- 36

धर्म से जीवन

राजा रावण का राष्ट्र————02—02—82

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रो का, गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रो का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद—वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान में रमण करने वाले हैं। वो विज्ञानमयी कहलाते हैं। क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, मानो वैदिक मन्त्रार्थो को लेकर के, ऋषि मुनियों ने बेटा! ऊँची उड़ाने उड़ी। और उन उड़ान उड़ने वालो में नाना ऋषि हुए हैं। परन्तु आत्मा से लेकर के और एक परमाणुवाद तक उनकी उड़ान उड़ती रही है। क्योंकि जितना भी ये जगत् हमें दृष्टिपात आता है ये सब तरंगों में तरंगित हो रहा है। मानो तरंगे रमण कर रही है, उन तरंगों में ये समाज और ये ब्रह्माण्ड बेटा! एक तरंगों में ओत प्रोत हो रहा है।

जैसे सूत्र में मनका मानो जैसे वाक् में प्राण, प्रत्येक मुनिवरो! यह जो जगत्, हमें दृष्टिपात् आता है यह सूत्र रूपों में गति कर रहा है। मैं तुम्हें विज्ञान के क्षेत्र में नहीं ले जाऊँगा। मुझे बहुत वार्ताएँ स्मरण आती रहती है कि हमारे यहां विद्यालयों में, ऋषि मुनि ब्रह्मचारियों के समीप विद्यमान होकर के और जितना भी चारित्रिक मानवीयतव में गति कर रहा है। मानों उसको आचार्यजन उनके हृदयों में भरण कराते रहते हैं।

राजा रावण के पुत्र

मेरे प्यारे! मैं जब त्रेता काल के साहित्य में जाने लगता हूं तो बेटा! हमें ऐसा प्रतीत होता है कि मानव, राष्ट्र और समाज को कितना चरित्र दे सकता है। मैं राजा रावण के राष्ट्र की चर्चा करता रहता हूँ। राजा रावण के राष्ट्र में बेटा! एक महानता की उज्ज्वलता की धाराएँ परिणित होती रही है क्योंकि राजा रावण के यहां बेटा! चार राज कुमार हुए। सबसे जेठे पुत्र का नाम बेटा! अहिरोतकेतु कहलाता है। जिसको उसके पश्चात अहिरावण नाम से उच्चारण किया गया। द्वितीय पुत्र का नाम मेघश्चम कहलाया गया जिसको पश्चात् में मेघनाद जी कहते थे। परन्तु नारान्तक और अक्षयकुमार, ये चार पुत्र थे। परन्तु एक पुत्र महाराजा कुम्भकरण के था जिसका नामोंकरण सुनेतकेतु कहलाता था। दो पुत्र विभीषण के थे जिनका नामोंकरण स्वाति और त्रेतकेतु था। ये सातों राजकुमार विद्यालयों में जब शिक्षा अध्ययन करते रहते थे। क्योंकि मुझे स्मरण है बेटा! लंका में ऐसे ऐसे ऊँचे विश्वविद्यालय थे, यहां विज्ञान की उड़ान उड़ने वाले बेटा! ऊँचे से ऊँचा वैज्ञानिक रहता था। एक ऐसा भी विश्वविद्यालय था जिसमें आयुर्वेद मानो हृदय चिकित्सा, मानवीय चिकित्सा का निर्माण होता रहता था। जिस विद्यालय में महात्मा भुंजुमुनि के दोनों पुत्र अश्विनी कुमार मुनिवरो! देखो, शिक्षा देते रहते थे। और जो मुनिवरो! देखो, विज्ञान में, उड़ान उड़ने वाले विज्ञानशालाएँ विश्वविद्यालयों में रहती मानों देखो, कुम्भकरण जी उस विश्वविद्यालय के अध्यक्ष कहलाते थे। क्योंकि त्रेता के काल में महाराजा कुम्भकरण से ऊँचा वैज्ञानिक नहीं था। जिसकी विज्ञान में महानता रमण करती रही है।

विद्यालय का सूत्र

मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है एक समय महाराजा कुम्भकरण विश्वविद्यालय में शिक्षा दे रहे थे। राजा रावण के और अपने सर्वत्र पुत्र वहां शिक्षा अध्ययन करते थे। एक समय मुनिवरो! देखो, महाराजा कुम्भकरण जी से एक प्रश्न किया गया। तो वे प्रश्न अहिरामकेतु ने किया ओर उन्होंने कहा प्रभु! ये जो हमारा विद्यालय है, इस विद्यालय का सूत्र क्या है? तो बड़ा आश्चर्य का प्रश्न था, ब्रह्मचारी, आचार्य से विद्यालय के सूत्र का प्रश्न कर रहा है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने ये कहा—भई! श्वानतकेतु महाराज भी जो उसी विश्वविद्यालय में शिक्षा देते थे। श्वानतकेतु दद्दडीय गोत्रीय कहलाते थे। श्वानतकेतु उनके द्वार पर आए, और कहा—कि तुम अभ्यं गत्प्रवाह वस्तुतो अध्यानम् हे ब्रह्मचारी! तुम ये प्रश्न आध्यात्मिकवाद में चाहते हो, या विज्ञान में चाहते हो। तो मुनिवरो! जब ऋषि ने ऐसा कहा तो ब्रह्मचारी ने कहा—मैं दोनों विषयों के सूत्र को जानना चाहता हूं? तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय का जो सूत्र है वो विज्ञान हैं। परन्तु आध्यात्मिकवाद का एक ही सूत्र है जिसे नैतिकता कहते हैं। नैतिकता के गर्भ में भी मानो चरित्र की तरंगे रमण कर रही है और विज्ञान में भी मानो एक ब्रह्मवर्चोसि गति कर रहा है तो बेटा! ये दोनों प्रश्न बड़े विचित्र थे।

ब्रह्मवर्चोसि किसे कहते है और मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवाद में चारित्रिक अस्सुतम जो नैतिकता हैं वो क्या है? तो मेरे प्यारे! इसमें विश्व— विद्यालयों के आचार्यों ने ब्रह्मचारियों को निर्णय कराया। उन्होंने कहा—कि जो मानव नैतिकता में रहता है। नैतिकवादी जो प्राणी है उससे आत्मा का उत्थान होता है। और जो विश्वविद्यालयों में ब्रह्मवर्चोसि जो एकोकी मानो देखो, जो ब्रह्मवर्चो है उसे विज्ञान कहते है। विज्ञान कहते हैं, ब्रह्मवर्चोसि कहते है जो एक—एक सूत्र ब्रह्म की तरंगों में पिरोया हुआ है और ब्रह्म की तरंगों में पिरोए हुए होने के नाते उसे ब्रह्मवर्चोसि कहते हैं।

नैतिकता

तो मेरे प्यारे! ये दोनों वाद एक मानो देखो, ब्रह्मचारियों का विषय बन गया है। ब्रह्मचारियों ने कहा—महाराज! नैतिकता किसे कहते है? और ब्रह्मवर्चोसि की सूक्ष्म व्याख्या क्या है? तो मेरे प्यारे! विद्यालयों में गुरुजनों ने कहा, कि नैतिकता उसे कहते है कि मानव अपने शरीर को निर्माण सहित जानने वाला। जैसे मुनिवरो! देखो, मानव का शरीर है, ब्रह्मचारी से यह प्रश्न किया जाए, जो विद्यालयों में अध्ययन कर रहा है चाहे वह पुत्र है, या पुत्री है, परन्तु वह अध्ययन कर रहा है। तो उससे यह प्रश्न किया जाए, कि तुम्हारा यह शरीर क्या है? तो शारीरिक जितनी प्रतिक्रियाएँ है इनके निर्णय होने का नाम बेटा! यह नैतिकवाद कहलाता है, उसे नैतिकता कहते हैं। मानव के नेत्रो का क्या कार्य है? चक्षुओं का देवता कौन है? मानो श्रोत्रों का देवता कौन है? घ्राणेन्द्रिय का देवता कौन है? प्रत्येक इन्द्रियों के पूर्ण स्वरूप को और, उप—स्वरूप को जानने का नाम नैतिकता कहलाता है।

मेरे प्यारे! जब मेरी प्यारी माता अपनी लोरियों में बालक को अब्रत कराती है तो उस समय ये ज्ञान माता दे देती है। मुझे स्मरण है पुत्रो! जिस समय माँ मंगलं व्रहे लंका में राजा रावण के यहाँ महारानी मंदोदरी बहुत बुद्धिमान थी। वेदों का अध्ययन करती रहती थी। अपने गर्भस्थल में ही बालक को मानो नैतिकता की शिक्षा देती रहती थी। नैतिकता क्या है? माता अपनी लोरियों का पान करा रही है बालक के श्रोत्रो में यह वाक् उच्चारण कर रही है, हे बालक! हे गर्भस्थल में होने वाले बालक। अव्रणम् व्रहे व्रस्तुतम व्रहि कृतम् दिव्याः मानो ये जो तेरा क्षेत्र है संसार, 'यह मानो देखो, प्रभु की एक प्रतिभा है। इसके ऊपर चिन्तन करना मानो रूप के ऊपर, शब्दों के ऊपर, शब्दों की कितनी ऊर्ध्वागति होती है। और रूप में क्या वस्तु विराजमान है। कितनी विभक्त क्रिया है स्वरूप और नामों में परिणित हो रही है। तो मेरे प्यारे! वह माता अपनी लोरियों का पान कराती हुई और वह उसे शिक्षा देती रहती थी तो सर्वत्र

धर्म से जीवन

नैतिकवाद मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में और लोरियों का पान करने वाले बालक में माता भरण कर देती थी। तो माता का कर्तव्य है कि उसके श्रृंगार और उसकी उज्ज्वलता उसी काल में हो सकी, जब उसके गर्भस्थल से ऊँचे और महान पुत्रो का जन्म होता। मानो देखो, आहार और व्यवहार की शिक्षा भी माता–पिता जैसा चलन करते है। वैसा उनका आहार और व्यवहार बन जाता है।

तो मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा नहीं देने आया हूं विचार क्या मुनिवरों! देखो, विश्वविद्यालयों में ये चर्चाएँ प्रायः होती रहती थी। तो मुनिवरो! देखो, ब्रह्मवर्चोसि के ऊपर जब प्रश्न आया तो मुनिवरो! देखो, ब्रह्म की व्याख्या, माता इसी प्रकार बालक के हृदय में भ्ररण कर सकती है, आचार्य मुनिवरो! देखो, उसको प्राण की धुक् धुकी अपनी विद्या की धुक् धुकी देकर, उसको जागरूक कर सकता है। आचार्य उसे जागरूक कर रहा है। ब्रह्मचारी को गर्भस्थल में प्रवेश कराकर के मुनिवरों! देखो, उन्हें शिक्षा दे रहा है।

विज्ञान

मुनिवरो! देखो, ये सातों ब्रह्मचारी विश्वविद्यालय में जब भी परीक्षा होती तो कुछ विद्यार्थियों से प्रथम आते, कुछ से मानो द्वितीय आते, इसी प्रकार उनकी शिक्षा का क्रियाकलाप चलता रहता। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा कुम्भकरण की यह दशा थी वो विज्ञान में रत रहते थे। वे एक समय छः माह के लिए महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम को चले गए। महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में, मेरे प्यारे! ओर भी नाना ब्रह्मचारी थे। परन्तु देखो, एक ब्रह्मचारी ऐसा था जो शिक्षा का अध्ययन करता हुआ मानो देखो, हमारे यहाँ कई प्रकार की ब्रह्मचर्य की श्रेणियां होती है। वो एक अद्वास श्रेणी का ब्रह्मचारी था। परन्तु देखो, पुत्र होते हुए भी उन्हें उस समय ब्रह्मवर्चोसि कहते थे। विश्वविद्यालय में नाम भी उनका वर्चोसि ही कहलाता था। मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि भी उन्हें वर्चोसि कहते थे। भारद्वाज की विज्ञानशाला में ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु और मुनिवरो! देखो, ये वर्चोसि कुछ ब्रह्मचारी ऐसे थे जो विज्ञान में तल्लीन रहते है। विज्ञान की उड़ान उड़ते रहते थे। विज्ञान क्या है? बेटा! विज्ञान है कि मानव को प्रत्येक वस्तु पर मानो अनुशासन करना और उस अनुशासन में मानो जो तरंगे उत्पन्न होती हैं। उन तरंगों को उद्बुद्ध करके उनका यंत्रो में साकार रूप बना करके प्रत्यक्ष करना उसका नाम विज्ञान कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान में वो रत रहते, एक समक्ष बेटा देखो वर्चोसी विश्वविद्यालय में मानो भारद्वाज की विज्ञानशाला में मानो निद्रा को जीतने वाले थे।

वैज्ञानिक महाराजा कुम्भकरण

मुझे स्मरण है बेटा! महाराजा कुम्भकरण का जो आहार था वो कितना प्रिय था। बेटा! देखो, महाराजा कुम्भकरण का आहार गो दुग्ध का आहार लेते, कुछ वनस्पतियों का पान करते थे कुछ वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर, कुछ वृक्षों का पंचांग ले करके, मेरे प्यारे! वो अपनी बुद्धि को वर्चोसि बनाते रहते थे। तो मेरे पुत्रो! देखो, मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे ऐसा प्रकट कराया, एक समय कि वर्तमान का काल ऐसा स्वीकार करता है कि महाराजा कुम्भकरण मांस का भक्षण करते थे, परन्तु यह बहुत अशुद्ध वाक् है क्योंकि वो एक ऐसा विचित्र पुरुष था जिसके मुनिवरो! देखो, गऊँओं के चरणों को स्पर्श करके प्रातः कालीन मानो देखो, उसको नमस्कार करते थे और नमस्कार करके उस गऊ के दुग्ध और घृत का पान करते थे, अन्नाद के द्वारा। तो मुनिवरो! देखो, महान पवित्र आहार उनका रहता था। मेरे प्यारे! देखो, उनके द्वारा विज्ञान की आभाएँ नृत करती रहती थी। विज्ञान में वो रत रहते थे। मुनिवरो! देखो, छः माह तक वो एक समय हिमालय में बेटा! अनुसंधान करते रहे। अनुसंधान करते रहे कि मानो देखो, इन पर्वतों के गर्भ में क्या–क्या वस्तु विद्यमान है? खनिज और खाद्य को विचार, अस्सुतम् उसका साकार रूप देते रहते। तो वे छः माह तक हिमालय में बेटा! वो प्रत्येक तत्व पर अनुसंधान करते रहते थे। छः माह तक वो विद्यालयों में जाते, लंका में विश्वविद्यालयों में शिक्षा देते रहते। मानो देखो, विज्ञान, राजा रावण के काल में महाराजा कुम्भकरण से ऊर्ध्वा में वैज्ञानिक, कोई था ही नहीं।

तो मेरे प्यारे! देखो, एक समय, महाराजा कुम्भकरण ने अपने पुत्रों से, ब्रह्मचारियों से कहा कि कोई क्रियात्मक कर्म किया जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सबसे प्रथम भारद्वाज की विज्ञानशाला से एक समय महर्षि भारद्वाज को निमन्त्रण दिया। और महर्षि भारद्वाज, मुनिवरो! देखो, विश्वविद्यालय में आए। तो महाराजा कुम्भकरण, रावण और विभीषण और तीनों ने आ करके भारद्वाज के चरणों को स्पर्श किया और चरणों को स्पर्श करके कहा कि महाराज! ये हमारे सात राजकुमार है ये मानो देखो, राजकुमार कहलाते हैं इनमें विज्ञान होना चाहिए, ज्ञान होना चाहिए। हम ये चाहते हैं कि राजकुमार विश्व को विजय करने वाले हो। भारद्वाज मुनि ने कहा क्या तुम्हारे हृदयों में यह आकांक्षा है कि यह जो विश्व है, यह इनके अधीन रहना चाहिए? राजा रावण ने कहा–भगवन्! ऐसा नहीं है, हम यह चाहते हैं कि विश्व में इनका नामोकरण हो जाये। इनका नाम हो जाए किसी विद्या में, यह मानो बुद्धिमान होने चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज ने इन सातों ब्रह्मचारियों को ज्ञान और विज्ञान की शिक्षा प्रदान की। छः छः माह तक भारद्वाज मुनि महाराज बेटा! विश्वविद्यालयों मे प्रायः शिक्षा देते रहते थे और मुनिवरो! देखो, लंका में उनका यातायात बना रहता था। कजली वनों में उनकी विज्ञानशाला थी महाराजा पनपेतु मुनि महाराज की कन्या थी उसका नाम शबरी कहलाता था। वह शबरी उनके विश्वविद्यालय में मानो देखो, विज्ञान में पारायण कहलाती थी। ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु, ब्रह्मचारी कवन्धी गारगेय, ब्रह्मचारी व्रेतकेतु मेरे प्यारे! ये सर्वत्र ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते रहे, ये भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में। परन्तु विश्वविद्यालयों में, हमारे यहां लंका जैसा विश्वविद्यालय, उस काल में नहीं था, जहां वेदों की शिक्षाएँ, एक–एक वेद मन्त्र के ऊपर अनुसंधान होता रहता था।

मेरे पुत्रे! देखो, राजा रावण के जो द्वितीय पुत्र थे मेघकेतु कहते थे वह मेघकेतु मुनिवरो! एक वेद मन्त्र के ऊपर वो विश्व के मानो देखो, परमाणुवाद से विभाजित कराते रहते थे। उस परमाणुवाद के द्वारा मुनिवरो! वो यंत्रो का निर्माण करते थे। वो अग्नेय अस्त्रो में ब्रह्मास्त्रों में, वरुणास्त्र नाना प्रकार के अस्त्रो शस्त्रो का निर्माण, उस विश्वविद्यालय में होता रहता था। परन्तु देखो, संसार के जितने भी राजा थे, उनके यहाँ सब विश्व–विद्यालय में शिक्षा अध्ययन करने के लिए आते थे। क्योंकि उस समय महाराजा अश्विनी कुमार, जो मुनिवरो! सुधन्वा नामक वैद्यराज थे। जो आयुर्वेद में पारायण थे और मुनिवरो! देखो, अश्विनी कुमार जो मानव की चिकित्सा में, एक महान चिकित्सक कहलाते थे। ये वो अश्विनी कुमार कहलाते थे जिन्होंने महात्मा दधीचि के मानो कण्ठ के ऊपरले भाग को औषधियों में नियुक्त किया था और अश्व के मुख को मानो उसके कण्ठ पर नियुक्त करके उससे ब्रह्मविद्या की शिक्षा प्रदान की। यह वे अश्विनी कुमार थे जो मुनिवरो! देखो, मानव के कण्ठ को छः, छः माह तक मुनिवरो! देखो, औषधियों में नियुक्त करके पुनः उसमें औषधियों से मानो उसका समन्वय करके वो ज्यों का त्यों बन जाता था। मानो देखो, आयुर्वेद विज्ञान बहुत महानता में उड़ान उड़ता रहा है उस काल में।

चन्द्रभानु यान

तो आओ मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, मुनिवरो! देखो, मैं लंका के विश्वविद्यालयों की चर्चा करता रहा हूँ परन्तु देखो, उस सम्बन्ध में विशेष तुम्हें देखो, विवेचना देने नहीं आया हूँ विचार क्या, मुनिवरो! देखो, यहाँ नाना ब्रह्मचारी देखो, भारद्वाज मुनि की संरक्षणता में, मुनि के चरणों में ओत–प्रोत हो करके बेटा! देखो, नाना विज्ञान की चर्चाएँ करते। क्योंकि भारद्वाज मुनि ने ही राजा रावण के पुत्र नारान्तक को बेटा! चन्द्र यात्री बनाया। वो चन्द्रमा की

यात्रा की जो शिक्षा थी, वो भारद्वाज मुनि ने प्रदान की थी। परन्तु इस विद्या को महाराजा कुम्भकरण भी जानते थे। महाराजा कुम्भकरण ने एक यान का निर्माण किया था। बेटा! उस काल में जिसका यान का नाम चन्द्रभानु यान कहलाता था। एक यान था जिसका नाम गरुड़केतु यान था। एक यान था, जिसको कागावृणितकेतु यान कहते थे। कागाव्रेणकेतु ऐसा यान था लंका में, जिस पर मुनिवरों! विद्यमान हो करके, मानव गति कर रहा है पृथ्वी से और परिक्रमा करता हुआ चन्द्रमा की मुनिवरो! बुद्ध मण्डलों में और मंगल में। बेटा! देखो, मंगल के यातायात बने हुए थे।

मंगल का वायुमण्डल

तो मेरे प्यारे! देखो, मैं विज्ञान की चर्चाएँ, तुम्हें प्रगट नहीं कर रहा हूँ। केवल मैं तुम्हें उस काल का परिचय दे रहा हूँ। कि हमारे यहां कितने बुद्धिमत्ता वैज्ञानिक मानो देखो, ऋषि मुनियों की शरण में जाकर के विद्या का अध्ययन करते रहे हैं वो विद्या हमारे यहाँ परम्परागतों से मानव के हृदयों में, ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में बेटा! नृत करती रही। तो मेरे प्यारे! देखो वह अप्रतम् व्रहे गतस्सुताम् एक समय बेटा! भारद्वाज मुनि ने महाराजा कुम्भकरण की परीक्षा ली। उन्होंने कहा–हे कुम्भकरण! क्या तुम यानों के सम्बन्ध में जानते हो? महाराज! आपकी महिमा से कुछ ही जानता हूँ। तो जाओ, तुम मंगल में कैसा वायुमण्डल है।

तो मेरे प्यारे! देखो, महाराजा कुम्भकरण अपने यान में विद्यमान हो करके पृथ्वी की उड़ान उड़ता है और उड़कर के मंगल में पहुंचा। मंगल का जो वायुमण्डल है वो पृथ्वी जैसा ही है। जैसा पृथ्वी मण्डल पर है, ऐसा ही प्राणी रहता है परन्तु विज्ञान इस पृथ्वी से सदैव ऊर्ध्वा में रहता है। मेरे पुत्रो! देखो, मेरे प्यारे महानन्द जी ने आधुनिक काल के विज्ञान को भी मानो मंगल मण्डल का विज्ञान ही सर्वोपरि कहा है। परन्तु मैं इस विषय में नहीं जाना चाहता हूँ तो विचार क्या, जब वे मंगल में पहुंचे तो वहां के वैज्ञानिकों, से एक वहां का वैज्ञानिक उस काल में त्रिटीवन्तकेतु कहलाता था। त्रिटितवन्तकेतु से उनकी वार्ता होती, मानो देखो, वार्ता करके और वो मानो देखो, पृथ्वी पर पुनः देखो, भारद्वाज मुनि के आश्रम में आ पहुंचे। भारद्वाज मुनि ने कहा–कि धन्य है, कि तुम्हारा विज्ञान महान है। मेरे प्यारे! इसी प्रकार हमारे यहाँ विज्ञान सदैव महानता पर गति करता रहा है मानवीय मस्तिष्कों में, तरंगवाद में क्योंकि एक ही सूत्र में बेटा! सर्वत्र लोक लोकान्तर पिरोए हुए से दृष्टिपात होते हैं क्योंकि एक ही सूत्र इसमें दृष्टिपात होता है।

परन्तु देखो, मैं सूत्रें की चर्चा कर रहा था पुत्रे! देखो, राजा रावण के यहां विश्वविद्यालयों में ब्रह्मचारी मानो सूत्र की चर्चा करते रहते। ये सूत्र क्या है। विश्वविद्यालय का सूत्र क्या है? बेटा उन्होंने नैतिकता और मुनिवरो! देखो, ब्रह्मवर्चोसि दो ही विवेचना प्रकट की। ब्रह्मवर्चोसि मुनिवरो! अपनी मानवता को ऊँचा बनाता हुआ, विज्ञान में रमण करता है। और एक मुनिवरो! देखो, नैतिकता में रमण करता हुआ माता से लेकर करके और मुनिवरो! देखो, अपने तक नैतिकता को प्रत्येक इन्द्रियों का ज्ञान, धर्म के मर्म को जान करके मानो देखो, परमात्मा के धर्म में परिणित हो जाता है तो मेरे पुत्रो! देखो, विचार विनिमय क्या, आज का विचार यह क्या कह रहा है कि हम, अपने में बहुत ऊँचा बनना चाहते है। अपने ज्ञान और विज्ञान को हम मुनिवरो! देखो, ऊर्ध्वा में गति और ऊर्ध्वा में ही दृष्टिपात करना चाहते हैं।

इन्द्र

आज का विचार हमारा क्या है, कि हम मुनिवरो! देखो, राजा रावण के यहाँ सभी ब्रह्मचारियों मुनिवरो! देखो, शिक्षा में पूर्णता को प्राप्त हो गये। इनकी उड़ान भी ऊँची रहती है। महाराजा मेघनाद अपने वाहनों होकर के वे त्रिपुरी में जाते थे। मानो देखो, हमारे यहाँ उस काल में एक राष्ट्रीय व्यवस्था इस प्रकार की मानो थी कि एक राजा है मानो और भी राजा है, उनका एक राजा मानो इन्द्र कहलाता है। इन्द्र उसे कहते है, हमारे यहां वैदिक साहित्य में इन्द्र नाम परमात्मा को भी कहते हैं, इन्द्र वायु को भी कहते है और इन्द्र नाम आत्मा का भी कहलाया गया है। मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र दक्षणाय को भी कहते हैं और इन्द्र नाम का राजा भी होता है। मेरे पुत्रो! देखो, त्रिपुरी में एक इन्द्र राजा रहता है। जो सर्वत्र राजाओं का एक निर्वाचन किया हुआ, उसे इन्द्र कहते हैं। मेरे पुत्रो! देखो, वह जो इन्द्र है वह तपस्वी होता है। तपस्या के पश्चात् वो इन्द्र बनता है।

राजाओं की गोष्ठियाँ

तो मुनिवरो! देखो, वह राजा रावण इत्यादि सब महाराजा इन्द्र से अपने वाहनों में विद्यमान हो इन्द्रपुरी में जाते और इन्द्र से वार्ता करते। क्योंकि सर्वत्र राजाओं की गोष्ठियाँ होती रहती थी। विचार विनिमय होता रहता था। ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ी जाती थी और मानवता की रक्षा करने के लिए उसमें मानो कुछ निर्देश भी प्रकट किए जाते थे। तो मेरे पुत्रे! देखो, एक समय महाराजा इन्द्र से एक त्रुटि हुई, महाराजा इन्द्र एक घोषणा देने के पश्चात्, इन्द्र ने घोषणा दी और वह पूर्ण न हुई। वह घोषणा क्या थी? कि समाज में जो यह विज्ञान पनप रहा है। इस विज्ञान का सदुपयोग होना चाहिए। परन्तु देखो, सदुपयोग होने से समाज का उद्धार होगा, समाज का कल्याण होगा और राष्ट्र में नैतिकता आएगी। और विद्यालयों में ब्रह्मवर्चोसि पुरुष होते रहेंगे। आचार्यों को ये निर्देश दिया गया।

परन्तु महाराजा इन्द्र के यहाँ एक यंत्र का निर्माण हुआ था, उस समय त्रिपुरी में, उनके यहाँ एक विरोचन नाम के वैज्ञानिक थे। उस विरोचन वैज्ञानिक ने मानो देखो, यंत्र का निर्माण किया और यंत्र का विस्फो जब वृहित किया गया, उस यन्त्र का जब क्रणात किया गया, आक्रमण किया गया तो उससे बहुत से प्राणी मानो समुद्रचर भी समाप्त हो गए। समाप्त होने के पश्चात यह वार्ता भारद्वाज मुनि उस समय मानो सर्वत्र राजाओं के, उस काल के वो पुरोहित कहलाते थे, वो इन्द्र के यहाँ भारद्वाज मुनि महाराज पुरोहित कहलाते थे। तो यह प्रतीक ब्रह्मचारी सुकेता को हुआ। ब्रह्मचारी सुकेता ने भारद्वाज से कहा कि महाराज! महाराजा इन्द्र के यहाँ एक मानो देखो, यन्त्र समुद्र के तट पर वृणित हुआ, परन्तु देखो, उस यंत्र में बहुत से प्राणियों का ह्रास हो गया है। विनाशता को, मृतक बन गए हैं। तो मुनिवरो! देखो, उन्होंने राजाओं की एक सभा एकत्रित की, उसमें यह कहा गया भई, इन्द्र ने जब ये घोषणा की, तो इन्द्र के यहाँ ऐसा क्यों हुआ? तो ये घोषणा की गई राजाओं के यहाँ, कि ये राजा, इन्द्र के योग्य नही है। इन्द्र नहीं रहना चाहिए, इसे तो मुनिवरो! देखो, इंद्र को मानो ऐसा अपमानितता में प्रतीत हुआ उन्हें, महाराजा इन्द्र ने कहा–कि भगवन्! ऐसा नहीं होना चाहिए भारद्वाज मुनि महाराज से प्रार्थना की।

राजा का कर्तव्य

परन्तु देखो, भारद्वाज मुनि ने यह कहा कि निःस्वार्थ जो प्राणी होते है। मानो जो तपे हुए होते हैं उनका यह कर्तव्य है कि वह ऐसे राजा की अवहेलना करे, क्योंकि राजा की अवहेलना करना क्योंकि जो समाज में प्राण ले सकता है अपने क्रियाकलाप के द्वारा, ये राजा का कर्तव्य नहीं है। राजा तो केवल चरित्र दे सकता है। राजा मानवता दे सकता है। जो भी उसने अपने चरित्र के अपनी जो तपस्या में अनुभव प्रकट किए उन्हें दे सकता है परन्तु ये जो प्राण, ये जो शरीर का त्यागना है ये हमारा कर्तव्य नहीं है। ये राजाओं का कर्तव्य नहीं है। मुनिवरो! देखो, राजा उस मानव को जीवन नहीं दे सकता है, न मृत्यु

दे सकता है। ये तो दार्शनिक वार्ता है परन्तु देखो, मानव उसको अपने क्रियाकलाप दे सकता है। जो राजा क्रियाकलाप करेगा प्रजा उसका अनुसरण करेगी, प्रजा उसके अनुसार बनती है जैसे माता–पिता जो भी गृह में क्रियाकलाप करेंगे जैसा माता– पिता आहार होगा, ऐसी बाल्य, बालिका उस आहार को करेगी, जैसा भी उनका व्यवहार होगा, सात्विक वातावरण होगा तो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारीहिणयाँ सात्विक होंगी गृह में और यदि दुष्ट व्यवहार होगा तो दुष्टवादी होंगे परन्तु देखो, प्राणों की रक्षा में भक्षक बन जाएँगे ऐसे राजा के यहां होता है।

त्रिपुरी के राजा मेघनाद

तो महाराजा इन्द्र को मुनिवरो! देखो, वहां से उसको कृत करना हुआ। परन्तु देखो, जब कृत करने के पश्चात् पुनः उन्होंने इन्द्र को अपनाने की चेष्टा प्रकट की। भारद्वाज मुनि महाराज ने बेटा! देखो, ये आज्ञा मानो देखो, राजा रावण के राष्ट्र को दी और राजा रावण के राष्ट्र में उस समय सात्विक वातावरण था। मानो देखो, एक मानव–मानव का भक्षक नहीं था। मानो देखो, प्रजा में याग होते थे। प्रजा में सुगन्धि होती, विचार विनिमय होते थे। विज्ञान पराकाष्टा पर था, विज्ञान का दुरूपयाग उस काल में नहीं था। परन्तु देखो, यही देखो, राजा रावण के द्वितीय पुत्र मेघनाद ब्रहे मानो देखो मेघकेतु ने मुनिवरो! देखो, इन्द्र की उस उपाधि को प्राप्त किया। इन्द्र को विजय किया क्योंकि भारद्वाज मुनि की सहायता से वो त्रिपुरी के स्वामी बने। त्रिपुरी के स्वामी कौन बने ? मेरे प्यारे राजा रावण के पुत्र जिसको हमारे यहाँ मुनिवरो! मेघकेतु कहते हैं जिसको मेघनाद भी कहा जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, इन्द्र को विजय भारद्वाज मुनि आज्ञा से, नारान्तक सोमतिति नामक राजा के यहाँ, मेरे प्यारे! देखो, उसमें सात्विकता का प्रचार करते थे, वे विज्ञान की शिक्षा देते थे। परन्तु देखो, प्रजा ने यह स्वीकार कर लिया कि राजा रावण के पुत्र नारान्तक जो प्रचार करते हैं विज्ञान का, और विद्यालयों में आते हैं इनको वहां का अधिराज इसलिए बनाया।

पातालपुरी के राजा अहिरावण

तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के राष्ट्र में इन सातों पुत्रो के मुनिवरो! देखो, विद्यालय त्यागने के पश्चात् इतना व्यापिक राष्ट्र बन गया कि इनके राष्ट्र में न सूर्यास्त होता था और न सूर्योदय होता था मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के पुत्र जो मानो देखो अहिरोतकेतु अहिरावण नामों से उच्चारण, वो पातालपुरी के राजा थे। उन्होंने पातालपुरी को कैसे अपनाया? ये बड़ा विचित्र एक साहित्य तुम्हारे समीप उद्‌बुद्ध कर रहा हूँ। जो मानो देखो, मुझे स्मरण आ रहा है आज, देखो एक समय पातालपुरी के एक राजा थे, राजा के मन्त्री थे सुकामकेतु। तो सुकामकेतु एक समय अहिरावण को अपने यहां ले गए क्योंकि वो विश्वविद्यालय से ब्रह्मचर्य, तेजोमयी आभा में रमण कर रहा था। मानो विश्वविद्यालय में उनका प्रसार हुआ। और प्रसार होकर के विवेचनाएँ हुई, वेदों की विवेचना करते रहे। विज्ञान की उड़ान की चर्चा करते रहे, तो दो वर्षों तक वो पातालपुरी में रहे। परन्तु पातालपुरी के जनसमूह के वो प्रिय बने और जनसमूह के प्रिय बनने के पश्चात् मानो देखो, समाज में इन्द्र से और जो राजा थे उनसे यह उद्‌घोषणा कराई कि हम तो इनको अपना अधिराज चाहते हैं। मानो देखो, वो अधिराज ऐसे बन गए। तो उन्होंने संग्राम नहीं किया, क्योंकि उस समय संग्राम की प्रणाली मानो महान तुच्छ मानी जाती थी। मानो देखो, वह एक दूसरे को प्रसन्नता में, एक दूसरे के चरित्र को जो दे सकता हो, तो पातालपुरी का चरित्र भी बड़ा विचित्र था मानो देखो, विज्ञानशालाओं का निर्माण भी हुआ, विज्ञानमयी आभा में युक्त भी होने लगे।

तो इसी प्रकार देखो, वहाँ राजा, अहिरावण बने। सोमकेतु में जो हिमालय से परली आभा में राष्ट्र है वहां के राजा नारान्तक बने और अक्षय कुमार स्वाणित नाम के देखो, एक राष्ट्र था उसके राजा बने। तो इसी प्रकार क्योंकि देखो, यहाँ विभीषण इत्यादि ये अपने कर्मकाण्ड में रहते थे और कुम्भकरण विज्ञान में रहते थे और लंका के अधिराज मानो देखो, राजा रावण थे। इस प्रकार इनका साहित्य चला आया। इनका का मानो जो कुटुम्ब का जो परिचय दिया जाता है इनके यहाँ क्योंकि राजा रावण का इतना वंशलज था, इनके जो कुलपुरोहित थे वो महर्षि भारद्वाज कहलाते थे। भारद्वाज मुनि महाराज इनको प्रायः शिक्षा देते रहे। और उस शिक्षा का आभ्रूरत्त्वम् चलता रहा।

वैज्ञानिक सम्पाति

तो मुनिवरो! देखो, राजा रावण के यहां एक देखो, पातालपुरी से दूरी पर एक राष्ट्र था जिसका राजा शेषनाग था। शेष था, शेष कहते थे वो नागवृत्ति गोत्र कहलाता था। तो शेष के यहाँ उनकी कन्या से देखो, संस्कार हुआ इसी प्रकार सातो राजकुमारों के संस्कार भी हुए। परन्तु देखो, यह राष्ट्र इस प्रकार उद्‌बुद्ध होता रहा। क्योंकि सम्पाति भी समुद्र के तट पर एक राजा थे। सम्पाति राजा थे, सम्पाति के विधाता का नाम अमृतं ब्रहि स्वस्ताव्रहे व्रचंचमगलं ब्रहे मानो देखो, सम्पाति के ये जो गरूड़ और सम्पाति दो विधाता थे। ये दो भाई थे जो स्वादित नामक एक राजा थे उसके पुत्र कहलाते थे। सम्पाति को राष्ट्र दे करके वे राजा तो समाप्त हो गए परन्तु सम्पाति और ये गरूड़ जी दोनों मानो विज्ञान में रत रहते थे। क्योंकि सम्पाति भी वैज्ञानिक था और देखो वह महाराजा जो गरूड़ जी थे वो भी वैज्ञानिक थे।

एक समय वो सूर्यलोक की उड़ान उड़ने लगे। जब सूर्यमण्डल की उड़ान उड़ने लगे, यानों में विद्यमान होकर के, तो वह उस ताप को, अपने में शक्ति नहीं रखते थे, मानो देखो, शक्ति के कारण वो पृथ्वी पर आ गए, वे पृथ्वी पर ही ओत प्रोत रहे परन्तु सम्पाति उनका सर्वत्र कार्य करता रहा। तो महाराजा सम्पाति भी समुद्र के तट पर सूक्ष्म सा एक राष्ट्र था उसके राजा थे। देखो, समुद्राणि तुम्हें प्रतीत होगा मैं आज वह साहित्य आएगा क्योंकि हनुमान जी जब सीता के लिए गए तो सम्पाति के उन्हें दर्शन हुए। मेरे पुत्र ने यह वर्णन कराया है, महानन्द जी ने, कि उस काल को प्रकट करते कि आधुनिक जगत जो है सम्पाति को और गरूड़ को पक्षी के रूप में स्वीकार करता है। परन्तु प्रायः पुत्र ऐसा नहीं है। ये सब मानो देखो राजा थे और इनके क्रियाकलाप इनके चरित्र एक महानता में गति करते रहे उस काल में।

नैतिकवाद

तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ विचार क्या मुनिवरो! देखो, मानव को नैतिकता में महान रहना चाहिए। और ब्रह्मवर्चोसि में ये मानव जीवन के दो ही सूत्र ही कहलाते हैं एक तो मानो देखो, नैतिकता, हमारे इस मानव शरीर में जितना भी ज्ञान है, जितना भी विज्ञान है, हमारी इन्द्रियों से जो उदघृत होता है मानो देखो, वो हमारा नैतिकवाद है। और उसके पश्चात् जो विज्ञान उससे उत्पन्न होता है विज्ञान की तरंगे आती है, उस विज्ञान को जो लेकर के चलता है वो ब्रह्मवर्चोसि कहलाता है। तो मुनिवरो! देखो, यह प्रश्न देखो, विश्वविद्यालयों में होते रहे हैं। हमारे यहाँ विश्वविद्यालयों में, शिक्षालयों में, मानव को चरित्र की शिक्षा सबसे प्रथम होती है। क्योंकि यदि चरित्र नहीं है, तो विद्यालय कुछ नहीं है। यदि मानो ब्रह्मचारी नहीं है विद्यालयों में, तो

ब्रह्मवर्चोसि विद्यालय नहीं बन सकते। इसी प्रकार हमारे यहाँ ज्ञान और विज्ञान बेटा! देखो, ऊर्ध्वा, शिखर पर रहा है और रहता, रहता है क्योंकि मानव के मस्तिकों में विज्ञान बेटा! नृत करता रहा है।

मैंने आज तुम्हें रावण के उस राष्ट्र की चर्चाएँ की है मानो देखो, राजा रावण के यहाँ इतना विज्ञान विस्तार में बन गया था कि मुनिवरो! देखो, न सूर्य अस्त होता था और न उदय होता था। मेरे प्यारे! सदैव किसी न किसी राष्ट्र में बेटा! सूर्य का प्रकाश ही रहता। मेरे प्यारे कहीं रात्रि है, किसी राष्ट्र में, तो किसी स्थली पर बेटा! उनके यहां दिवस होता है। तो मेरे प्यारे! जब यहाँ रात्रि होती है तो पातालपुरी में देखो, दिवस होता है। जब पांतालपुरी में दिवस होता है तो यहाँ रात्रि होती है तो इसी प्रकार यह मानो देखो, सूर्य की गति चलती रहती है। सूर्य मानो देखो, ये पृथ्वी अपनी गति करती रहती है। सूर्य की आभा में बेटा! दिवस और रात्रि, रात्रियों का निर्माण होता रहता है। उससे सम्वत्सर रहता है। मेरे प्यारे! उसी से कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष बनते रहते है। ये है बेटा आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या है कि हमारे यहाँ मुनिवरो! देखो, सदैव मानवता की आभा में, मानव को रमण करना चाहिए नैतिकता बहुत अनिवार्य है। जब मेरी प्यारी माता नैतिकता में गति करती हैं तो महानता में परिणित हो जाती है। बेटा ममतामयी कैसे बनती है मानो ?**—शेष अनुपलब्ध तिबडा, मोदी नगर**

परम्पराओं से विज्ञान———————3.2.82

जीते रहो!

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रो का पठन—पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद—वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद—वाणी में उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय है। उसका प्रत्येक मानव वरण करना चाहता है। अथवा उसे वरना चाहता है। और ये उसकी आंकाक्षा रहती है कि मैं अपने प्यारे प्रभु से मिलन करूं। वे मानो देखो, रूदन करने की उसकी आकांक्षा बनी हुई है। और यह चाहता रहता है कि मैं उस प्रभु, चेतन्य देव के समीप मेरा मिलान हो। जिस प्रकार माता का पुत्र क्षुधा से पीड़ित हो जाता है तो मुनिवरो! देखो, वो बालक मिलन करता है। और वह व्याकुल होता हुआ, जब माता उसे अपनी लोरियों का पान करा देती है तो बालक की क्षुधा शांत हो जाती है अथवा उसका माता से मिलान हो गया है। और वो माता के मिलन के लिए रूदन कर रहा था। परन्तु मिलन होते ही, उसके आनन्द की कोई सीमा नहीं रही। क्योंकि जब मानव की पिपाशा शांत हो जाती हैं, तो पिपासा शांत होने के पश्चात जो उसे आनन्द प्राप्त होता है। उस आनन्द की मुनिवरो! देखो, कोई सीमा नहीं होती।

प्रभु मिलन की आकांक्षा

इसी प्रकार प्रत्येक मानव अपने प्यारे प्रभु से मिलन चाहता है और उसकी आकांक्षा बनी रहती है कि मैं अपने प्यारे प्रभु के द्वार पर चलूं। नाना प्रकार की साधना करते हैं। प्राणायाम करते हैं, धारणा, ध्यान, समाधि में तल्लीन हो जाते हैं। कहीं मेधाबुद्धि को जागरूक करते हैं। कहीं मेधा के द्वार पर चले जाते हैं। कहीं ऋतम्बरा और प्रज्ञावी में जाकर के अपने प्यारे प्रभु से मिलान की पिपासा बनी रहती है। तो ये जो नाना प्रकार का कर्म है अथवा क्रियाकलाप है इस क्रिया कलाप के गर्भ में उस प्रभु से मिलन है उस माता के समीप जाना है जिसके गर्भस्थल में ये संसार बेटा! वशीभूत हो रहा है। नाना प्रकार का ये ब्रह्माण्ड, उस प्रभु के गर्भस्थल में विद्यमान है।

मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहां ऋषि मुनियों की बड़ी विचित्र उड़ान रही है इस सम्बन्ध में, वैज्ञानिक जन भी इसी में लगे हुए हैं कि हम संसार की प्रत्येक वस्तु को जान करके अणु और परमाणुओं को जानकर के हमें आनन्द प्राप्त हो जाए। परन्तु वह भी आनन्द में लगा हुआ है और उसी में वो तृप्त होता रहता है। परन्तु देखो, जब वो ओर गंभीरता से विचार विनिमय करने वाला मानो बेटा! मौन हो जाता है और वो मौन हो करके नेति का प्रतिपादन करता है तो इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, वैज्ञानिकों ने साधक, सर्वत्र प्राणी बेटा! अपने प्रभु से मिलन चाहता है। एक मानव पृथ्वी के ऊपर अनुसंधान कर रहा है। और वो तरंगों को जान रहा है। पृथ्वी के गर्भ में जो खनिज विद्यमान हैं, नाना प्रकार की वनस्पतियों को जान रहा है। परन्तु सूर्य की नाना प्रकार की जो किरणें हैं, वो धातु का पिपाद बना रही है। नाना प्रकार का खनिज बन रहा है। परन्तु देखो, उसके गर्भ में, उसके मूल में वह आनन्द को ही चाहता है। कि मेरा राष्ट्र सम्पन्न हो जाए और मैं स्वतः सम्पन्न हो जाऊँ। नाना प्रकार का खनिज मेरे गृह में होना चाहिए। ये आकांक्षा लगी हुई हैं, क्यों लग रही है? क्योंकि प्रत्येक मानव एक आनन्द को चाहता है। वो आनन्द की पिपासा के लिए बेटा! प्रयत्नशील हो रहा है।

आनन्द की प्राप्ति

परन्तु देखो, आज मे बेटा! देखो, तुम्हें विशेषता में ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार क्या? कि आनन्द कैसे प्राप्त होता है? ये मैंने बहुत पुरातन काल में कहा था। बेटा! समष्टि, व्यष्टि, व्यष्टि को समष्टि में प्रवेश कराना ही बेटा! आनन्द है। और वही मानव का धर्म है जैसे हम दृष्टा बने हुए है इसी को बाह्य जगत् में जब हम दृष्टिपात करते हैं। तो बेटा! वो व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश कर रहा है।

तो विचार विनिमय क्या? मुनिवरो! देखो समष्टि को व्यष्टि में और व्यष्टि को समष्टि में मानव जब प्रवेश कराता है तो प्रभु के राष्ट्र का अनुभव करता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चाएँ इस सम्बन्ध में प्रकट करना नहीं चाहता हूँ। आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें उन विज्ञानशालाओं की चर्चा कर रहा हूँ, जिन विज्ञानशालाओं में विद्यालयों में मानव का निर्माण होता है। मानव को एक आभा में, परीक्षा में परिणित कराया जाता है। तो बेटा! उन विद्यालयों की चर्चाएँ हम प्रायः करते रहते हैं। उन विद्यालयों की चर्चाएँ, जिन विद्यालयों में आचार्यजन ब्रह्मचारी को अपने गर्भ में धारण करते हैं। परन्तु देखो, उस गर्भ के ऊपर, मानव के जीवन में एक नैतिकता आती है। तो नैतिकता उसे कहते हैं जहाँ मानव अपने कर्तव्य का पालन करता है। और जहाँ भी वो प्राणी है वहीं अपने कर्तव्य का पालन करता है वो उसकी नैतिकता है। कर्तव्यवाद की मीमांसा करने वालों में मीमांसाकारों ने, बहुत ऊँची—ऊँची टिप्पणियाँ की हैं। परन्तु आज मैं बेटा! तुम्हें, हिमालय की कन्दराओं में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ हिमालय की कन्दराओं में बेटा! विद्यमान हो करके साधक अपनी साधना कर रहा है। उसी स्थली पर विद्यमान हो करके वैज्ञानिक, विज्ञानशाला में बेटा! सूर्य की किरणों के साथ अपनी उड़ान उड़ रहा है।

धर्म से जीवन

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है महाराजा कुम्भकरण और राजा रावण के पुत्र मेघनाद और नारान्तक ये तीनों अपने राष्ट्र से गमन करते हैं और भ्रमण करके हुये हिमालय की कन्दराओं में आकार के अनुसंधान करने लगे। इन तीनों वैज्ञानिकों को मेरे प्यारे! ब्रह्मणाः व्रणस्वस्तुतं दिव्याहं लोकं गते सुसर्वम् 'भारद्वाज मुनि भी बेटा! उसी आसन पर आ गए और विचार विनिमय में होने लगा। परन्तु विचार क्या हो रहा था। सम्भविताः व्रे वस्तुतं बृ कृताः' विज्ञानशालाओं की चर्चाएँ तो मुनिवरों! देखो, तीनों वैज्ञानिक और भारद्वाज सहित चतुस् मुनिवरो! देखो, इस कल्पना में लग गए कि सूर्य की जो किरणें आती है, जो किरणें अंधकार को समाप्त कर देती हैं, रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेती है, हमें उन किरणों को जानना हैं। तो बेटा! देखो, किरणों के ऊपर उन्होंने एक विज्ञानशाला उनके समीप थी उस विज्ञानशाला में मुनिवरो! देखो, अनुसंधान करने लगे। अनुसंधान करते हुए उन्होंने बेटा! सूर्य की नाना प्रकार की किरणों को, उसके प्रकाश को, उसमें जो शक्ति, विद्युत भण्डार है उसको उन्होंने बेटा! यंत्रों में भरण कर लिया और यंत्रो में भरण करने के पश्चात् मेरे पुत्रे! देखो, वैज्ञानिक उससे उड़ान उड़ते हैं।

पुष्पक विमान

तो मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि उन्हें शिक्षा देते रहे। मुनिवरो! उनके चरणों में वे शिक्षा पाते रहे। तो मुनिवरो! देखो, उस समय महाराजा मेघनाद ने, ब्रह्मचर्य सुतां राजकुमार ने और मुनिवरो! देखो, अब्रहे व्रणस्सुतांम् कुम्भकरण इत्यादियों ने एक यंत्र का निर्माण भी किया उस काल में। और वो यंत्र ऐसा था जो सूर्य की किरणों का शक्ति भण्डार था उसमें ओत प्रोत होकर के मुनिवरो! देखो, यान अंतरिक्ष में गति करने लगे। तो मानो उनका खनिज उन्होंने प्राप्त किया सूर्य से। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के खनिज से ऊर्ध्वा में जो खनिज रमण करने वाला, सूर्य के द्वार पर है। जिससे वो पृथ्वी के खनिज को, पृथ्वी के परमाणु को खनिजों में परिणित कर देता है, उसका पिपाद बनाता है। परन्तु इसी प्रकार उस सूर्य की किरणों को ही क्यों नहीं अपने में आधारित किया जाए, तो उन्होंने बेटा! देखो, रम्भणा स्वस्तम् मुनिवरों! एक समय महाराजा गणेश, उनके समीप आए और महाराजा गणेश की सहायता से उन्होनें बेटा! पुष्प विमान का निर्माण किया। वह पुष्प विमान अन्तरिक्ष में गति करता था और सूर्य की किरणों से मुनिवरो! देखो, उनमें शक्ति का भण्डार है उससे वो यान गति करता था। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के खनिज को उन्होंने नहीं लिया, सूर्य से जो खनिज उन्हें प्राप्त हुआ, जिस किरणों से वह पृथ्वी के गर्भ में मानो धातु पिपाद का निर्माण कर रहा था, उसी निर्माण को उन्हीं किरणों को उन्होंने अपने में आकाशित किया और उससे वाहनों का निर्माण किया।

वैज्ञानिक कुम्भकरण

मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के यहां हिमालय में नाना प्रकार की अनुसंधान शालाएँ रहीं। ये सब मानो जितना भी श्रेय रहा है वो कुम्भकरण जी को रहा है। क्योंकि कुम्भकरण जी निन्द्रा से विजय प्राप्त करने वाले थे। मुझे स्मरण है बेटा वो छः छः माह तक निन्द्रा नहीं लेते थे। छः छः माह तक वो मुनिवरो! देखो विचारते ही रहते, अनुसंधान करते रहते। मेरे प्यारे! देखो, हिमालय में, यंत्र शालाओं में विद्यमान हो करके, वे अनुसंधानित रहे। मेरे प्यारे! वो जब विश्वविद्यालयों में, लंका में प्रवेश किया करते थे। तो बेटा! देखो, वो वैज्ञानिकों, ब्रह्मचरियों को शिक्षा देते रहते थे। परन्तु राजा रावण के यहां उनके विधाता जो विभीषण थे वो कर्मकाण्ड में बड़े पारायण थे, उनके द्वारा पाण्डित्व था। मेरे प्यारे! वो कर्मकाण्ड में रत रहते थे। प्रभु का चिन्तन करते रहते, मेरे प्यारे! देखो, वो राष्ट्र के ऊपर वे ऊँची–ऊँची उड़ाने उड़ते रहते थे। वैज्ञानिक के समीप जाते, वे सुधन्वा वैध के वैधराज के यहाँ बेटा नाना प्रकार की औषधियों के ऊपर वो प्रायः विचार विनिमय करते रहे।

समाज का कर्तव्य

मेरे पुत्रो! देखो, वो महानता में परिणित होते रहे। तीनों विधाताओं का कर्म और क्रियाकलाप एक महानता में परिणित होता रहा। मेरे प्यारे! देखो, जिस समय मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें प्रकट कराया था कि मेघनाद जी ने इन्द्र को विजय किया और इन्द्र की त्रिपुरी में अपना शासन किया। त्रिपुरी में बेटा! उस समय शासन प्रणाली, सेवक प्रणाली थी। सेवा करना ही समाज का कर्तव्य था। क्योंकि समाज को सुखद बनाना, समाज में जहाँ अकर्तव्यवाद आ जाना उसे कर्तव्य में लाना क्योंकि यही राष्ट्र का कर्तव्य होता है। राष्ट्र का जो निर्माण हुआ है वो धर्म की रक्षा करने के लिए हुआ है।

राष्ट्र का कर्त्तव्य

मेरे प्यारे! धर्म किसे कहते हैं जो अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है। आत्मा से अनुसरण, आत्मा के अनुसार अपना, अनुसरण कर रहा है मानो वो मानव मेरे प्यारे! देखो, उसकी रक्षा करने के योग्य है। बेटा। वेद का गान गा रहा है, भयंकर वनों में ध्वनियां चल रही है। नाना प्रकार की विद्या की रक्षा करने के लिए बेटा! राष्ट्र का निर्माण हो रहा है। मुनिवरो! देखो, खनिज विद्याएँ है, शिल्प विधाएं हैं मुनिवरों! देखो, जितना उनका क्रियाकलाप है, कर्मकाण्ड है, विज्ञान है, मानो दर्शन है, ज्ञान है। मेरे प्यारे! देखो, जितना भी आभा में रमण करने वाली आभा है उन सबकी सुरक्षा करना, रक्षा करना, ये राष्ट्र का कर्तव्य होता है। उन कर्तव्यवादी प्राणियों रक्षा करना और अकर्तव्यवादी प्राणियों को दण्डित करना ये राष्ट्र का मुख्य उेंश्य है।

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार विनिमय क्या, मुनिवरो! देखो, राजा रावण के यहाँ प्रायः ऐसा होता रहा। महाराजा इन्द्रजीत ने मानो देखो, इन्द्र को विजय करने, त्रिपुरी में अपनी नियमावली को स्थापित किया। उदघृत किया और उदघृत करने के पश्चात् देखो, त्रिपुरी मानो हमारे यहाँ उस काल में भगवान् मनु के काल से ले करके एक परम्परा, एक राष्ट्रीय व्यवस्था बनी हुई होती है। राष्ट्रीय व्यवस्था ये है कि सर्वत्र राजाओं का एक राजा होता है जिसे इन्द्र कहते हैं। वे सर्वत्र पृथ्वी के जितने राजा होते हैं उन राजाओं के ऊर्ध्वा में उनकी नैतिकता इन राजाओं से महान होती है। वास्तव में जितने भी राष्ट्र होते है, उनका सर्वत्र, उनकी नैतिकता एक ही धारा में गति करती रहती है। एक ही आभा में रमण करती रहती है परन्तु देखो, उनके ऊर्ध्वा में एक इन्द्र होता है। हमारे यहाँ जैसे इन्द्र है ये इन्द्र क्योंकि लोकों में भी, जो इन्द्र लोकों का मण्डल है वो सर्वश्रेष्ठ माना गया है। परन्तु यहाँ प्रकरण यह कहता है कि वह इन्द्र को विजय करने वाला मेघनाद, वो इन्द्रजीत कहलाता है।

हमारे यहाँ, जैसे कैलाश पर्वत बहुत ऊर्ध्वा में रहता है, एक शिव कैलाशपति राजा भी होता था। उसका नाम शिव कहलाया जाता था। उसको सब राजा, महाराजा उसको चुनौति प्रदान करते थे। वे शिव एक परम्परागतों से बेटा! एक उपाधि मानी गई है। मानो देखो, जो शासन करने में और सात्विकता के लाने में जो कुशल होता है। विज्ञान की धाराओं को जानता है वो शिव कहलाता है। शिव उसे भी कहते हैं जो संकल्पवादी होता है। संकल्पवादी कौन होता है? शिव। मानो शिव उसे कहते हैं जो संसार के ऊपर, सदैव निहारता रहता है। और प्रजा को सद्गति देता रहता है ऐसे राजा का नाम शिव कहलाता है। वो रजोगुण में, रमण करने वाला है। तो इसी प्रकार मेरे पुत्रो! देखो, उस काल की ये परम्पराएँ मानी गई हैं। हमारे यहाँ विज्ञान, एक मानवीय खिलवाड़ों में रमण करता रहा है। त्रेता के काल में, नाना वैज्ञानिक थे। परन्तु मेरी प्यारी माताएँ भी विज्ञान में गति करती रहीं।

धर्म से जीवन

त्रेता कालीन विज्ञान

मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! एक समय महाराजा इन्द्रजीत मेघनाद ने अपनी पत्नी सुलोचना को ले करके वे मानो देखो, मंगल की यात्रा करते रहते थे। वे मंगल की यात्रा करते रहे, क्योंकि यान से, यातायात के साधन है तो साधन मानव के समीप रहने चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का विज्ञान और क्रियाकलाप त्रेता के काल में होता रहा है। महाराजा कुलीश गोत्र के ये राजा थे। राजा रावण अपनी मांगलं सुतम् मेरे प्यारे! देखो, सर्वत्र संसार में उनका साम्राज्य छा गया। छाने के पश्चात्........और वहाँ अपनी आभा को प्रकट कराते रहे और जो राष्ट्र का क्रियाकर्म है, जो भी क्रियाकलाप होता रहा है उस क्रियाकलाप को ले करके मेरे पुत्रे! देखो, प्रत्येक राष्ट्रों में अपना उपदेश देते थे। प्रजा को मुनिवरों! देखो, प्रजा का जो उस समय धर्म और कर्म था वो किस नैतिक आभा पर था इसको श्रवण करो।

बुद्धिमनों से पवित्र राष्ट्र

मानो देखो, उस काल में प्रत्येक गृह में याग होते थे। प्रत्येक गृह में सुगन्धि होती थी और सुगन्धि होने के पश्चात वेदों की ध्वनियाँ होती थी। ब्राह्मणत्व, पाण्डित्व की दृष्टि से संसार की दृष्टिपात करता रहा। तो राजा के राष्ट्र में राजकोश में इस प्रकार का एक विभाग था जो केवल इसी के लिए, कि वेद का पठन हो। वेद की परम्पराएँ हो, मानो देखो, उनकी रक्षा के लिए कोश में से भाग होता है। जिससे राजा के राष्ट्र में विवेक पुरुष हों, बुद्धिमान हों। जिन बुद्धिमानों से राष्ट्र और समाज पवित्र बनते हैं। तो ये मानो देखो, राजा के कोश में ऐसी एक नियमावली बनी हुई। और वह भी वह कोश होता था जो सात्विक कोश, कृषक का जो कोश रहता था क्योंकि ऋषि–मुनि विवेकी बनते, आहार और व्यवहार से। तो मुनिवरो! देखो, इस प्रकार का राष्ट्र का कर्म मानो विधान युक्त चलता रहा। समय व्यतीत होता रहा, मेरे प्यारे! देखो, यहाँ सम्भविताः प्रह्वे तं देवाः बेटा! एक समय महाराजा खरदुषण रावण के समीप आए और उन्होंने–कहा–प्रभु! राष्ट्र की परम्परा बड़ी महानता में गति कर रही है परन्तु कहीं–कहीं अकर्तव्यवाद हो जाता है। उसके लिए शासक की आवश्यकता है। तो बेटा! उनका नृत होता रहा, विचार–विनिमय होता रहा तो वे जाकर के बुद्धियुक्त अपने वाक्‌ों को प्रकट करके और वहाँ उनको महान बनाते थे।

साधक राजा रावण

तो मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र चलता रहा, मुझे स्मरण है राजा रावण के राष्ट्र को इसी प्रकार बेटा! 242 वर्षों तक राज चलता रहा। 242 वर्षों तक रावण का राष्ट्र रहा। परन्तु देखो, उनकी आयु दीर्घ थी। राजा रावण की भी आयु दीर्घ थी। वो आयु के ऊपर मानो साधना करते रहते थे। राजा का ये कर्तव्य था, कि प्रातःकाल अपने आसन को त्याग देना और अपनी क्रियाओं से निवृत्त होना, उसमें याग करना, ब्रह्मयाग करना मेरे प्यारे! देव पूजा करने के पश्चात् वह अपने ध्यान से अवृण हो करके और वे राष्ट्र के कार्यों में रत रहते थे। महारानी मंदोदरी सदैव प्रभु का, राष्ट्र का, क्योंकि हमारे यहाँ एक नियमावली बनी हुई है परम्परागतों से। कि राजा जैसे न्यायालयों में, विद्यमान होता है ऐसे ही राजलक्ष्मियां भी मुनिवरो! देखो, न्यायालय में न्याय करती रहती। न्याय करती रही है क्योंकि हमारे यहां, देवियों का न्याय मानो देवियाँ करती थी और राजपुरुष, पुरुषों का न्याय राष्ट्र के द्वारा होता।

तो मुनिवरो! देखो इससे समाज में कुरीति नहीं आती, इससे समाज में हिंसा नहीं आती क्योंकि देवियों की सुरक्षा करने के लिए, राजलक्ष्मियाँ है और पुरुषों की रक्षा करने के लिए मुनिवरो! देखो, राजा है। जो न्यायालय में न्याय कर रहें हैं। इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, देवियाँ, उनके प्रिय क्रियाकलाप, उनकी जितनी भी कठिनाईयां है मानो उनमें जितना भी दोषारोपण है वो न्यायालय में, देवियाँ, पुत्रियाँ अपना न्याय करती रहीं है। तो बेटा! ये काल राजा रावण के यहाँ भी होता रहा है। महारानी मंदोदरी अपने आसन पर न्याय करती थी। सुलोचना अपने आसन पर न्याय करती रही क्योंकि त्रिपुरी में जब महाराजा मेघनाद का साम्राज्य हो गया तो उस समय मेघनाद जैसे प्रातः कालीन न्यायालय में रहते थे, उसी प्रकार उनकी पत्नी सुलोचना भी रहती थी, वे न्याय करती रही हैं।

मेरे पुत्रो! देखो, महारानी सुलोचना के पुत्र हुआ था जिस पुत्र का नाम शुकेनकेतु कहते हैं शुकेना कृति इन भागों में रमण करता रहा। मानो देखो, उसको शिक्षा देना, आचार और विचारों को महान बनाना, ये राजा के राष्ट्र में एक नियमावली बन गई। राजा के राष्ट्र में एक नियमावली बनी हुई थी उस काल में कि ब्रहे ब्रणस्वस्तं ब्रहे ब्रहस्तुत्यधनम् मानो एक नियमावली यह बनी हुई थी कि यहाँ राष्ट्राम्ब्रहे, वेद का अध्ययन करना आयुर्वेद का अध्ययन करना, मेरी कन्याओं को बहुत अनिवार्य था। बहुत अनिवार्य, क्योंकि आयुर्वेद की विद्या जो माता अध्ययन करती है वह अपनी सन्तानों को उत्तम जन्म दे सकती है क्योंकि आयुर्वेद के जानने वाला, विद्यालयों में आचार्य होता है, जो नस नाड़ियों के विज्ञान को जान करके मानव की जानकारी करा देता है।

मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के यहाँ, महाराजा कुम्भकरण और मेघनाद जी ने दोनों ने मिलान होकर के कहीं वेद में यह श्रवण कर लिए कि दीपावली राग भी होता है, एक मेघावली राग होता है। एक मानो देखो, मोहनी राग होता है। तो वह, उस गान में लगे हुए थे। एक समय बेटा! उस गान की कृतिभा जब उनसे समाप्त हो गई तो एक समय वे भ्रमण करते हुए, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज उस समय गान विद्या में बड़े महान थे। वे रेवक मुनि के द्वार पर पहुँचे, महाराजा मेघनाद ने कहा– प्रभु! हमने वेद मन्त्रो में श्रवण किया कि एक मेघा राग होता है, एक दीपावली दीपा राग होता है और एक मोहिनी राग होता है ये क्या है?

तो उस समय महाराजा गाड़ीवान रेवक की आयु देखो, उस समय 481 वर्ष की थीं वे 481 वर्ष के ब्रह्मचारी मेरे प्यारे! देखो, वो सब रागों को जानते थे। सौ–सौ वर्षों तक उन्होंने एक–एक विषय पर अनुसन्धान किया। वे प्राण और अपान का मिलान करके, स्वरों की ध्वनि को जानता है उसकी ध्वनि में अग्नि प्रदीप्त हो करके दीपावली राग बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जो जल, जो उदान को और समान को प्राण में दोनों में उनको पिरो देता है तीनों प्राणों का समावेश होकर के जब वो गान गाता है तो मुनिवरों! देखो, उससे मेघा रागों का, मेघ उत्पन्न हो जाता है। तो ये विधाएँ हमारे यहाँ परम्परागतों से रही हैं। इन विद्याओं के ऊपर बहुत अनुसंधान किया। परन्तु देखो, गान गा रहा है, गृह के दीपक प्रकाशित हो रहे है। गान गा रहा है, मेघ उमड़ रहें है तो वृष्टि हो रही है। इस प्रकार की विद्याएँ मानो इस विद्या को त्रेता के काल में, रावण के काल में यंत्रो में इस परमाणु विद्या को उन्होंने यंत्रों में भरण करने का प्रयास किया। प्रयास करके मेरे पुत्रे! देखो, यंत्रो को वायु में त्यागा वृष्टि हो गई। मानो इसी प्रकार मानव अपने क्रिया कलापों में इस विद्या को प्रत्यक्ष करता रहा है। जैसे मल्हार राग गाती है माता, मल्हार राग गा करके वृष्टि होने लगती है जैसे दीपावली राग गाता है, गान गाता है तो दीपक प्रकाशित हो जाते है। इस प्रकार की विद्याएँ जैसे परमाणु को विभाजन करने से मानो देखो, अनन्त अग्नि का भण्डार उत्पन्न हो जाता है। इसी प्रकार मानव की, वाणी में मानव की प्राणों के निदान करने में वो शक्ति प्राप्त होती है।

धर्म से जीवन

अनुसंधान का विषय

तो आज मेरे पुत्रो! मैं इस विद्या का मैंने बहुत कुछ अध्ययन भी किया किसी काल में, आज पुत्रो! इतना समय नहीं है आज जो मैं इसकी विवेचना ऊर्ध्वा गति में कर सकूं। विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रो! हमारे यहाँ परम्परागतों से अपनी–अपनी आभा में मानव नृत करता रहा है। विचार विनिमय में क्या, राजा रावण के यहाँ इस प्रकार की विधाएँ बेटा! उनके विद्यालयों में नृत करती रही। मुझे स्मरण है कि मेघों का राग, गाने वाला मेघनाद था। सुलोचना जब गान गाती थी तो बेटा! पुत्र महान बन जाते थे। विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रो! मेरी पुत्रियों के शरीरों में मानव के शरीरों में, मस्तिष्कों में, ये विद्याएँ सब नृत करती रहीं है। और ये विद्याएँ कहाँ से प्राप्त होती हैं? कुछ विद्याएँ आयुर्वेद से प्राप्त होती है। कुछ विद्याएँ उपासना काण्ड से प्राप्त होती है। मानो ये विद्याएँ मानो अनुसंधान करने का एक विषय है।

मोहनी विद्या

तो मेरे प्यारे! देखो, यह ज्ञान, यह विज्ञान परम्परागतो से मानवीयता में रमण करता रहा है। तो मेरे पुत्रो! मैं विशेष चर्चाओं में, तुम्हें ले जाने के लिए नहीं आया हूँ केवल विचार यह प्रकट कर रहा हूँ कि परमपिता परमात्मा की महिमा और उसका जो ज्ञान, विज्ञान जिन महापुरुषों ने जाना है मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के जेठे पुत्र अहिरावण मुनिवरो! देखो, वे तपस्या करते रहे, वे राष्ट्र ही नहीं करते थे, राष्ट्र का पालन तो प्रियता में था परन्तु वो प्रातः कालीन याग करते और याग से पूर्व वो बह्मयाग करते थे। ब्रह्मयाग कहते हैं ब्रह्म के चिन्तन को, देवयाग कहते हैं अग्निहोत्र को, बेटा! जहाँ देवता प्रसन्न होते हैं। तो मानो देखो, जब वे अग्नि के ऊपर वेद मन्त्रों का अध्ययन करने लगे, तो वे तप करने लगे तप करते–करते उनके द्वारा एक मोहनी विद्या थी और वो मोहनी विद्या कैसी थी? मानो देखो, वाणी को उन्होंने शक्तिशाली बनाया, उन्होंने कई यंत्रों को भी जाना, इससे यंत्र त्यागा और मानो मानव मूर्छित हो गया और इसको मोहनी विद्या कहते थे। बेटा! देखो, उसको कहीं भी ले जा सकते थे। तुम्हें प्रतीत होगा अहिरावण को यह विद्या सिद्ध हो रही थी, वे उस विद्या में पारायण थे। अध्ययन करते रहते थे ये विद्या, उन्होंने महर्षि दधीचि जी के आश्रम में ग्रहण की थी। महात्मा दधीचि इस विद्या को जानते थे। मेरे प्यारे! ऋषि मुनि तो कोई ऐसा था ही नहीं जो कोई–सी विद्या को न जानता हो। वो सर्वत्र विद्या में पारायण रहते थे। वे उनके द्वारा ऐसी विद्या जैसे अन्तरिक्ष में कोई शब्द गति कर रहा है और शब्द के साथ में चित्र, तो वह अपने यहाँ यंत्रों में उन चित्रों का दर्शन करते थे। ये अहिरावण भी इस विद्या को जानते थे, इस विज्ञान को जानते थे। मेरे पुत्रो! देखो, वहाँ राजा अहिरावण मुनिवरो! देखो, पातालपुरी के राजा थे। पातालपुरी में उनके यहां विज्ञान भी, ज्ञान भी और दुग्ध देने वाला जो पशु है ये बहुत आज्ञा में रहता है था, परन्तु देखो, वहाँ उनकी पूजा होती रहती थी तो राष्ट्र का जो निर्माण, राष्ट्र की जो प्रतिभा है तो मुनिवरो! देखो, राजाओं के ऊपर होती थी, राजा जिस प्रकार का आहार और व्यवहार, उनका जो क्रियाकलाप होता है उसी के आधार पर मुनिवरो! देखो, समाज का निर्माण होता है।

राजा रावण का राष्ट्र

तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण के यहां महानता में, एक से एक महान उनका पुत्र, एक से एक महान राजा परन्तु देखो, क्रियाकलाप विचित्रता में चलता रहता। मेरे पुत्रों! देखो, उनके राष्ट्र में प्रातः कालीन याग होना। प्रत्येक राष्ट्र का जो ऊँचा कर्मचारी था उसकी राष्ट्रीयता में नियमावली बनी हुई थी कि राजा के राष्ट्र में, उनके यहाँ याग होना चाहिए। मानो जैसे न्यायाकृतधीश होते हैं उनको याग करना है, जिससे समाज उनमें शिक्षा लेते रहे और उनमें कर्तव्यवादी कर्म बनें रहे। और वह अपने कर्तव्य का पालन करते रहे। जो मानव देखो, याज्ञिक होता है। जो प्रभु भक्त होता है वह मानो इस समाज के वैभव को अपने में संग्रहत नहीं करता, उसके हृदय में एक नैतिकता बनी रहती है। उसके हृदय में देखो, मानो नैतिकता बन करके वो न्याय देता समाजों में है। न्याय किसे कहते हैं? न्याय ही चरित्र है, और चरित्र ही न्याय है। इन दोनों को देता रहता है तो इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, राजा के राष्ट्र में इस प्रकार के क्रिया– कलाप होते रहें है।

आप मैं बेटा! कहाँ चला गया हूँ, दूरी न चला जाऊँ, विचार क्या मुनिवरो! देखो, सूर्य की किरणों के द्वारा, उन सूर्य किरणों को एकत्रित करना, उनके यंत्रों का निर्माण करना यंत्र अंतरिक्ष में गति कर रहे हैं और शक्ति कहाँ से? सूर्य की किरणों से प्राप्त होती है मेरे प्यारे! खनिज विद्या भी पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार की विद्या भी ऊर्ध्वा में रही हैं परन्तु देखो, उन्होंने ऐसी, ऐसी औषधि भी है जिनकों एकत्रित करने से वाहन गति करते हैं। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी में ऊर्ध्वा में गति करने वाली है। अन्तरिक्ष में गति करने वाली हैं। तो मुनिवरो! देखो, ये विधाएँ, ये विज्ञान परम्परागतों से ही बेटा जहाँ ये राष्ट्रीयता में भ्रमण करता रहा है और राष्ट्र उससे पनपता रहा है।

कर्तव्यवाद

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, आज मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ कि प्रत्येक स्थलियों पर कर्तव्यवाद ही मानो ऊँचा कहलाता है। कर्तव्यवादी प्राणी ही मुनिवरो! देखो, ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ता है। तो मानव को उड़ान उड़नी चाहिए। बेटा! देखो, मैं राजा रावण के राष्ट्र की ये चर्चा कर रहा था। मानो देखो, महारानी मंदोदरी राष्ट्र में महानता की उड़ान उड़ती रहती थी। वह अपने न्यायालयों में कर्तव्य करती थी। और मुनिवरो! देखो, गृह के सात्विक वातावरण को देती है। वह विद्यालयों में बेटा! जाती और न्याय की चर्चाएँ मानो देखो, विश्वविद्यालयों में, शिक्षा देने का भी उनका नियम बना हुआ था। एक समय निर्धारित किया हुआ था। जिससे मुनिवरो! देखो, पुत्र पुत्रियां उनके अमृत वचनों को पान करके, महानता को प्राप्त होते रहे। तो इस प्रकार का नृत इस प्रकार का विचार बेटा! राजाओं के राष्ट्र में होता रहा। अब बेटा! मैं विचार विनिमय क्या आज का हमारा विचार कि हम अपनी नैतिकता को, अपनी मानवता को अपने विद्यालयों को ऊँचा बनाते हुए और इस संसार सागर से पार हो जाएँ।

बेटा! हम प्रभु की याचना कर रहे थे प्रत्येक मानव आनन्दयुक्त होना चाहता है। मानो देखो, राजा अपनी प्रजा को आनन्द देना चाहता है। प्रजा भी राष्ट्र को महान दृष्टिपात करना चाहती है। तो बेटा! प्रत्येक मानव उसमें रमण करता, उसके आनन्द में आनन्दित रहता है। ये है बेटा! आप का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रकट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ ये है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूंगा।

तिबडा, मोदी नगर

धर्म से जीवन

परमात्मा का विज्ञान———————09—02—84

जीते रहो!

देखो मुनिवरो, आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत्, अथवा चेतन्य जगत—हमें दृष्टिपात आ रहा है। मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। जिस भी काल में मानव ने यह उड़ाने उड़ी है। कि हम परमपिता परमात्मा को सर्वत्रता में दृष्टिपात करना चाहते हैं। तो वह कण—कण में दृष्टिपात होता हुआ, उनको शांत मुद्रा में प्राप्त हुआ। जिस भी काल में मानव ने शांतचित होकर के एक एक वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ किया, उसी काल में एक एक वेद के मन्त्र में, उस महान मेरे देव का ब्रह्माण्ड अथवा उसकी महिमा का वो द्योतक प्राप्त हुआ।

परमात्मा की गाथा

मुनिवरो! देखो, प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसका वर्णन कर रहा है। जिस भी दशा में तुम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत हो जाओगे, उसी दशा में तुम्हें अनन्तता प्राप्त होती हुई दृष्टिपात आने लगेगी। क्योंकि वह मेरा देव अनन्ततव है। अनन्तमय कहलाया गया है।

परन्तु जब हम एक—एक वेद मन्त्र के ऊपर एक—एक शब्द के ऊपर विचार विनिमय करने लगते हैं। जैसे आज का हमारा वेद मन्त्र, माता वसुन्धरा की याचना कर रहा था और ये कह रहा था हे ममत्वानि वसुन्धरा, हे माता! तू वसुन्धरा है तू प्रायः कल्याण करने वाली है। क्योंकि वसुन्धरा का अभिप्राय है जिसके गर्भ में हम वशीभूत रहते हैं। मेरे पुत्रों! हम जैसे, जब शिशु माता वसुन्धरा के गर्भस्थल में प्रवेश होते हैं। तो एक शिशु, एक बिन्दु के प्रवेश होते ही मानो सर्वत्र देवता उस शिशु की रक्षा करने लगते हैं।

रक्षक—देवता

मेरे प्यारे! माता के गर्भ स्थल में एक बिन्दु का प्रवेश हुआ तो मेरे प्यारे! वायु उसे प्राण देने लगती है। अग्नि उसे उष्ण बनाने लगती है। सूर्य उसे तेजोमयी बनाने लगता है। अन्तरिक्ष उसे अवकाश देने लगता है। मानो चन्द्रमा अमृत बहाने लगता है। और पृथ्वी उसे गुरुत्व देने लगती है। और नाना प्रकार के जो तारामण्डलों की माला बनी हुई है। मानो वो उसे ब्रह्माण्ड की प्रतिभा को प्रदान कर देती है। तो विचार विनिमय क्या, मेरे पुत्रो! प्रभु की कितनी महत्तता है। एक शिशु के प्रवेश होते ही सर्वत्र देवता मानो उसकी रक्षा करने लगते हैं। चन्द्रमा बेटा! अमृत बहा रहा है। अमृत प्रदान कर रहा है। मेरी प्यारी माता को कोई ज्ञान नहीं होता तेरा शिशु कैसे अमृत को पान कर रहा है। परन्तु देखो, चन्द्रमा प्रकाश दे रहा है। नाना प्रकार की किरणों के द्वारा ऊर्ज्वा दे रहा है।

ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का वर्णन आ रहा है। मानो वो मेरा देव कितना वैज्ञानिक है बेटा! प्रत्येक मानव अपने में परम्परागतों से वैज्ञानिक बनने के लिए तत्पर रहता है। और ये चाहता है कि मैं संसार का वैज्ञानिक बनूं, मैं विज्ञान के युग में चला जाऊँ। एक—एक परमाणु के ऊपर मेरा अधिपथ्य हो जाए। परन्तु प्रभु का विज्ञान कितना अनन्तमयी माना गया है। बेटा! कोई माता यह नहीं जानती कि चन्द्रमा अमृत कैसे बहा रहा है। कैसे प्रदान कर रहा है। अग्नि ऊष्ण कैसे बना रही है? वायु प्राण कैसे दे रहा है? सूर्य भी नाना प्रकार की किरणें बेटा! देखो, उसको ऊर्ज्वा प्रदान कर रही थी।

माता वसुन्धरा

आओ मेरे पुत्रो! जब हम इससे उपरान्तता को प्राप्त होते हैं। माता के गर्भस्थल से जब शिशु इस संसार में, पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है। पृथ्वी माता की जैसे ही गोद में आया तो बेटा! ये पृथ्वी नाना प्रकार के खाद्य और खनिज उसे प्रदान करने लगती है। मेरे प्यारे! नाना प्रकार का खाद्य और खनिज उसे प्राप्त होने लगता है। नाना प्रकार के वैज्ञानिक बेटा! इस माता वसुन्धरा के मानो गर्भ में प्रवेश हो करके, विज्ञान के युग में प्रवेश करते रहे हैं परन्तु देखो, वे जो वैज्ञानिक जन है। वे ये विचारते हैं कि खाद्यान कहाँ से आता है? खनिज को कौन दे रहा है? नाना प्रकार के देवता बेटा! माता वसुन्धरा के गर्भ में, नाना प्रकार के परमाणुओं को तपा रहे हैं। नाना प्रकार के परमाणुओं को ऊर्ज्वा देकर के वही अन्नाद रूप में बन रहे हैं, वही वनस्पतियों के रूप में परिणित हो रहे है। परन्तु देखो, उसे मानव पान कर रहा है। उसे प्राणी पान कर रहा है। हे माता! तुझे वेद वसुन्धरा कहता है। वसुन्धरं ब्रह्मवाचो देवाः हे माता, हे पृथ्वी सम्भवः देवो तो मुनिवरो! देखो, उस महान ब्रह्माग्नि में पिरोई हुई हो। तेरे गर्भस्थल में जब वैज्ञानिक जन प्रवेश करते हैं। तो नाना प्रकार के परमाणु तेरे में गति कर रहे हैं। मानो कहीं सूर्य की किरण नाना प्रकार की धातु का निर्माण कर रही है, कहीं स्वर्ण की धातु का निर्माण हो रहा है तो मानो कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है। तो नाना प्रकार का खनिज बेटा! देखो, जल को शक्तिशाली बना करके, नाना प्रकार की सूर्य की किरणें अग्नि में समन्वय होकर के बेटा! परमाणुओं को तपाती रहती है। जल को शक्तिशाली बनाती रहती है। उन्हीं को जान करके बेटा! वैज्ञानिक जन, कोई सूर्य की परिक्रमा कर रहा है, कोई चन्द्रमा की परिक्रमा कर रहा है कोई मानो ध्रुव की परिक्रमा कर रहा है कोई पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश होकर के नाना प्रकार के खनिजों को जान करके मेरे प्यारे! देखो, तारामण्डलों की यात्रा कर रहा है।

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! इस माता वसुन्धरा के गर्भ में क्या नहीं है बेटा! जिस भी काल में मानव ने एक वेद के मन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ किया तो पृथ्वी का सर्वत्र विज्ञान उस मानव के सम्मुख आ गया है। उस मानव के मस्तिष्क में मानो देखो, ऋतम्बराती के रूप में प्रवेश हो गया है। वहीं मानो देखो, ऊर्ज्वा बन करके मानो समाधिष्ट होकर के अपने बाह्य जगत को आन्तरिक जगत् में प्रवेश करके बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड का दर्शन करता रहा।

तो विचार विनिमय क्या, आओ मेरे प्यारे! मैं विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूं विचार विनिमय क्या है? मुनिवरो! देखो, माता पृथ्वी के गर्भ में मानव का प्रवेश होना ही नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों को पान करने लगता है। अपने में ग्रहण करता हुआ ऊर्ज्वा में प्रवेश कर जाता है। मानो सूर्य किरणों के साथ धातु—पिपाद को जान करके बेटा! सूर्य की परिक्रमा क्या, मानो देखो, वह ध्रुव तक की परिक्रमा करने के लिए तत्पर हो जाता है।

धर्म से जीवन

महाराजा अश्वपति का वृष्टि याग

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेष विवेचना न देता हुआ, आज मैं बेटा! ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! तुमने नामोकरण से श्रवण किया होगा, महर्षि वैशम्पायन ऋषि का, महर्षि वैशम्पायन एक समय मानो महाराजा अश्वपति के याग में पहुँचे। महाराजा अश्वपति के याग में वे वृष्टियाग करा रहे थे। जब वृष्टियाग करा रहे थे, तो जब वो याग में विद्यमान थे। उद्गाता के रूप में और ब्रह्मवर्चोसि के रूप में स्वेनकेतु, ऋषि महाराज याग में आ पहुँचे। उन्होंने महाराजा अश्वपति से कहा–क्या मैं तुम्हारे उद्गान गाने वाले से कुछ प्रश्न कर सकता हूँ? उन्होंने कहा–महाराज! यह तो अनुपम कृपा होगी। आप प्रश्न कीजिए।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा हे वैशम्पायन मैं यह जानना चाहता हूं कि ये जो तुम याग कर्म कर रहे हो इसमें एक शब्द आया है रथं भविताः यज्ञ व्रभे कृतां देवाः यज्ञो रथाः द्यौ लोकाः मानो ये वेद का मन्त्र कुछ कह रहा है, क्या इसके भावार्थ को तुम जानते हो? तो उस समय मुनिवरो! वैशम्पायन ऋषि ने स्नेनकेतु ऋषि के प्रश्नों को जानकर के मानो उनका उत्तर उचित रूप से देना उन्होंने प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा–प्रभु! वेद मन्त्र ऐसा कहता है कि जब यजमान याग कर्म करता है। क्रियाकलाप में परिणित हो जाता है तो मानव का जो शब्द है, वो अग्नि की तरंगों पर विद्यमान हो करके और यज्ञशाला का जिस प्रकार का आकार होता है उसी प्रकार के आकार के रूप में यजमान, होता जन, विद्यमान होकर के द्यौलोक को जाते हैं। ऐसा वेद का मन्त्र कहता है। परन्तु ये जो वेद का मन्त्र कहता है तो स्नेनकेतु ऋषि ने कहा भगवन्! क्या तुम इस के क्रियाकलाप को अथवा प्रत्यक्षवाद में लाने के लिए किसी काल में तुमने प्रयत्न किया है अथवा नहीं। तो मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा मैं क्रियात्मकता में इसको नहीं लाया हूं। तो मेरे प्यारे! देखो महर्षि वैशम्पायन ने कहा कि हे महाराज! यदि आपने इसको क्रियात्मकता में लाने का प्रयास किया हो अथवा लाए हो, तो उच्चारण कीजिए तो मुनिवरो! उस समय स्नेनकेतु ने कहा कि मैं भी इसको नहीं जानता। क्योंकि मैं अपने पिता से यह प्रश्न करता रहता था, मेरे पिता कुछ कुछ जानते थे परन्तु वे भी पूर्ण रूपेण नहीं जानते थे।

वेद मन्त्र का मन्थन

तो मेरे प्यारे! देखो, यह उनका उत्तर प्रश्न चलता रहा, परन्तु याग प्रारम्भ रहा। याग जब समाप्त हो गया तो महर्षि वैशम्पायन इसी वेद मन्त्र में लग गए, इसका चिन्तन और मनन करने लगे, कि मैं इसको प्रत्यक्ष में कैसे लाऊं? किस प्रकार ला सकता हूँ? तो मेरे पुत्रो! देखो, जब याग समाप्त हो गया। उन्होंने बेटा! दक्षणं ब्रह्मवाचोः वे सर्वत्र आभा में प्राप्त होते, समापन करते हुए मुनिवरो! देखो, अपने आश्रम को उन्होंने गमन किया। वे भ्रमण करते जब अपने आश्रम में आ गए। बेटा! वे मानो सांयकाल को निंद्रा की गोद में चले गए। और मुनिवरो! मध्यरात्रि में वे जागरूक हुए। तो वहीं वेद मन्त्र उन्हें स्मरण आने लगा आया। वेद मंत्र ये कह रहा था।

यज्ञं भविताः यज्ञं रथाः यज्ञं यजन्नं ब्रह्माः वाचन्नमो द्यौ रथाः।

मेरे प्यारे! वेद मन्त्र यह कह रहा था बारम्बार, कि मेरा रथ कैसे द्यौ लोक को जाता है? तो इसके ऊपर ऋषि चिन्तन करने लगा। क्योंकि वैदिक ऋषियों ने एक–एक वेद मन्त्र के ऊपर बेटा! बहुत अध्ययन किया।

मुझे बेटा! जब वह ऋषि मुनियों की वार्ताएं स्मरण आने लगती है तो प्रायः हृदय गद–गद हो जाता है। मैं ये कहा करता हूं कि ऋषियों ने एक–एक वेद मन्त्र को, कितना प्रत्यक्षवाद में लाने का उन्होंने प्रयास किया है। उन्होंने प्रोक्ष और मुनिवरो! देखो, अप्रोक्ष दोनों के स्वरुप को उन्होंने जाना। महर्षि वैशम्पायन बेटा! देखो, इसी चिन्तन में लग गये कि मैं रथ को कैसे दृष्टिपात करूं ? ये रथ कैसे बनता है? मानो क्रिया तो मुझे दृष्टिपात आ गयी वेद मन्त्र का भावार्थ भी..........यही कह रहा है परन्तु ये रथ कैसे जाता है, मैं रथ को दृष्टिपात करना चाहता हूँ तो कैसे करूं? मैं इसको क्रिया में कैसे लाऊँ ?

तो मेरे प्यारे! इसी चिन्तन में लगे रहे, वह रात्रि समाप्त हो गई, प्रातःकालीन हो गया, सूर्य उदय हो गया। परन्तु देखो, ऋषि का चिन्तन शान्त नहीं हुआ। मुनिवरो! देखो, वह हृदयरूपी गुफा में बेटा! शांत होकर के चिन्तन और मनन कर रहे थे तो मुनिवरो! देखो, निकटम आश्रम महर्षि विभाण्डक मुनि का था। महर्षि विभाण्डक मुनि ने विचारा कि आज ऋषि ने अपने आसन को नहीं त्यागा, इसके मूल में क्या है ?

मेरे पुत्रों! देखो, वे भी गमन करते हुए ऋषि के आसन पर पहुंचे। ऋषि ने कहा–कहिए भगवन! आज आप कैसे शांत मुद्रित है? उन्होंने कहा–प्रभु! मैं एक मुद्रा में मुद्रित हो रहा हूं। परन्तु मेरे आंगन में वो विचार नहीं आ रहा है, मैं उस चिन्तन में लगा हुआ हूं। और ये वेद मन्त्र है। मुनिवरो! देखो, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उसी चिन्तन में लग गए। इतने में मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धी वे और यज्ञदत्त गारगेपथ्य बेटा! कहीं से भ्रमण करते हुए आ गए। उन्होंने भी बेटा! उसी वेद मन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ किया।

मुनिवरो! देखो, कहीं से महर्षि शिलक महर्षि प्रवाहण, महर्षि दालभ्य आए और वे भी इसी के ऊपर अनुसंधान करने लगे। उन दोनों पति–पत्नी के चरणों को प्रातः कालीन उनकी वन्दना करते और वन्दना करके याग कर्म करके मानो देखो, याग में नाना प्रकार का साकल्य मानो जब आहुति देते गौघृत के द्वारा मानो देखो, वह अपने में अपनेपन को प्राप्त होते रहते थे।

अद्भुत क्रिया याग

तो ऐसा मुनिवरो! देखो, स्मरण आता रहता है। कि उन्होंने बेटा! जहां देखो, अपने चित्र आने लगे और अनुसंधान किया। इसी वेद मन्त्र के ऊपर अनुसंधान करते–करते बेटा! उन्होंने यह विचारा कि यज्ञशाला जितने आकार की है, उतने ही आकार का मानो रथ बनकर के वह देखो, तरंगों के ऊपर बेटा! अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके वो यंत्रों में दृष्टिपात आने लगा। जब मुनिवरो! देखो, यंत्रों में दृष्टिपात आने लगा, तो ऋषियों ने उसके पश्चात् यह चिन्तन किया कि याग तो ऐसा अद्भुत कर्म है, ऐसी अद्भुत क्रिया है मानो यदि यजमान का हृदय याग के ऊपर न्यौछावर हो जाए मानो इसी में परिणित हो जाए तो वास्तव में इसका एक–एक जो शब्द है यज्ञ में उच्चारण किया हुआ जो स्वाहा है वो द्यौ लोक को प्राप्त हो जाता है।

ऋषियों का मत्तव्य

तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज नाना ऋषिवर बेटा! उनके यहाँ मानो यंत्रों को दृष्टिपात करने लगे। तो मुनिवरो! देखो, उस समय शिकामकेतु ऋषि और उनकी पत्नी शुकन्तकेतु दोनों अपनी उस यज्ञशाला और विज्ञानशाला का दिग्दर्शन कराने लगे। ऋषि मुनियों का एक मन्तव्य रहा है कि जब तक हम एक एक इन्द्रिय के ज्ञान और विज्ञान को नहीं जान सकते, उसके स्वरूप को अच्छी प्रकार मंथन नहीं कर सकते, तक हम ब्रह्म को प्राप्त नहीं हो सकते। मेरे प्यारे! प्रत्येक इन्द्रिय में ज्ञान है, विज्ञान है संसार का परमाणुवाद है एक परमाणु सुनेत परमाणु है परन्तु उसके अन्तर्गत नाना प्रकार के परमाणु गति करते रहते है।

धर्म से जीवन

मुझे स्मरण है एक बिन्दु है एक बिन्दु के अन्तर्गत मुनिवरो! देखो, अरबों, खरबों परमाणु गति करते हुए जैसे मुनिवरों! देखो, मधु मक्खी होती है परन्तु उनमें एक रानी कृत होती है परन्तु नाना मक्खियां उसकी परिक्रमा करती है। उसी के आकार की बनी रहती है। ऐसे ही ऋषियों ने सिद्ध किया कि एक शब्द जैसे उच्चारण हुआ, उसका मानो परमाणु बना और परमाणु में मुनिवरो! देखो, और नाना प्रकार के अणु उसमें भ्रमण करते रहते। उसके अन्तर्गत जैसा मानव का यह शरीर है, उतने ही आकार का मुनिवरो! देखो, एक–एक शब्द, उतने ही आकार के परमाणु मुनिवरो! देखो, अन्तरिक्ष में गति करते हुए वे शब्द रूप में मैं बेटा! अन्तरिक्ष में गति करने लगा जाते है।

अन्तरिक्ष में पूर्वजों के चित्र

तो विचार विनिमय क्या, मुनिवरो! देखो, वेद का ऋषि, वेद का मन्त्र हमें जिस मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो महर्षि शिकामकेतु मुनि महाराज ने कहा–हे वैशम्पायन! मेरे यहाँ नाना प्रकार के यंत्र है मानो आओ, मैं तुम्हें दृष्टिपात कराऊँ, मैंने जो अब तक याग के द्वारा, जिन यंत्रों को जाना हैं, जिन रथों को जाना है, मैं उन रथों का तुम्हें दृष्टिपात कराना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! उन रथों का दृष्टिपात कराने लगे, तो मुनिवरो! देखो, कुछ यंत्र ऐसे थे, जिनमें मानो देखो, उनके चित्र थे, यंत्र ऐसे थे जिनमें उनके पूर्वजों के चित्र थे। मेरे प्यारे! जो संसार में पूर्वज नहीं थे, परन्तु उनके शब्द अन्तरिक्ष में गति कर रहे है। मानो देखो, अन्तरिक्ष में उनका शब्द, शब्द के साथ में उनका चित्र, चित्रों के साथ में उनका क्रियाकलाप बेटा! देखो, यंत्रों में उन्हें दृष्टिपात हो रहा था। तो मेरा पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा–कि हे भगवन्! यह देखो, मेरे यंत्र मानो इनमें हमारे पूर्वज है मानो हमारे 50वें महापिता हैं जिनके अन्तरिक्ष में मानो देखो, चित्र विद्यमान हैं। और चित्रो के साथ में उनका जो शब्द है शब्दों के साथ में उनका जो क्रियाकलाप हो रहा है। वह देखो, मेरे यंत्र में दृष्टिपात आ रहा है।

तो मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है कि मानो देखो, उद्यालक गोत्र के ऋषियों ने बेटा! वैशम्पायन को मानो देखो, उन्होंने अपने 50वें महापिता के चित्रों का उन्हें यंत्रों में बेटा! दिग्दर्शन कराया और उन्होंने कहा ये दृष्टिपात करो। तो मुनिवरो! देखो, शकुन्तकेतु ने कहा–कि हे देव! दूसरे यंत्र को भी दृष्टिपात कराओ। मेरे पुत्रों! देखो उनके 100वें महापिता का चित्रों का दर्शन हो रहा था। तो विचार विनिमय क्या महर्षि वैशम्पायन को मुनिवरो! देखो, उद्यालक गोत्रीय ऋषि ने कहा हे भगवन्! हमारा जो गोत्र है वो उद्यालक गोत्रीय कहलाता है। उद्यालक गोत्र में लगभग साढ़े सात हजार वर्ष तक मानो उद्यालक गोत्रीय समाप्त हो गए है। परन्तु देखो, ये जो उद्यालक गोत्र है इसका जो निकास हुआ वो हरितत् गोत्रों से हुआ था। हरितत गोत्रों का लगभग देखो, 12 हजार वंशलज चले गए। परन्तु देखो, हरितत गोत्रों का जो निकास हुआ, वो वायु गोत्रों से हुआ। वायु गोत्रीय जो ऋषि रहे, परन्तु वे 1445 मानो देखो, वंशलज उनके समाप्त हो गए और इसी प्रकार वायु गोत्रों का जो जन्म हुआ वो ब्रह्मा के पुत्र हरिकृणितकेतु उस गोत्र का निकास हुआ। मानो देखो, यह वंशलज परम्परा से कोई उनमें ब्रह्मवेत्ता रहा है, कोई विज्ञानवेत्ता रहा है मानो देखो, ये वंशलज बड़े पवित्र देखो, वाणी में यथार्थतम रहे।

जब मुझे यह स्मरण आता रहा तो मुनिवरो! देखो, ऋषि कहता है कि मैंने इसके ऊपर अनुसंधान किया। तो वेद मन्त्र जैसा कहता है। वेद मन्त्र कहता है कि प्रत्येक वेद मन्त्र में मानो देखो, परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक शब्द अन्तरिक्ष में विद्यमान है। उनके साथ में चित्र है चित्रो के साथ में मुनिवरो! देखो उनका क्रियाकलाप है। सर्वत्र मानो देखो, यंत्रों में दृष्टिपात आता रहा है।

याग कर्म से विज्ञान

आओ मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, परन्तु तुम्हें सूक्ष्म–सा परिचय देने के लिए चला आता हूँ और वह परिचय क्या है, मानो देखो, महर्षि वैशम्पायन इत्यादि मुनि महाराज बेटा! बड़े सन्तुष्ट हुए, अपने में विचारने लगे कि ये ऋषि तो बड़े अद्‌भुत है। जिन्होंने मानो देखो, इस प्रकार याग कर्म से ही इतने प्रकार के विज्ञान को जानने का प्रयास किया है। तो मेरे प्यारे! देखो, वैशम्पायन ऋषि ने यह कहा कि महाराज! इन यन्त्रों के जानने का आपका मन्तव्य क्या है? आपने इस प्रकार इतना पुरुषार्थ, इतना मानो अपने को इसमें हूत कर दिया है। मुनिवरो! देखो, उस समय शिकामकेतु ऋषि ने कहा कि प्रभु! प्रत्येक मानव ये चाहता है कि मुझे संसार की जानकारी हो जाए। प्रत्येक प्राणी की यह इच्छा है कि वो बिन्दु से मानव गमन करता तो मानो इस प्रकृतिवाद में चला जाता है और प्रकृतिवाद, ये ब्रह्म से गुथी हुई है। क्योंकि शून्य प्रकृति ब्रह्म से गुथी हुई है और गुथी हुई होने से मानो जो ब्रह्म में, इसके सन्निधान से जो भी विज्ञान जो भी तरंगवाद, मानव के लिए सहकारी होता है। मानो उसके लिए मानव शून्य से देखो, शून्यबिन्दु से व्यापकवाद में प्रवेश होकर उसको जानना चाहता है। प्रत्येक मानव की यह इच्छा है।

ब्रह्माण्ड से गुँथा शरीर

मेरे प्यारे! देखो, माता का पुत्र है। माता के गुणों, पिता के गुणों के अनुकूल वो गमन करना चाहता है। इसी प्रकार ये जो आत्मा शरीर में वास कर रही है ये मानो अपने पिता के, परमपिता परमात्मा की महती को जानना चाहती है। सदैव यह इच्छा रहती है कि मैं इसके ऊपर क्रिया– कलाप करूँ। मेरा जीवन क्रियात्मक हो जाए, मानो देखो, इस प्रकार वो अद्‌भुत विज्ञान में लगा रहता है। तो मुनिवरो! देखो, जब ऋषि ने यह उत्तर दिया तो उन्होंने कहा–ओर, आपका क्या मन्तव्य है?

तो मुनिवरो! देखो, ऋषि ने कहा कि मेरा यह और मन्तव्य है कि मेरा जो यह शरीर है इसे ब्रह्माण्ड से गुंथा हुआ कहते हैं। मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड और पिण्ड के ऊपर, मैं अनुसंधान करता रहता हूँ और मानो देखो, प्राणसूत्र में, प्रत्येक परमाणु को पिरोया हुआ, स्वीकार करके अपने में मैं मौन हो जाता है मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह कहा तो पुनः कहा–कि महाराज! ओर आपका क्या मन्तव्य है? उन्होंने कहा कि–ओर मेरा यह मन्तव्य है कि यह जो विज्ञान है मानो देखो, इसको क्रिया में लाना और इसको क्रिया में ला करके प्रत्येक इन्द्रिय के ऊपर मेरा अनुसंधान होना चाहिए। ये तो मेरा केवल, वाणी का ही, एक अनुसंधान चल रहा है। मैं वाणी के ऊपर अनुसंधान करूं और चक्षु के ऊपर अनुसंधान करूं मानो त्वचा के ऊपर अनुसंधान हो और मेरा श्रौत्रों के ऊपर अनुसंधान होना चाहिए, परन्तु प्रत्येक इन्द्रिय के ऊपर अनुसंधान हो करके, इसका साकल्य एकत्रित करके मैं मानो देखो, हृदय रूपी जो गुफा है, हृदय रूपी जो यज्ञशाला है मैं उसमें अपने साकल्य की आहुति देकर के मौन होकर के प्रभु में रत होना चाहता हूं।

मेरे प्यारे! देखो, जब ये वाक् ऋषि ने प्रकट किया तो मुनिवरो! देखो, ऋषि मौन हो गया। ऋषि ने कहा–धन्य है भगवन्! आपने मुझे सन्तुष्ट कर दिया है। तो मुनिवरो! देखो महर्षि वैशम्पायन इत्यादि ऋषिवरो ने कहा–कि महाराज! ओर क्या चाहते है? वैशम्पायन ने कहा हे भगवन्! मैंने तुम्हारी प्रेरणा से एक वेद मन्त्र को मैंने अच्छी प्रकार जान लिया। यह एक–एक वेद मन्त्र में मानो देखो, एक–एक शब्द की प्रतिभा निहित रहती है तो यजमान जैसे नाना प्रकार के साकल्य एकत्रित करता हुआ अपने मनों के भी एकत्रित साकल्य के साथ हूत करता है, स्वाहा कहता है तो उस वाणी का शब्द, मुनिवरो! अग्नि

की तरंगों पर विद्यमान हो करके और यजमान का रथ बन करके बेटा! द्यौलोक को प्राप्त होता है। ऐसा मुनिवरो! देखो, ऋषि ने उन्हें दृष्टिपात कराया। बेटा! वैशम्पायन नाना ऋषियों के सहित वहाँ से गमन करने लगे।

मुनिवरो! देखो, शिकामकेतु ऋषि ने कहा–नहीं भगवन्! आप पधारिए। मैंने आपका अतिथि नहीं किया है। तो मुनिवरो! देखो, उन्होंने कामधेनु के दुग्ध का आहार कराया। मेरे पुत्रो! देखो, आहार कराने के पश्चात् उन्होंने कहा–प्रभु अब आइए मेरी यज्ञशाला में विराज करके कुछ मानो आप का हम स्वागत करें।

तो मुनिवरो! देखो, ऋषिवर मानो उनकी यज्ञशाला में विद्यमान हो गए। जब यज्ञशाला में विद्यमान हो गए तो महर्षि वैशम्पायन को उस याग का ब्रह्मा नियुक्त कर दिया। कि प्रभु! आप विराजिए। मुनिवरो! देखो, नाना ऋषि उसके होता बन गए, मानो देखो, महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज उद्गान गाने लगे, महर्षि प्रवाहण मेरे पुत्रों! देखो, उद्गान गाने लगे, वह भी जब उद्गीत गाने लगे तो बेटा! याग प्रारम्भ होने लगा। तो ऋषि ने एक यंत्र मुनिवरो! देखो, चित्रावली भानु कृतिभा यंत्र मुनिवरो! देखो, उनके समक्ष नियुक्त कर दिया, अब जैसे यज्ञशाला में वो आहुति देने लगे, स्वाहा उच्चारण करने लगे, तो मुनिवरो! देखो, उस यंत्र में उनके चित्र दृष्टिपात आने लगे। और मुनिवरो! देखो, उनके शब्द यजमान के सहित मानो देखो, वो चित्र अन्तरिक्ष में जाते हुए उन्हें दृष्टिपात आने लगे। उन्होंने कहा–ऋषिवर! यह दृष्टिपात करो मानो देखो, तुम्हारा एक–एक शब्द द्यौ लोक को जाता हुआ यंत्र में दृष्टिपात हो रहा है।

मन्त्र में ब्रह्म की गाथा

तो मेरे प्यारे! देखो, वैज्ञानिक ऋषियों ने, अनुसंधान वेताओं ने याग के सम्बन्ध में और वाणी के सम्बन्ध में बहुत अनुसन्धान किया। परम्परागतों से बेटा! मानव अनुसंधान करता रहा है। अनुसंधान करने के पश्चात् मानो अन्त में मौन हो जाता है और हृदय रूपी गुफा में जा करके, हृदयरूपी जो यज्ञशाला है वहां ब्रह्माग्नि में हूत करके बेटा! वो ब्रह्म को प्राप्त होता रहा है। ये हे मुनिवरो! देखो आज का हमारा वाक्। आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है। कि हम परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान को सदैव जानते रहे उसके ज्ञान और विज्ञान में रत होते रहे। मेरे पुत्रो! देखो, एक–एक वेद मन्त्र में परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। मुनिवरो! देखो, जैसे माता का पुत्र, माता की गाथा गा रहा है इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र बेटा! ब्रह्म की गाथा गा रहा है। मुनिवरो! जैसे ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है।

बेटा! शेष चर्चाए मैं कल प्रकट करूंगा मानो देखो, ये पृथ्वी गुरुत्व को देने वाली मानो ये ब्रह्माण्ड की गाथा गाती है। माता का पुत्र, माता की परिक्रमा करता हुआ गाथा गा रहा है। और एक–एक वेद मन्त्र, ब्रह्म की गाथा गा रहा है उसकी परिक्रमा कर रहा है। ये हे बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रकट करूंगा।

आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है। वैशम्पायन इत्यादि ऋषि बेटा! ऋषि के यहाँ याग कर्म करके मानो उनका अतिथि हो गया। उनको आहार कराया मानो देखो, याग करा करके और उन्हें ब्रह्म का कुछ उपदेश देकर के वहां से उन्होंने गमन किया। पति पत्नी दोनों में मानो देखो, ऋषियों के चरणों की वन्दना की क्योंकि ऋषि यह नहीं विचारते है कि मैं बुद्धिमानों हूं, मैं वैज्ञानिक हूं, क्योंकि ऋषि तो मानो देखो, शान्तचित हृदयों का स्वागत करता रहता है। परम्परागतों से ही सिद्धांत रहा है क्योंकि ऋषि मुनि जो अनुसंधानवेता होते हैं उनके हृदयों में अभिमान नहीं होता। जहां अभिमान होता है वहां मृत्यु होती है, अन्धकार होता है जहां निरभिमानता होती है वहां ब्रह्म का वास होता है जहां ब्रह्मा का वास होता है वहां प्रकाश होता है। जहाँ प्रकाश होता है वहां मुनिवरो! देखो, आलस्य और प्रमाद नहीं होता। जहाँ आलस्य, प्रमाद नहीं होता वहाँ मृत्यु भी नहीं होती।

तो मेरे पुत्रो! देखो, आज का वाक् अब ये समाप्त होने जा रहा है। उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि ऋषि मुनियों ने ऋषि का स्वागत किया। शेष चर्चाएँ कल प्रकट करेंगे आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन।

ओ३म् मा रेवं आपा रथं दधिमाः वाचन्नमः
ओ३म् शंना गतं आभ्यां रूद्राः रथं आपोग्रताहम्
ओ३म् ब्रह्मणाः देवं मया सर्वं भद्राः **जवाहर नगर, दिल्ली**

याग स्वरूप पर ऋषियों का चिन्तन–––––––10–09–84

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, ये पाठ्यक्रम, परम्परागतों से विचित्रतम माना गया है क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्रों में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान किया जाता है और जितना भी ये ब्रह्माण्ड मानो जितना भी जगत, उस सर्वत्रता में वह ब्रह्ममयी स्वरूप माना गया है।

यज्ञोमयी स्वरूप परमात्मा

हमारे वैदिक साहित्य वालों ने, उस परमपिता परमात्मा को विज्ञानमयी स्वरूप माना है, जहाँ विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है वहाँ यज्ञोमयी स्वरूप का भी वर्णन आता रहता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। जितना भी यह संसार रूपी याग हो रहा है मानो वह परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन, अथवा उसकी प्रतिभा में एक याग होता हुए दृष्टिपात आ रहा है। उसी ब्रह्माण्ड में नाना प्रकार की वनस्पतियाँ हैं, वे नाना रूपों में एक याग कर रही हैं। मानों अपने से सुगन्धि देती रहती है और दुर्गन्धियों को अपने में सिंचन करती रहती है, अपने में धारण करती रहती है।

परन्तु ये उस महान, मेरे प्रभु का कितना यज्ञोमयी अथवा विज्ञानमयी स्वरूप का वर्णन होता रहता है। वे परमपिता परमात्मा सर्वत्र विज्ञान के मूल में हैं क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान के काल तक कोई वैज्ञानिक ऐसा नहीं हुआ जो परमपिता परमात्मा के विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं, वो सीमाओं में आने वाले नहीं हैं। वैज्ञानिक एक अणु, परमाणु का निर्माण नहीं कर सकते, उनको गति प्रदान नहीं कर सकता। इसी प्रकार वे परमपिता परमात्मा उस सर्वत्रता को धारण किए रहते हैं। वह उसका आयतन माना गया है। परन्तु जो जिसका आयतन माना गया है उसका विज्ञान कितना नितान्त, महानता में गति करता रहता है।

धर्म से जीवन

विष्णु

आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेदमन्त्रा, नाना के यागों का चयन करता है। जहाँ हम परमपिता परमात्मा को मूलक स्वीकार करते हैं मानो देखो, उसे पंचमहाभौतिकीकरण कहा जाता है। वही इस पंचमहाभौतिकता को अपने में धारण कर रहा है। अथवा यागों का चयन हो रहा है। जिस याग में मानव परिणत हो जाता है और उसमें रत हो जाता है तो यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है, मानो वे जो ब्रह्म, परमपिता परमात्मा विष्णु है जो पालनकर्ता के रूप में हमें दृष्टिपात होते रहते है मानो वह विष्णु सत् में ही रत् होने वाला है तो वह विष्णुवत् कहलाता है।

दार्शनिक स्वरूप

तो विचार विनिमय क्या मैं विशेष विवेचना में तुम्हें नहीं ले जाना चाहता हूँ। आज बेटा! तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि मुनि अपनी आभा में अथवा अपने आसनों पर विद्यमान हो करके और अपने में मुद्रित हो जाते। मानो अपने में संलग्नता से उस महान प्रभु का चिन्तन करते हुए और उसके यज्ञोमयी स्वरूप को अपने में धारण करना अथवा उसको जानना एक मानवीयता का, दार्शनिक माना गया है।

महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश जी की विवेचना

तो मेरे प्यारे! देखो, नाना ऋषिवर याग के प्रसंग में, अपने को ले जाते जैसा बेटा! इससे पूर्व काल में हमने तुम्हें यह वर्णन कराया कि महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश दोनों की विवेचना आती रहती है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे एक समय प्रकट कराया था कि आधुनिक जो जगत है, वर्तमान का जो काल है वह कागभुषुण्ड जी के सम्बन्ध में यह निर्णय देते हैं कि वे कागा पक्षी है मानो वे कागभुषुण्ड जी को ऋषि न कह करके ऐसा उद्घृत करते हैं कि एक समय में जब कागभुषुण्ड जी मानव की योनि में थे तो उन्होंने महर्षि लोमश मुनि का अपमान किया और उन्होंने उन्हें श्राप देकर कागभुषुण्ड की योनि में परिणत कर दिया। परन्तु वे उन्हीं के चरणों में रहे और उन्हीं की वन्दना करते रहे।

कागा प्रवृत्ति

ऐसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय वर्णन कराया। परन्तु प्रायः यह वाक् अशुद्ध है क्योंकि कागा, पक्षियों में सबसे महान चंचल होता है और उसको चंचल होने के नाम से उसे कागा के रूप में परिणत किया जाता है। उसकी वाणी में कठोरपन होता है। परन्तु प्रायः कागभुषुण्ड जी भी अपने में मानो ज्ञान का सदैव भण्डार और ज्ञान की प्रतिभा में रत रहते हैं। परन्तु ज्ञान में वे चंचल थे। और चंचल होने से माता उन्हें जब बाल्य काल में वे अध्ययन करते रहते थे तो माता कहती कि बाल्य तुम्हारी प्रवृत्ति तो ज्ञान के सम्बन्ध में कागा प्रवृत्ति कहलाती है। तो उसी समय माता ने जैसे कागो प्रवृत्ति वाला उच्चारण किया तो उनका नाम कागभुषुण्ड उद्घृत होने लगा। मानो देखो, उसको उच्चारण करने लगे। प्रायः माता का यह नामोकरणः वह एक व्यापिक रूप धारण कर गया।

महर्षि कागभुषुण्ड जी का मौन अनुष्ठान

मेरे प्यारे! देखो, एक समय काग भुषुण्ड जी ने मुनिवरो! देखो, ज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश किया तो उन्होंने एक समय बेटा! बारह वर्ष का अनुष्ठान किया और बारह वर्षों तक उन्होंने वेद का अध्ययन किया। दर्शनों के गर्भ में चले गए, मौन रहते थे। जब मौन रहते थे, तो एक समय भ्रमण करते हुए महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज और माता अरुन्धती ने ये विचारा कि कागभुषुण्ड जी अनुष्ठान कर रहे हैं। चलो उनके अनुष्ठान में मानो हम भी सम्मिलित होना चाहते हैं। तो माता अरुन्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज दोनों भ्रमण करते हुए वे कागभुषुण्ड जी के आश्रम में पहुँचे। तो कागभुषुण्ड जी अनुष्ठान में परिणत थे, मौन रहते थे।

परन्तु माता अरुन्धती और वह जब उनके समीप पहुँचे तो मुनिवरो! उन्होंने मानों देखो, उनका स्वागत किया। मौन होकर के, तो माता अरुन्धती ने कहा कि हे ऋषिवर! तुम मौन क्यों रहते हो? तो उन्होंने लेखनीबद्ध करके कहा कि मौन इसलिए रहता हूँ कि रात्रि अपने में मौन रहती है और मानव को शक्ति प्रदान करती है। मानो जब उन्होंने यह वाक्य कहा कि रात्रि मौन रहती है तो पुनः उन्होंने यह प्रश्न किया कि ऋषिवर! तुम मौन क्यों रहते हो? उन्होंने कहा कि मौन मानो एकोकी मौन रहता है लेखनीबद्ध करते रहे कि एकोकी जो होता है वह मौन रहता है जैसे मानव के, यदि मानव शरीर में रसना और तालु नहीं होंगे तो एकोकी रसना मानो मौन रहेगी और यदि रसना है, तालु भी है दोनों का समन्वय नहीं रहता तब भी मौन रहता है।

मौन का अभिप्राय

परन्तु मौन क्यों रहा जाता है? इन्होंने कहा कि मौन का यह अभिप्राय है कि प्रत्येक वस्तु मौन है। परमाणु अपने में गति कर रहा है परन्तु वास्तव में वह मौन रहता है। तो जब ऋषिवर ने यह वाक् उन्हें उत्तर देते हुए कहा तो माता अरुन्धती ने कहा कि सन्तुष्टि नहीं हुई, ऋषिवर! इन वाक्यों से संतुष्टि नहीं हुई है। क्योंकि प्रत्येक परमाणु अपने में गतिशील हो रहा है, वह अपनी भाषा में भाषित हो रहा है परन्तु वह गति करता हुआ भी गतिवान बनकर के अपनी भाषा में उद्घृत हो रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा कि इतना मौन मानो देखो परमाणुवाद मेरे मानवीयत्व में गति हो रही है वह भी अपनी भाषा में कुछ न कुछ उद्घृत कर रहा है। परन्तु मैं संसार के सम्बन्ध में मौन रहता हूँ। आत्मा के सम्बन्ध में, परमात्मा के मिलान में मौन नहीं रह सकता।

स्थूल रूप में मौन

मानो देखो, जब कागभुषुण्ड जी ने यह कहा तो उस समय माता अरुन्धती ने कहा कि हमें अब, कुछ संतुष्टि होनी प्रारम्भ हुई है। क्योंकि प्रत्येक परमाणु और देखो, वायु गति करने वाला भी मौन नहीं रहता है। परन्तु अपने में मौन रहना, केवल संसार के नाना प्रकार के देखो, वे स्थूल रूप में मानव को मौन रहना है। मेरे प्यारे जितना भी सूक्ष्मवाद है उसमें मानव मौन नहीं रहता है उसमें मानव की मौन गति नहीं रह सकती तो इसलिए बेटा! यह उनमें सिद्ध हो गया तो वे अनुष्ठान में सम्मिलित हो गए।

धर्म से जीवन

वेदों में याग

तो मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी बारह वर्षों तक, क्या पान करते थे उनके एक ब्रह्मचारी थे। उद्गेत्वक ऋषि महाराज, उद्गेत्वक् ब्रह्मचारी उनके यहाँ मानों उन्हें पांचाग्य अग्नि में तपा करके पान कराते थे। उनका जो आसन था, वह सर्पकेत्वीय एक औषध होती है, उसका आसन बनाकर के मानो उस पर वे विश्राम करते थे। उसी में रहते थे, बारह वर्षों तक उन्होंने अनुष्ठान किया। तो वह तप में परिणत होते रहे परन्तु याग के ऊपर अनुष्ठान कर रहे थे, अनुष्ठान याग के ऊपर क्यों कर रहे थे? क्योंकि संसार में जब उन्होंने वेद के अक्षरों को लिया, वेद के मन्तव्य को लेना प्रारम्भ किया तो वेदों में याग का बड़ा वर्णन आया। परन्तु कहीं वाजपेयी याग का वर्णन है तो कहीं अग्निष्टोम याग का वर्णन है, कहीं मानों देखो, शिव और नाना प्रकार के यागों का चयन वैदिक साहित्य में उन्हें प्राप्त हुआ। मानों देखो, राष्ट्रीय विचारों में भी उन्हें याग की ही प्रतिभा में यह मानवीयत्व प्राप्त हुआ।

तो मुनिवरो! देखो, जब याग का वर्णन आया, तो उसी के ऊपर अनुसंधान करने लगे। कहीं–कहीं तो वेद के साहित्य ने यह कहा है, वेद मन्त्र ने यह कहा है कि माता–पिता जो संतान उपार्जन करते हैं उनका नाम भी याग है। वो भी स्वाहा है, वह याग है, वह शिशु है वह वृणिता है मानो वह ही सुविता कहलाता है।

मोक्ष का मूलक

तो ऐसा मुनिवरो! देखो, वैदिक साहित्य में जब यह वर्णन किया तो कागभुषुण्ड जी का बारह वर्षों तक इसी प्रकार का अनुष्ठान चलता रहा, और बारह वर्षों तक केवल इसी विचार पर लेखनीबद्ध करते रहे कि यह याग क्या है और यह मोक्ष का एक मानो देखो, मूलक कैसे बन सकता है? परमात्मा का चिन्तन करते रहे तो मुनिवरो! देखो, इस विषय पर बारह वर्षों तक अनुष्ठान करते रहे। तो मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में सपफलता को प्राप्त हुए। महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज और माता अरुन्धती ने वहाँ से गमन किया कि यह तो आनुष्ठानिक है मानो वृक्षों का पांचाग्य पान करते थे। नाना प्रकार के कन्दमूल को पान करके अपने जीवन का निर्वाह कर रहे थे। ब्रह्मवर्चोसि से मिलन करने के लिए उत्सुक बने हुए थे।

वैदिकता के ह्रास के कारण

तो मेरे पुत्रो! इसलिए मैने अपने पुत्र महानन्द जी से किसी काल में यह वर्णन किया कि इस प्रकार की गाथाएँ मानो वर्णित रहती हैं यह केवल वैदिक साहित्य को अपने महान पूर्वजों को मेरे पुत्रों! देखो, दूषित करने के लिए होती हैं। इसमें दूषितपना आता है। साहित्य समाप्त हो जाता है। और वैदिकता का "ास हो जाता है जो मानो देखो, आनुष्ठानिक पुरुष हो देखो, लोमश मुनि महाराज और कागभुषुण्ड जी मानो देखो, एक ही गुरु के विद्यालय में अध्ययन करते थे। इसलिए दोनों का अध्ययन करने का माध्यम एक रहता था। एक ही विचारधारा में परिणत रहते थे तो मानो देखो, इसलिए मुनिवरो! देखो, यह चलन हो गया है कि यह काग प्रहे व्रताम् मानो प्रायः ऐसा नहीं है वो अपसरात का जो घटप है वह मानों सान्त्वना को प्राप्त हो जाता है।

तो परिणाम क्या मुनिवरो! देखो, महानन्द जी को मैने कई काल में ऐसा वर्णन कराया है कि हे पुत्र! ऐसा नहीं है मानो इस प्रकार इसे अब्रतो ब्रह्माः मेरे प्यारे देखो, मैं वहीं जाना चाहता हूँ जहाँ हमने कल अपने विषय को त्यागने के लिए तत्पर रहे। विचार विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश, सोमकेतु और विश्वश्रवा मेरे पुत्रों! देखो, सर्वत्र ऋषि मुनियों ने गमन करते हुए भारद्वाज आश्रम में भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, अपने आश्रमों में उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, वह अपनी स्थली पर आ गए। मानो देखो, विश्वश्रवा अपनी स्थली पर पहुँच गए और सोमकेतु मुनि महाराज उनके साथ–साथ चले गए। दोनों का विचार विनिमय होने लगा कि अब मुझे क्या करना है? मेरे प्यारे! देखो, सोमकेतु ने कहा चलो हम कुछ और परामर्श करेंगे। विचार विनिमय करेंगे कि हमें याग कर्म करने के लिए क्या, क्या क्रियाकलाप करना है।

परमात्मा की सृष्टि का निहारना

तो मेरे प्यारे! उनके विचारों में अनुष्ठान, वैदिक अनुष्ठान में परिणत हो गए वे दोनों और मुनिवरो! देखो, विश्वश्रवा ने बारह वर्षों तक वेद का अध्ययन किया और वेद का अध्ययन करते हुए मानो देखो, सूक्ष्म पान करते थे। सूक्ष्म आहार करते थे। मेरे प्यारे! चिन्तन विशेष करते थे। परमात्मा की सृष्टि को निहारते रहते थे। परन्तु निहारना ही हमारा कर्तव्य है। कोई भी मानव जो जिज्ञासु बनना चाहता है, परमात्मा के राष्ट्र में रमण करना चाहता है तो परमात्मा की सृष्टि को निहारना होगा। एक–एक परमाणुवाद को निहारना होगा। तो मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में रत हो गए।

द्यौ गामी वैदिक रथ का स्वरूप

तो विश्वश्रवा और सोमकेतु मुनि महाराज दोनों ने सम्मिलित होकर के अनुष्ठान किया और वह अनुष्ठान करते करते मेरे प्यारे! वह उस दशा में पहुँच गए कि अपनी कुछ प्रवृत्तियों को लघुमस्तिष्क में ले जाते अपनी प्रवृत्तियों को जब लघु मस्तिष्क में ले गए तो वे सूक्ष्मवाद में रमण कर गए। मानो देखो, जैसे गति परमाणुवाद की हो रही है। ऐसी उन्होंने अपनी सूक्ष्म, सम रहस्यों की उन्होंने मुनिवरो! देखो, सूक्ष्म रूप बनाया और सूक्ष्मतम रहस्यों में गमन करके वह मानों देखो, परमाणुओं के क्षेत्र में चले गए और परमाणुओं का जो क्षेत्र था जैसे मानो देखो, यजमान अपनी यज्ञशाला में स्वाहा उच्चारण करता है। वह स्वाहा का आकार बन करके, वह अन्तरिक्ष में मानों देखो, परमाणुवाद में गति करता है और परमाणुओं में ऊर्ज्वा प्रदान करता हुआ उन्हें मुनिवरो! देखो, वह समाधिष्ठ में, वह लघुमस्तिष्क में बेटा! यह सब चयन होता हुआ दृष्टिपात आने लगा। मेरे प्यारे! इसी सूक्ष्मतम रहस्यों में तो गमन कर गए। जब गमन कर गए तो मुनिवरो! देखो, सोमकेतु ने यह दृष्टिपात किया कि रथं ब्रह्मे वाचाः रथं भविते सम्भवः दिव्यं ब्रह्माः मानो देखो, वह रथ की कल्पना करने लगे कि यह रथ क्या है?

मेरे प्यारे! देखो, वैदिक रथ में विद्यमान होकर के मानव गमन करता है, ऐसा वेद का मन्त्र कहता है। होताजन उसमें रमण करते हैं, उसमें गमन करते हैं वह रथ मुनिवरो! देखो, क्या है वो जो वाणी का रथ बनता है, वाणी के रथ में विद्यमान होकर के, शब्द के रथ में विद्यमान हो करके मेरे पुत्रो! देखो, प्रवृत्तियों का जो रथ बनता है, शब्द, अग्नि के तरंगों पर विद्यमान होकर के वह मेरे प्यारे! देखो, प्राण सूत्र में सूत्रित हो जाता है। वह प्राण सूत्र में सूत्रित हो रहा है। प्रत्येक मानव का शरीर मानव की प्रवृत्ति मानों देखो, बाह्य जगत यह मानो देखो, प्राण सूत्र में सूत्रित होता हुआ प्रायः दृष्टिपात आता रहता है।

धर्म से जीवन

जैसा साकल्य वैसा क्रियाकलाप

तो मेरे प्यारे! देखो, आज मैं विशेष विवेचना में न जाता हुआ केवल यह उच्चारण कर रहा था। मेरे पुत्रो! दोनों ने अनुष्ठान किया और वे अनुष्ठान करते करते मेरे पुत्रो! देखो, बारह वर्ष समाप्त हो गए। बारह वर्ष के पश्चात् मेरे पुत्रो! देखो, वह बाह्य रचना में रत हो गए। तो मुनिवरो! देखो, उन्होंने भिन्न–भिन्न प्रकार के साकल्यों को एकत्रित किया। ऐसा मुझे स्मरण है बेटा! विश्वश्रवा ने, सोमकेतु ने दोनों ने बेटा! देखो, भयंकर वनों में जाकर के साकल्य एकत्रित करने लगे। मेरे प्यारे! देखो, समिधाओं को एकत्रित करने लगे उन्होंने नाना प्रकार की समिधाओं को एकत्रित किया और एकत्रित करके मेरे पुत्रो! देखो, उसमें याग का चयनं ब्रहे व्रतां देवाः ऐसा वेद का ऋषि, वेद का वाक् भी कहता है कि मानो जिस प्रकार का तुम क्रियाकलाप करना चाहते हो, जिस प्रकार को तुम अपने में लाना चाहते हो उसी प्रकार का तुम्हें साकल्य एकत्रित करना होगा।

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने मानों लगभग साकल्य एकत्रित कर लिया और एकत्रित करके मुनिवरो! देखो, उन्होंने एक यज्ञशाला का निर्माण किया जब यज्ञशाला का निर्माण किया तो बेटा! देखो जैसे वेद का मन्त्र, यज्ञशाला का प्रमाण देता है उसी प्रकार से यज्ञशाला का निर्माण किया। निर्माण करके मानो देखो, उन्होंने आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक यह तीन प्रकार के तापों का मानों उन्होंने एक प्रकार बनाया और सम्भूति ब्रह्मवाचो मुनिवरो! देखो, यज्ञशाला का निर्माण करते हुए मेरे पुत्रो! देखो, उसमें यज्ञशाला प्रतो अवसा अग्न्याधान करने से पूर्व उन्होंने सृष्टि का क्रम बनाया। सृष्टि का क्रम कैसा मानों मेखला में एक मेखला में जल का प्रोक्षण करना है। जल की प्रतिभा में रत रहना।

बाह्य जगत की अनुकूलता

मेरे प्यारे! जब याग प्रारम्भ हो गया। तो ऋषि मुनियों ने यह मानों देखो, एक सूचक प्राप्त हुआ कि महर्षि विश्वश्रवा और महर्षि सोमकेतु महाराज भयंकर वनों में याग कर रहे हैं। चलों उनके याग में मानों सम्मिलित होना है। तो मुनिवरो! देखो, महर्षि लोमश जी और महर्षि कागभुषण्ड जी दोनों ने अपने आश्रम से गमन किया और गमन करते हुए मेरे पुत्रो! वे यज्ञशाला में पहुँचे।

तो मुनिवरो! देखो, याग हो रहा है। अग्न्याधान, प्रातः काल में प्रारम्भ किया, जब प्रारम्भ किया तो मुनिवरो! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा हे ऋषिवर! हे विश्वश्रवा उद्यालक! तुम याग क्यों कर रहे हो? उन्होंने कहा कि प्रभु! हम याग इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हम बाह्य जगत को अपने अनुकूल बनाना चाहते हैं। बाह्यजगत जब हमारा अनुकूल हो जाता है तो आन्तरिक जगत भी अनुकूल हो जाता है। और दोनों की अनुकूलता होने पर ही हमारा व्यापिकवाद बनता है। यदि बाह्य जगत हमारा संकीर्ण रहता है, आन्तरिक जगत में व्यापिकवाद नहीं रह पाता है परन्तु दोनों को व्यापिक बनाना चाहते हैं। क्योंकि व्यापिकवाद में धर्म रहता है। व्यापिकवाद में याग रहता है, और व्यापिकता में ही मानव में दर्शन निहित रहता है।

अग्नि स्वरूप साकल्य

तो मेरे पुत्रो! जब ऋषि ने यह वाक् कहा कि मानों दर्शन इतना ऊर्ध्वा में है तो मुनिवरो! देखो, कागभुषुण्ड जी ने पुनः प्रश्न किया कि महाराज! तुम ये साकल्य क्यों अग्नि में हूत कर रहे हो? उन्होंने कहा कि हे भगवन! जितना साकल्य है वो सब अग्नि स्वरूप माना गया है मानों अपने में अपनेपन को ही प्राप्त हो रहा है इसमें हमारा कोई दोषारोपण नहीं है। कागभुषुण्ड जी मौन हो गए। विचारने लगे कि वाक् तो बड़ा ही विचित्र है। मानो देखो, ये जितना भी साकल्य है, यह सब अग्नि स्वरूप है। क्या, ऋषिवर! तुम इसको अग्निस्वरूप कैसे स्वीकार करते हो? उन्होंने कहा कि प्रभु! इसलिए क्योंकि यह अग्नि के तत्वों का मानो एक नृत है और मानो यह जल से सुगठित हो रहा है, जिसे हम आपो कहते हैं और मानो देखो, उस आपो में भी अग्निस्वरूप विद्यमान है परन्तु देखो, वह उससे सुगठित है और देखो, ये जो पृथ्वी के परमाणु हैं जो मानों इनको स्थूल रूप में दर्शा रहे हैं यह पृथ्वी के परमाणु भी अग्निस्वरूप माने गए हैं यदि अग्नि नहीं होगी तो उसके परमाणुओं में गति नहीं आ सकती है। मानों उसमें स्थूल रूप भी नहीं आएगा। इसलिए मानों देखो, यह सम्मिलित होकर के, सुगठित होकर के एक सूत्र में पिरोए होने के नाते प्राणस्वरूप बन करके और यह अग्नि प्राणस्वरूप है। परन्तु यह जितना साकल्य सब प्राण शक्ति को उद्घृत करने वाला है। इसलिए अपने में अपने को प्राप्त हो रहा है।

देवताओं की हवि

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि चकित हो गया। ऋषि ने कहा कि हे प्रभु! वाक् तो यथार्थ है परन्तु देखो, हम यह और जानना चाहते हैं कि तुम अग्न्याधान किससे कर रहे हो? उन्होंने कहा कि अग्न्याधान मानो देखो, समिधा से कर रहे हैं, समिधा भी अग्निस्वरूप माना गयी है। यदि मानो देखो, सूर्य की किरणें अग्नि बन करके मानो देखो, विद्युत बनकर के यदि इनको नहीं तपा सकती तो समिधा नहीं बन पाएगी। मानो देखो, वह अपने में समिधा नहीं कहलाती। इसलिए देखो, सूर्य तपा रहा है, चन्द्रमा रस दे रहा है, अग्नि उसमें प्रवेश कर रही है। मानो देखो, जब पृथ्वी के परमाणुओं में पफल, पफूल इत्यादि आ जाते हैं वह मानो देखो, अग्नि स्वरूप बन करके देखो, देवताओं की हवि बन रही है।

आत्मा का आसन

मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार, यज्ञ के स्वरूप का वर्णन किया तो मुनिवरो! देखो, कागभुषुण्ड जी और लोमश मुनि दोनों मौन हो गए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा–लोमश जी बोले कि हे प्रभु! यह जो तुम मानो याग में विद्यमान हो, तुम्हारा आसन क्या है? याग में आसन भी तो होना चाहिए? उन्होंने कहा–प्रभु! मेरा जो आसन है मानो वह मेरा आसन, मेरी माँ पृथ्वी है। मेरी प्यारी आसनो ब्रह्मवाचाः इसे आसन नहीं कहना चाहिए। यह मेरी माता वसुन्धरा है। ये पृथ्वी है, पृथ्वी मुझे अपनी गोद में धारण कर रही है और मानो उसी के आँगन में मैं आनन्दित होकर के और अग्नि को प्रदीप्त करने के लिए तत्पर हो रहा हूँ। उन्होंने कहा आसन का प्रश्न है हमारा, पृथ्वी का तो प्रश्न नहीं है। उन्होंने कहा पृथ्वी ही तो आसन माना गया है। जब मानो देखो, मानव व्यापिकवाद में परिणत होता है जब आत्मा का आत्मा से मिलान होता है, अथवा आत्मा अपने को यज्ञमयी स्वरूप स्वीकार कर लेती है। मानो देखो, यह जो प्रकृति है। प्रकृति का एक शब्द पृथ्वी भी मानी गई है मानो देखो, वही तो आत्मा का आसन है। और आनन्द के लिए मानो देखो, आनन्द रूपी परमात्मा को, चैतन्य देव को चेतना का ओढ़न बनाकर के मानो वह मोक्ष में रत् रहना चाहता है।

आत्म कल्याण के लिए याग

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार जब ऋषि को मानो देखो, प्रत्येक आभा में उसे उद्घृत कर दिया तो वह मौन हो गए। उन्होंने कहा – कि प्रभु! वाक् तो तुम्हारा यथार्थ है मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने, याग पुनः प्रारम्भ कर दिया। वे मुनिवरो! देखो, सोमकेतु मुनि के द्वार पर पहुँचे। सोमकेतु मुनि से कहा

कि प्रभु! हमें याग की प्रतिक्रियाओं का वर्णन कराइए? कि प्रभु! यह कौन–सा याग कर रहे हैं आप? उन्होंने कहा–हम मानो एक याग कर रहे हैं। इनमें कौन–सा प्रश्न उत्पन्न नहीं होता। याग तो याग होता है। याग में कौन–सा का शब्द नहीं होता? उन्होंने कहा–प्रभु! कौन–सा तो नहीं होता, परन्तु जैसे भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का चयन वैदिक साहित्य वर्णन कराता है, उन्होंने कहा–वैदिक साहित्य मानों उनके लिए वर्णन करता है जो राष्ट्रीय यागों में परिणत रहते हैं। मानो देखो, यहाँ तो आत्मा को आत्मा में, आत्मा का हूत परमात्मा में प्रदान कर रहे हैं। जैसे मानों देखो अग्न्याधान होकर के अग्नि के स्वरूप में मानों देखो, अग्नि को ही दृष्टिपात करते हैं। इसी प्रकार चेतना में चेतना को दृष्टिपात कर रहे हैं। तो यह आत्म कल्याण के लिए याग हो रहा है। मानो देखो, हम कौन–सी वृत्तियों में याग परिणत नहीं कर रहे हैं।

मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी ने कहा कि हे भगवन! महर्षि लोमश मुनि को आप इस प्रकार मानो देखो, शब्दों में मौन न कीजिए, नाना प्रकार के याग होते हैं उनका वर्णन कीजिए। मानो देखो, एक अश्वमेघ याग होता है एक अजामेघ याग होता है एक मानो देखो, वाजपेयी याग होता है एक मानो विष्णु याग होता है। एक मानो गोमेघयाग होता है एक अश्वाकृतियों में याग होते हैं ये भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन वैदिक साहित्य ने किया है। आप उनका वर्णन क्यों नहीं करा रहे हैं?

विष्णु याग

मेरे प्यारे! देखो, सोमकेतु ने कहा ऋषिवर! तुमने प्रश्न किया है मानो बोलो कौन से याग का वर्णन चाहते थे? उन्होंने कहा–सबसे प्रथम तो हम यह चाहते हैं तुम कौन–सा याग कर रहे हो? उन्होंने कहा–कि हम अपने में मानों सामूहिक याग कर रहे हैं समूह और धर्म, जो एक एक मानव को मानो सुगठित कराता है वो याग कर रहे हैं। उन्होंने कहा–प्रियतम, मानों अब हम विष्णुयाग जानना चाहते हैं? विष्णुयाग किसे कहते हैं? उन्होंने कहा–विष्णुयाग उसे कहते हैं मानो जो परमपिता परमात्मा के आश्रित होकर के और राष्ट्र को ऊँचा बनाने के लिए, प्रजा को सुखद देने के लिए, याग करता है वह मानो देखो, विष्णुयाग कहलाता है।

गोमेघ याग

उन्होंने कहा–गोमेघयाग कौन सा है? उन्होंने कहा–गोमेघयाग मानो देखो, विद्या को कहते हैं, जो विद्या अध्ययन कराता है, आचार्यजनों के चरणों में विद्यमान होकर के ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन कर रहा है। मानो देखो, वह गो को प्रकाश में पहुँचा रहे हैं। गो को मानों जो प्रकाश में ले जाता है वो आचार्य गोमेघयाग करा रहा है, वह गोमेघयाग की प्रतिभा में ले जा रहा है। सुगन्धि दे रहा है। परन्तु देखो, आचार्य इतना सुसज्जित होना चाहिए, आचार्य इतना चरित्र में महान होना चाहिए। जिससे उसके चरित्र की सुगन्धि उसके विचारों की सुगन्धि आचार्य को मानो देखो, ब्रह्मचारियों को प्रभावित कर सके उसकी अन्तरात्मा में मानों उसकी प्रतिभा का स्रोत उसमें प्रवेश हो जाए ऐसा आचार्य मानों देखो, गोमेघयाग करता है।

अजामेघ याग

मेरे पुत्रो! जब सोमकेतु ने ऐसा कहा तो उस समय महर्षि कागभुषुण्ड जी ने कहा प्रभु! चलो, गोमेघयाग तो यह हुआ, परन्तु अजामेघ याग किसे कहते हैं? उन्होंने कहा अजामेघ याग देखो, अजा पृथ्वी को कहते हैं। अजा नाम वैज्ञानिकों को भी कहते हैं जो मानो देखो, अजा, पृथ्वी के ऊपर अन्वेषण कर रहा है, विचार कर रहा है। इसके गर्भ में प्रवेश कर रहा है। वो अजामेघ याग है जो इसमें अजा होना चाहता है। परन्तु अजा के भिन्न–भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गए हैं। जैसे मानो देखो, अजा कहते हैं जो विद्या का अध्ययन करता हुआ किसी से विजय न हो, वह बुद्धिमान मानो देखो, अजामेघ याग कर रहा है। तार्किक सिद्धांत के द्वारा, तार्किक स्रोतों के द्वारा वह याग करता है मानों वह किसी से अजा नहीं हो रहा है।

इसी के स्वरूप में जब राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता है। राजा अपने राष्ट्र में मानो देखो, प्रजा को अस्सुते राजा मानो देखो, अपने विचारों का याग करता है। वह किसी राजा से मानो आक्रमण करने के पश्चात् भी, दूसरा राष्ट्र मानो आक्रमण करता है तो वह अजय रहता है। उसको कोई विजय नहीं कर सकता। मानो देखो, विजय कौन होता है जो हीन प्राणी होता है वो विजय होता रहता है। जो मानो अपने स्वार्थ परता में, अपनी लोलुपता में लगा रहता है वो सदैव मानो देखो, अजा वह देखो, विजयी होता रहता है और जो निःस्वार्थ रहता है। जो निःस्वार्थ मानो प्रजा के मनोबल को ऊँचा बनाता है, प्रजा के महान रूपों को ऊँचा बनाने में लगा हुआ है, अपने में त्याग और तपस्या में परिणत रहता है, परमात्मा का चिन्तन करके विश्वसनीय रहता है याग कर्मों में परिणत रहता है। जानो, मुनिवरो! देखो, वह अजामेघ याग कर रहा है और संसार में उसे कोई विजय नहीं कर सकता है।

तो मेरे प्यारे! जैसे मानो जितेन्द्रीय होता है और वह जितेन्द्रीय बन करके जैसे मेरे पुत्रो! जितेन्द्रीय होती है परन्तु देखो, जब वह गृह में प्रवेश करती है तो अजामेघ याग करती है। अपने पति के द्वार पर विद्यमान होकर के अजामेघ याग करती है और वह कहती है कि मैं ऐसी संतान को जन्म देना चाहती हूँ जिससे वो किसी से विजय न हो सके। वह अजय नामक याग करके प्रभु का चिन्तन करके ऐसी सन्तान को जन्म देती है जो जितेन्द्रीय बन कर त्याग और तपस्या में परिणत होकर के वह मेरे प्यारे! पुत्र किसी के लिए मानो किसी से अजयता को, अमृतम सदैव अजय रहता है। वह मुनिवरो! देखो ह्रासता को प्राप्त नहीं होता। तो विचार विनिमय क्या वेद के ऋषि ने जब इस प्रकार उद्धृत उदाहरण देने प्रारम्भ किए तो बेटा! ऋषिवर स्वीकार करते रहे।

अग्निष्टोम

तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि महाराज! यह हमने स्वीकार कर लिया। परन्तु अग्निष्टोम याग किसे कहते हैं। उन्होंने कहा अग्निष्टोम याग मेरे प्यारे! उसे कहते हैं जो वृष्टियाग करना जानता है। वृष्टियाग करना ही मानो देखो, अग्निष्टोम याग की एक शाखा कहलाई जाती है। जब वो मानो देखो, वृष्टियाग करता है। वृष्टियाग करने वाला जो पुरुष होता है वह तपस्या करता है, अनुष्ठान करता है। वेद के मन्त्रों को चुनौती प्रदान करता है। परमपिता परमात्मा की अनुपम विद्या का अध्ययन करता है और अध्ययन करता हुआ वह त्याग में परिणत होता है और त्याग में परिणत होकर के मानो देखो, वह गान रूपों में, गान गाता है। वाजपेयी, बुद्धिमान वाजपेयी गान गा रहा है। वाजपेयी गान को कहते हैं जब वह गान गाता रहता है तो उसके मस्तिष्क में ललाहट आ जाती है मानो देखो, उसमें अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। वाणी एक अग्नि का स्वरूप बन जाता है। मानों देखो, हमारे ऋषि मुनियों ने 85–85 वर्षों तक इसका अभ्यास किया और मानो देखो ललाहट मस्तिष्क में देखो, इसको लाने का प्रयास किया और जैसे अग्नि का प्रकाश हुआ मानो देखो, उसी स्वरूप में वह अग्नि प्रदीप्त हो जाती है मस्तिष्क में। परन्तु जब मानों देखो, वह गान रूपों में गान गाने लगता है तो मानो देखो, मेघों में उसके गानों की प्रतिभा अन्तरिक्ष में चली जाती है और अन्तरिक्ष में प्रवेश करके मानो देखो, जब वह यहाँ याग करता है, उन्हीं साकल्यों को, उन्हीं औषधियों को एकत्रित करके जब वह याग करता है, अग्नि के द्वारा तो, अग्नि, देवताओं का मुख बनकर के उन्हीं तरंगों को परिणत करा देती है जिसमें मानो देखो, जल तत्व प्रधान होते हैं।

मेघों में परिणत होकर के वह विद्युत के द्वारा, वह मेघों की उत्पत्ति होकर के समुद्रों से समन्वय होकर के, चन्द्रमा की कांति से समन्वय होकर के मेरे प्यारे! देखो, समय—समय पर वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है।

वाजपेयी याग

परिणाम क्या, मानो यहाँ मुनिवरो! देखो, वाजपेयी याग का वर्णन है। बलं ब्रह्मः वाचो देवाः वेद का ऋषि कहता है, गम्भीर अध्ययन करता हुआ उस समय देखो, यहाँ गऊँ के मानों देखो, बछड़े की बलि का यहाँ वर्णन आता है। गऊँ के बछड़े की बलि का वाजपेयी याग में वर्णन आता रहता है। मेरे पुत्रो! देखो, वह बलि अमृतं ब्रह्माः मानव को अर्पित करने को बलि कहते हैं, अपने परिश्रम का नामोकरण बलि कहा जाता है। बलि का अभिप्राय यह है कि जो मानो देखो, अपने को न्यौछावर कर देता है। इसलिए गऊ बछड़ा तन्मय होकर के कृषि के गर्भ को मानो, देखो, चमड़ी को उधेड़ करके और उसके गर्भ में बीज की स्थापना करके, नाना प्रकार के अन्नाद को उत्पन्न कर देता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार हमारे यहाँ वाजपेयी यागों का वर्णन आता रहा है। तो विचार विनिमय क्या, आज मैं देखो, इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ केवल क्या मुनिवरो! देखो, कागभुषुण्ड जी को और देखो, सोमकेतु मुनि महाराज की यह चर्चाएँ हो रही थीं, चर्चाएँ होते ही उन्होंने कहा—धन्य है, प्रभु! हमने आपको कुछ मानों देखो, परीक्षा के रूप में नहीं केवल जानकारी के रूप में यह याग कर रहे हैं? मेरे प्यारे! देखो, वह जो राजा ब्रह्मे अप्रतं देवाः प्रभु अस्सुताहम् जो यजमान बना हुआ था विश्वश्रवा उसके समीप पुनः पहुँचे और उन्होंने कहा यज्ञो भवाः तं ब्रह्मा। हे भगवन! तुम जो यह याग कर रहे हो और इसमें मानो देखो तुमने जो जल का प्रोक्षण किया हैं इसका याग से क्या सम्बन्ध है?

उन्होंने कहा याग किसे कहते हैं? याग कहते हैं जो पंचमहाभौतिक तत्वों का एक मिलन कराता है उसका नाम याग कहा जाता है। जैसे मानो देखो, याग में यज्ञं भविते देवाहं हिरण्यं रथाः जैसे आपं ब्रह्मवाचो देवाः मानो देखो, यह याग कहलाता है। तुम्हें यह प्रतीत है कि परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि का प्रारम्भ किया था तो सृष्टि के प्रारम्भ में मानो देखो, माता के गर्भाशय का निर्माण किया। जब माता के गर्भाशय का निर्माण किया तो उसमें एकमेखला का निर्माण किया। मानो मेखला में जल रहता है और जब मानो देखो, शिशु का प्रवेश होता है............**शेष अनुप्लब्ध कैथवाड़ी, जिला मेरठ**

राष्ट्रीयता———————18—04—84

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन—पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस पवित्र वेद—वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद—वाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं क्योंकि यज्ञ ही उसका आयतन माना गया है, मानो वो ब्रह्मा, जो सु कहलाता है मानो वो सर्वत्रता में ओत—प्रोत है। उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाते हुए हमारे मनो में एक ही इच्छा रहती है कि हम अपनेपन को ऊँचा बनाए।

स्वाभाविक गुण

प्रत्येक मानव परम्परागतों से ये उड़ान उड़ता रहा है कि हम अपने जीवन को महान और पवित्र बनाना चाहते है और हम उसी काल में पवित्र बन सकते हैं हमारा जीवन महान और पवित्र तभी बन सकता है जब हम परमपिता परमात्मा की प्रतिभा अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान में हम रत रहने लगे और उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप हम स्वीकार करें। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, ऊँची—ऊँचीं, विचारों की उड़ाने उड़ता रहा है। ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ना ये मानव का स्वाभाविक गुण माना गया हैं क्योंकि मानव मनस्तव में गतियाँ करता रहता है। संन्निधन मात्र से ही, ये अपने स्वभाव की प्रतिभा उद्घोष करता रहता है।

सतोगुण में पालना

तो इसीलिए हमें उस वेद मन्त्र के ऊपर विचार विनिमय करना चाहिए। यज्ञोमयी विष्णु, वेद की आख्यिका एक ही शब्द कहती है कि यज्ञ विष्णु है। हमारे वैदिक साहित्य में, याग के बड़े व्यापिक स्वरूपों का वर्णन होता रहा है। मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे प्रेरणा दे रहे हैं कि याग के सम्बन्ध में अपना कोई मन्तव्य दीजिए। परन्तु यागां ब्रह्म वाचो देवा प्रत्येक मानव एक यज्ञोमयी स्वरूप, शाला में विद्यमान रहता है और विष्णु की उपासना करता हुआ यज्ञोमयी विष्णुः क्योंकि विष्णु उसे कहते है जो पालन करने वाला है। वह मानो सतो में रहने वाला है। जो सत्य है, वही पालन करता है। मानो सतोगुण में ही पालन होता है।

मेरी प्यारी माता जब बाल्य का पालन करती है तो मानो वो पालनं बृहि वृत्ताम् सतोमय करती है जब तक उसके समीप सतोगुण नहीं आता, सत् में अपने को नहीं ले जाती, तब तक वह पालन नहीं करती, नम्रता आ जाती है, उदारता आ जाती है उस उदार और सत में ही रत रहने से मुनिवरो! देखो, पालन की प्रवृत्तियाँ आती है और वही विष्णु कहलाता है। इसीलिए जो संसार में सुगन्धि देता है अथवा तेजोमयी देता है, वही तो पालन कर रहा है इसीलिए यज्ञोमयी विष्णु भी हमारा पालन कर रहा है। वे पालन की प्रवृत्तियाँ आ रही है मानो देखो, हम यागो में ब्रह्मवाचोः दिव्यां गतं ब्रह्म वाचाः हे विष्णु! तू हमारा पालन कर रहा है, रक्षक है और यज्ञोमयी विष्णु है। वह जो यज्ञोमयी स्वरूप, वही मानव को बनना है। उसकी आभा में ही रत रहना, ये मानवीयता की एक विचित्रता कहलाती है। जिसके ऊपर मानव अपने को न्यौछावर करता रहता है आज मानो देखो, हमारे यहाँ परम्परागतों से ही बेटा! भिन्न—भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा। हमारे यहाँ अग्निष्टोम् यागों का वर्णन होता रहा, वाजपेयी यागों का वर्णन है और मानो अजामेघ, गोमेघ नाना प्रकार के यागों का जैसे विष्णुयाग, ब्रह्मयाग, शिवयाग भिन्न—भिन्न प्रकार के देवी याग का भी वर्णन आता है। कन्या यागों का वर्णन भी वैदिक साहित्य में आता है।

विष्णु याग

परन्तु एक—एक वेद मन्त्र में यागों के बड़े विचित्र, उसकी विधि विधन क्रियाओं में अपने में रत रहने वाला एक याग है। जिसको हमारे यहाँ विष्णु कहते है मानो जिसके ऊपर मानव ऊँची उड़ाने उड़ता रहता है चित्रों का दिग्दर्शन करता रहता है। तो मुनिवरो! देखो, विज्ञान के युग में भी वही मानव प्रवेश करता है जो मुनिवरो! देखो, यज्ञोमयी विष्णु को जान लेता है। वही मानो देखो, विज्ञान की पराकाष्टा में रत हो जाता है जो यज्ञोमयी विष्णु के समीप जाकर के अपनी प्रतिभा का निर्णय, प्रतिभा में प्रतिभाषित हो जाता है।

धर्म से जीवन

तो विचार विनिमय क्या, हमें मुनिवरो! देखो, यागां भविते देवाः मेरे प्यारे महानन्द जी, अपने में मानो ये कल्पना कर रहे है कि मैं भी दो शब्दों की विवेचना का सकूं। परन्तु देखो, इस सम्बन्ध में मैंने बहुत पुरातन काल में यह कहा है कि मेरे प्यारे महानन्द जी के हृदय में एक दाह रहती है एक अग्नि की प्रतिभा रहती है। जिससे वो अपने उद्‌गार, उद्‌घोष मानो अपने उघृत करते रहते है और इनके विचारों में मानो एक दाह, एक वेदना रहती है। उस वेदना के साथ मानो देखो, मैंने भी पुरातन कालों में वेद वेदना के सम्बन्ध में, प्रत्येक मानव के हृदय में, एक वेदना का उद्‌घोष होता रहता है। उस वेदना के साथ मानव क्या अपने में बनना चाहता है इसके ऊपर मानो अपना निर्णय स्वतः देता है। तो विचार विनिमय क्या मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो विचार व्यक्त कर सकेंगे।

पूज्य महानन्द जी

ओ३म् यमा रथं ब्रह्मणश्चमाः रेवाः यज्ञनौ वर्णं ब्रह्माः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल, अभी–अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अमृतमयी वृष्टि कर रहे थे। वे याग के सम्बन्ध में अपनी विचारधारा व्यक्त कर रहे थे, और यज्ञोमयी विष्णु की विवेचना में लगे हुए थे। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा जैसे पालन करने वाला, अभी अभी में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रकट कर रहे थे परन्तु जहाँ ये हमारी आकाशवाणी जा रही है मानो देखो, उस स्थली पर, एक याग हुआ और मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ उच्चारण करने के लिए आया हूँ मानो देखो, याग हुआ।

द्रव्य का सदुपयोग

आज मैं, अपने जो आन्तरिक विचार है मैं अपने यजमान को कुछ अपनी शुभ कामना प्रकट करने आया हूँ मानो देखो, मेरे अन्तर्हृदय की यह वेदना रहती है कि हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। क्योंकि यागां ब्रह्मवाचोः जिस गृह में, द्रव्य का सदुपयोग होता है और यागों में उसका चलन होता है, तो वह गृह सौभाग्यशाली होते हैं। मानो यजमान का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। ये सदैव हमारी कामना रहती है उसके जीवन की प्रतिभा महानता में परिणत होती रहे। आज जो ये युग चल रहा है, यह जो काल का परिवर्तन हो रहा है मानो इसके ऊपर जब मैं अपने विचारों को ले जाता हूँ तो मेरा अन्तरात्मा यह कहता रहता है कि यह संसार अग्नि की वेदी पर विद्यमान हो गया है मानो अग्नि की वेदी, अग्नि की प्रतिभा का जन्म हो गया है। प्रत्येक मानव अपने–अपने विचारों में मानो देखो, अपने को एक संप्रदा के, रूढ़िवाद के आँगन में लेता चला जा रहा है। मानो देखो, राष्ट्रवाद, वह जो ईश्वरीय धर्मो की विवेचना कर रहा है उस धर्म में राजा, अपनी प्रजा की रक्षा नहीं कर सका है। प्रजा राजा की रक्षा नहीं कर रही है अपनी ही रक्षा नही कर रहा है।

द्रव्य की लोलुपता का प्रभाव

जब मैं इस संसार में भ्रमण करता हूँ, जब मैं इस संसार के बुद्धिजीवी प्राणियों के समीप पहुँता हूँ तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह बुद्धिजीवी ही नहीं हैं। मानो देखो, वह किसी भी सत्यवाक् को उच्चारण करने में असमर्थ रहते है जब सत्यवाक् उच्चारण करने में असमर्थ है तो उनका बुद्धिजीवी होना ही क्या? मानो बुद्धिजीवी वह प्राणी बन गए है जो रूढ़िवाद में ले गए, रूढ़ि ज्यों की त्यों बनी हुई है। मानव के मस्तिष्क में विकास करना चाहता है, उद्‌घोष करना चाहता है, परन्तु रूढ़ियों में ही इतना संकीर्ण बन गया है कि अपने सत्य का उच्चारण करने में असमर्थ है, वे क्यों है? वो केवल पद की लोलुकता का मूल कारण है। एक द्रव्य की लोलुकता का एक मूल कारण है।

आज मानो देखो, पुरातनकाल में, देवर्षि नारद मुनि के काल में, द्रव्य की लोलुकता नहीं थी। परन्तु देखो, वह केवल लोक की इच्छा थी, लोकेषणा में मानव परिणत हो रहा था। आधुनिक काल का जो जगत् है, बुद्धिजीवी है वो मानो देखो, द्रव्य में भी और लोकेषणा में भी ऊँचा बनना चाहता है। लोकेषण में उसकी प्रतिष्ठा रहे ना रहे परन्तु देखो, द्रव्य की लोलुकता रहनी चाहिए। इस द्रव्य की लोलुकता में मानव अपने हित और अहित को नहीं विचार रहा है। ऐसा ये भव्यकाल है, इस वक्त, इस समय ऐसा काल है। इस समय की अवहेलना मैं नहीं कर सकता, न कोई प्राणी कर सकता है। तो राजा सत्य नहीं उच्चारण नही कर सकता, वह सत्यवादी अपने गृह में नहीं बन रहा है।

पद की लोलुपता का प्रभाव

पुरातनकाल के राजा, जब द्वितीय राष्ट्रों में प्रवेश करते थे, तो वहाँ वे अपने को सत्य के गर्भ में मिथ्या उच्चारण करते रहते थे जिससे राष्ट्र की रक्षा, आज का जो राष्ट्रवाद है वह मानो देखो, सत्यता में, मानो देखो, मैं तो सत्य के गर्भ की चर्चा कर रहा हूँ, मैं मिथ्या के गर्भ की चर्चा कर रहा हूँ, उसके समीप केवल एक पद की लोलुपता लगी हुई है। वह जो पद की लोलुपता है वह प्राणी–प्राणी का संहार कर रही है। वह पद की लोलुपता, मानव–मानव का भक्षण कर रही है। वह अग्नि की अग्नि में मानो देखो, परिणत हो रहा है।

जब मैं वैज्ञानिकों के समीप प्रवेश करता हूँ, तो वैज्ञानिको के यहाँ द्रव्य का, विज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है। पुरातन काल का विज्ञान, राजा रावण के काल का विज्ञान जब मैं पूज्यपाद गुरुदेव से चर्चा करता हूँ, वास्तव में विनाश का मूल वह भी बना, द्वापर के काल का विज्ञान, भी मानो देखो, उसका मूल भी विनाश बना। देखो, क्योंकि जिस काल में ये राजाओं की बुद्धि की अग्रता नहीं है मानो देखो, जब वैज्ञानिक–जन स्वार्थपरता में आ करके और वैज्ञानिको के यहाँ जब राजा स्वार्थपरता में आ जाता है तो विज्ञान का दुरूपयोग हो जाता है और विज्ञान के दुरूपयोग होने पर मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत पुरातन काल हुआ, जब उन्होने विज्ञान की चर्चाएँ की थी, परन्तु देखो, उन्होने महर्षि भारद्वाज मुनि की चर्चाएँ की और विज्ञान के दुरूपयोग होने से उन्होने भिन्न–भिन्न प्रकार की वाताएँ प्रकट की।

विज्ञान का दुरुपयोग

परन्तु देखो, आधुनिक जगत, वह भी विज्ञान का दुरूपयोग का रहा है। विज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है जहाँ मानो देखो, मेरी पुत्रियों के मानो नृत्य होते है, वहाँ ऋषि मुनियों का चरित्र आना चाहिए। जब ऋषि मुनियों का चरित्र नहीं आता, मेरी पुत्रियों के नृत्य आते है। मेरी पुत्रियाँ मानो देखो, अपने को हीनता में दृष्टिपात करके प्रसन्न हो रही है। देखो, मानव पुत्रियों के चित्रों का हनन करता हुआ अपने में दृष्टिपात कर रहा है, परन्तु प्रसन्न हो रहा है। राजा को ये मानो देखो, विज्ञान की प्रतिभा ये दोनों ही मानो अवहेलनाकृत हो गई है जब विचार आता है कि इसका बनेगा क्या, इसका परिणाम होगा क्या?

धर्म से जीवन

अग्नि काण्ड

तो मानो मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से बहुत पुरातनकाल में इस प्रकार के संसार के लक्षणों की जब चर्चाएँ की तो पूज्यपाद गुरुदेव ने केवल अग्निकांड की चर्चाएँ की मैं भी आज मानो देखो अग्निकांड की चर्चाएँ कर रहा हूँ और विचार आता है कि अग्नि प्रदीप्त होने वाली है। वह समय मानो देखो, निकट आ रहा है जब प्राणी–प्राणी का भक्षण करके, जहाँ अंधकार की प्रतिभा छा जाएगी। मानो देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना, भविष्य वक्ता मैं नहीं हूँ केवल भविष्यवाणी भी मानो देखो, मैं उच्चारण करने नही आया हूँ क्योंकि भविष्यवक्ता तो प्रभु ही कहलाता है। वही जानता है कि इस संसार का क्या बनेगा।

परन्तु देखो, मानव तो अपनी क्रीड़ा करता रहता है। विचारों की एक कृति में कई कृतियों का रमण करता है। याग जैसे कर्म को जब आधुनिक काल का मानव एक पाखण्ड की दृष्टि में जब उच्चारण कर रहा है, दृष्टि से पान कर रहा है। मानो देखो, जब इस प्रकार का विचार बन जाता है तो मानो देवताओं के भोजन को भी मानव पाखण्ड कह रहा है और देखो, एक नृतिका को दृष्टिपात करने वाला मानव, उसे पाखण्ड नहीं कहता। कैसा यह विचित्र जगत है। देखो, यह कैसा समय।

महाराजा अश्वपति का वृष्टि याग

मुझे स्मरण है राम के काल में याग की निंदा करने वाले को मानो देखो, उसकी वाणी को शांत कर दिया जाता था। मुनिवरो! देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक समय मुझे महाराज अश्वपति के यहाँ एक वृष्टियाग में ले गए थे। राजा की प्रजा मानो याग के लिए ऐसे ललाहित हो रही थी, कि हम देवताओं का पूजन करें, देवताओं को हवि प्रदान करे, जिससे वायुमण्डल पवित्र हो जाए। परन्तु देखो, आधुनिक काल का मानव इन वाक्यों को जानता हुआ भी लज्जित हो रहा है इन वाक्यों को जानता हुआ अपने में, पामरपने में परिणत हो रहा है।

याग से वायुमण्डल की शुद्धि

जब मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरूदेव से कहाँ यह जो आधुनिक काल का वायुमण्डल चल रहा है इस वायुमण्डल में मानो संघर्ष हो रहा है, परमाणुओं का संघर्ष हो रहा है, मानव की वाणी का मानो देखो, आदान प्रदान हो करके उसका एक नृत्य हो रहा है और उससे वायुमण्डल का निर्माण हो रहा है परन्तु वैज्ञानिकजन इस वाक् पर लगे हुए है आधुनिक काल में कि हम मानो ये जो दुषित वायुमण्डल बन गया है, इस दूषितपने को कैसे शांत कर सकते है?

गोघृत की विशेषता

तो वैज्ञानिकों का जब भी समूह विद्यमान होता है तो कुछ वैज्ञानिकों ने यह निर्णय दिया है कि गोघृत में ऐसी विशेषता है कि जो अग्नि में प्रदान करने से मानो देखो, उसके परमाणुवाद उद्बुद्ध करके और वह वायुमण्डल में प्रवेश करके, अशुद्ध परमाणुओं का नष्ट करना, शुद्ध परमाणुओं को जन्म देता रहता है। ऐसा मानो देखो आधुनिक काल का वैज्ञानिक स्वीकार कर गया है। परन्तु देखो, याग के कर्मकाण्ड, याग की प्रतिक्रिया को न ला करके क्योंकि उसको एक रूढ़ि का देखो, समाज का कुछ अन्न स्वीकार करके, उसको रूढ़ि में लानेवाला जगत बन गया है। वैज्ञानिक जन भी इस रूढ़ि को समाप्त करना चाहते है परन्तु देखो, कहीं मोहम्मद के मानने वाले, कहीं ईसा के मानने वाले, कहीं बुद्ध के मानने वाले, नाना प्रकार की रूढ़ियों में ये प्राणी मानो सत्यवक्ता नहीं बन रहा है। सत्य उच्चारण नहीं कर रहा है, उसको केवल देखो, एक आर्यो का अंग स्वीकार कर रहा है। याग को कोई कहता है ये तो मानो देखो, शोभनीय गोघृताम् मानो देखो, वायुमण्डल को दृष्टिपात नहीं किया जा रहा है।

वह समय मुझे स्मरण है मानो देखो, जब भी दूषित वायुमण्डल बना तो राजा नाना प्रकार के यागों में परिणत हो जाता था। आधुनिक काल में मानो देखो, महाभारत के काल में जो वाममार्ग प्रथा आई, में मानो देखो, नाना प्रकार की हिंसा यागों में परिणत हुई।

आत्मा का याग

जब मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया, मैंने ये कहा है कि मानो देखो, वो काल भी समाप्त होने जा रहा है, कुछ प्राणियों में इस प्रकार की हिंसा रह रही है जो यागों में हिंसा का प्रतिपादन करते हैं। मैं हिंसा करने वाले व्यक्तियों से यह प्रश्न करता रहता हूँ कि जब याग मुक्ति के लिए, जब यह आत्मा का याग माना गया है तो मानो यह हिंसा कैसी? परन्तु देखो, यहाँ वाजपेयी आदि नाना प्रकार के यागों में देखो, हिंसा का प्रतिपादन हुआ। परन्तु देखो, आधुनिक काल में कुछ महापुरूष मानो इस प्रकार के आते रहते है, जो शुद्ध वायुमण्डल को प्रसारित करते है।

याग में अहिंसा

विचार आता है कि हिंसा यागों में नहीं होनी चाहिए। याग में हिंसा का तो प्रसंग ही नही होता। वहाँ कई प्रसंग ही नहीं है। वैदिक साहित्य में कोई प्रसंग नहीं है, परन्तु देखो, जब मैं यह विचारता रहता हूँ कि यह जो समाज है, जब यह विज्ञान यह स्वीकार करता है कि गौ के घृत में और मानो साकल्य में वो शक्ति है कि वायुमण्डल को सु बना सकता है, पवित्र बना सकता है, दूषित आरोपणों को समाप्त कर सकता है, तो क्यों नहीं किया जा रहा है? उसके मूल्य में यह नाना प्रकार की रूढ़ियाँ विद्यमान है।

शिक्षा प्रणाली की अवहेलना

मानो देखो, रूढ़ियों में यह प्राणी अपने को नष्ट कर रहा है मानो वह राष्ट्र अपने को नष्ट कर रहा है देखो, जब मैं राजाओं के समीप जाता हूँ कि हे राजन! धर्म क्या है? तो वो कहता है कि देखो मोहम्मद का धर्म, ईसा का धर्म, बुद्ध का धर्म, नाना प्रकार के धर्मों की गणना हो जाती है। जब मैं प्रश्न करता हूँ शास्त्रीय रूपों से कि धर्म एक है या बहुवचन, मानो धर्म एकोकी वचन है या बहुवचन है तो मानो देखो, वे मौन हो जाते हैं और वहाँ वह नाना धर्म कह करके, वे एक वचन को अपने से दूरी कर देते है। ये कैसा मानो देखो, शिक्षा प्रणाली की एक अवहेलना हो रही है। एक मानो व्याकरण की अवहेलना हो रही है। नाना धर्म कहकर के मानव प्रसन्न है एक धर्म कहकर के प्रसन्न नहीं है यह कैसी मानो देखो, अवहेलना है शिक्षा की।

आज जब मैं गुरु शिष्य की परम्परा में जाता हूँ, तो मुझे आश्चर्य होता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जो महाराज अश्वपति के यहाँ अध्यापन का कार्य करते थे, ब्रह्मचारियों का निर्माण करते थे, परन्तु देखो, आधुनिक काल में निर्माण नहीं हो रहा है। आधुनिक काल में तो रूढ़ियों का प्रसारण हो रहा है, और

ये रूढ़ियाँ ही राष्ट्र के लिए मुनिवरों! देखो, मृत्यु का कारण बनती है। आधुनिक जगत में तो केवल विज्ञान दुरुपयोग में जा रहा है तो उसके मूल में रूढ़ि है मानो देखो जब मैं यह विचारता हूँ कि इन रूढ़ियों का जो आदान प्रदान हो रहा है, वे रूढ़ियाँ समाप्त होनी चाहिए।

धर्म रूपी रूढ़ि

तो मानो देखो, यह राष्ट्र कहता है नहीं, यह रूढ़ि समाप्त नही हो सकती। क्यों नही हो सकती? इसलिए नही हो सकती क्योंकि ये धर्म है, अरे, धर्म को तुम रूढ़ि कह रहे हो, यह तुम्हारी मानो देखो, तुम्हारा यह विकासवाद बन गया है कि मानो देखो, इस पृथ्वी को पृथ्वी से ऊपर हम गति करने वाले प्राणियों में जब प्रीति नही रहेगी एक दूसरे के समीप नहीं रह सकेंगे, तो हे मानव! हे राजा! तेरा यह मानो अवहेलना कृत जो तेरा विचार है ये तुझे ही एक समय निगलता चला जाएगा। एक समय तेरी ही मृत्यु का कारण बनेगा यह समाज। परन्तु देखो, इस प्रकार कृतियाँ बन रहा है, राष्ट्र का जो निर्माण, राष्ट्र का जो निर्वाचन होता है उसे मैंने कई काल में, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा, विज्ञान का जो दुरूपयोग हो रहा है मानो देखो, उसके मूल में शिक्षा प्रणाली है, उसके मूल में यह रूढ़िवाद है मानो देखो इस प्रकार मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उच्चारण कर रहा हूँ कि आधुनिक काल का विज्ञान मानव को त्रास दे रहा है। मानो देखो भयभीत कर रहा है, मानव को अमानवता के क्षेत्र में ले जा रहा है।

मैंने अपने पूज्यपाद गुरूदेव से कई काल में यह कहा है कि यह संसार तो अग्नि की वेदी पर विद्यमान है। यहाँ मानो देखो, जिन गुरूओं ने, जिन आचार्यों ने मानव की रक्षा करने के लिए अपना विचार बनाया, आधुनिक समाज देखो, वही एक मृत्यु का, अग्नि का कांड बन करके रह रहा है। स्वार्थ और देखो, द्रव्य की लोलुपता है। केवल देखो, राष्ट्र और द्रव्य की लोलुपता में नष्ट होता चला जा रहा है।

आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल पूज्यपाद गुरुदेव को यह उच्चारण करना चाहता हूँ कि आधुनिक काल का जो विज्ञान वो मानो देखो, जहाँ एक दूसरे को नष्ट करने वाले परमाणु और अणु का निर्माण कर रहा है वही जल अस्त्रों का भी निर्माण होने लगा है। परन्तु देखो, वह कालं बृहि देखो, ऐसे ऐसे यंत्रों का निर्माण होना देखो, आश्चर्य नहीं है परन्तु इसमें मानवता का ”ास हो रहा है। जब मानवता का ”ास हो रहा है तो विज्ञान की वो प्रतिभा है जहाँ मानव अपने में देखो, यंत्रों का निर्माण करके देखो, मानव की रक्षा के लिए भी यंत्रों का निर्माण होना चाहिए।

धर्म में जीवन

परन्तु देखो, जहाँ नाना प्रकार की चित्रावली बन करके मेरी पुत्रियों का नृत्य हो रहा है और उसमें केवल विलासिता का साकल्य बनाया जा रहा है और विलासिता के साकल्य से अपने को मानव मानो मृत्यु के आंगन में ले जा रहा है। क्या यह समाज, यह राष्ट्र मानो देखो, कैसे जीवित रह सकेगा। विचार आता है कि मैंने तो अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा कि वह समय दूरी नहीं है, जब अग्नि के काण्ड होने वाले है। वह समय दूरी नहीं है, जब मानव–मानव का भक्षण करने के लिए तत्पर हो रहा होगा। आधुनिक काल में ऐसा हो रहा है। और रूढ़ियों में आ रहा है, केवल उसको धर्म कहता है। धर्म कहकर के मानव–मानव के रक्त का पिपासी बन रहा है। क्या यह धर्म है? धर्म में तो मानव की रक्षा होती है। धर्म में तो मानव का जीवन बनता है परन्तु देखो, यहाँ धर्म के नामों पर, मानव–मानव का हनन कर रहा है, नष्ट कर रहा है कृत्तिकाओं में रत हो रहा है।

साधना से आत्मबल

तो विचार विनिमय में क्या, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा, मानो मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, मैं तो इतना उच्चारण कर रहा हूँ कि हे यजमान! मानो तेरा जो सुकर्म है, तेरे यहाँ जो द्रव्य का सदुपयोग होता है, यह सदुपयोग सदैव बना रहे और मानो देखो, द्रव्य का दुरूपयोग न हो करके क्रोधग्नि को शांत करता हुआ, अपने में मौन रह करके अपने को विचित्र बनाता चल। मानो देखो, इस संसार में वो ही प्राणी जीवित रहेगा, वो ही प्राणी अपने आत्मबल को प्राप्त कर सकेगा, जो साधक होगा और वह जो रूढ़ियों से उपराम हो करके मानो देखो, याग की सुगन्धि देगा। यह सुगन्धि मानो देखो, चाहे मोहम्मद के मानने वाला हो, चाहे ईसा के मानने वाला हो, चाहे किसी भी रूढ़ि का हो परन्तु यह सुगन्धि, यह परमाणु सब के लिए मानो एक ही प्रद होते है, वह एकोकी वचन में रहते है यह वास्तव में धर्म की प्रतिभा कहलाती है और देखो, दुर्गन्ध ब्रह्मे देखो, सुगन्ध सब के लिए दुर्गन्ध भी इसी प्रकार इसमें मानो न तो किसी प्रकार वृत्त रहता है यह तो सदैव ऐसा वृत्त है जो ऋषि मुनियों ने बहुत अनुसंधान करके मानो देखो, इसको अपने में धरण किया है अपने में लाने का प्रयास किया है।

आहार, व्यवहार की पवित्रता

तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह चाहता हूँ आहारं ब्रह्म वाचो जहाँ मानो देखो, आहार से मानो बुद्धि का निर्माण होता है वहाँ आहारों से बुद्धि का विनाश हो रहा है। मानो मेध का विनाश हो रहा है। विचार क्या मानो देखो, आहार और व्यवहार हे यजमान! देखो, पवित्र रहने चाहिए। हे राजा यदि तू महान बनना चाहता है राष्ट्र को तो तेरा आहार, व्यवहार, शिक्षा प्रणाली ये तेरा पवित्रवाद में रहना चाहिए। विज्ञान का सदुपयोग होना चाहिए मानो देखो, इस मानव की चिन्ता में, चिन्ता के मूल में विज्ञान का दुरूपयोग है, इसीलिए विज्ञान का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए, उसका सदुपयोग होकर के जहाँ मेरी पुत्रियों के नृत्य होते है। वहाँ ऋषि मुनियों के चरित्र मेरी पुत्रियों के जीवन चरित्र महान होने चाहिए जिससे मुनिवरो देखो, प्रत्येक मानव अपने में यह गौरव कर सके कि वास्तव में मेरा जीवन इस प्रकार का बनना चाहिए। जहाँ देखो, यहाँ महर्षि कणाद और महर्षि जयमुनि जैसे बुद्धिमानों का नृत्य होना चाहिए। यहाँ देखो, भारद्वाज मुनि महाराज अपने पूर्वजों के चित्रों को यज्ञशाला, यंत्रों में लेते रहते थे। इस प्रकार का विचारवृत्त होना चाहिए। आज मैं जब शिक्षा प्रणाली और विचित्रता में जाता हूँ तो मुझे आश्चर्य आता है यहाँ प्रत्येक मानव चिन्तित होता जा रहा है, विचारक नहीं रहा है परन्तु उसके मूल में देखो, राष्ट्र का स्वार्थवाद है। मानो पद की लोलुपता है, द्रव्य की लोलुपता है मानो यह न रह करके मानव जीवन को ऊँचा बनाने के लिए, परमात्मा का चिन्तन, याग जैसे कर्म आत्मीय कर्म और देखो, परमात्मा का चिन्तन होना चाहिए, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद गुरूदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने आज अपने जो विचार दिए उनके हृदय में एक दाह है, एक वेदना लगी हुई हैं, क्योंकि देखो, प्रत्येक मानव संसार में यही चाहता है कि मैं अपने जीवन को आनन्दमय व्यतीत करूँ और वह आनन्द भौतिकवाद में नहीं, वह आनन्द तो केवल अपनी प्रवृत्तियों को ऊँचा बनाने से प्राप्त होता है। तो मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने वाक् प्रकट किए मानो देखो, यजमान को इन्होने अपना विचार दिया, आज मैं भी हे

यजमान। तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। द्रव्यां भूतप्रवाह वह मानो उसका सदुपयोग होता रहे। जीवन की धरा महान बनी रहे और इसके साथ ही, आज का हमारा वाक् समाप्त होने वाला है।

मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने जो विचार वैज्ञानिको के सम्बन्ध में, राष्ट्र के सम्बन्ध में दिए है, वह मानो अवहेलना कृत है। इसीलिए हमारी मनोनीत इच्छा यह है कि प्रत्येक प्राणी अपने में महान और सुसज्जित और विज्ञान को लेकर के राष्ट्रवाद समाज को ऊँचा बनाएँ और विज्ञान का दुरूपयोग न हो। ये आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन पाठन। **ओ3म् देवानाहं त्वा रथं ब्रह्मं गा या वाच्नगाथा ब्रह्म भगाः 18.04.84**

अन्न की पवित्रता———16—09—87

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन—पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही ये पाठ्यक्रम, पवित्रता में सदैव तत्पर रहा है। प्रत्येक मानव के हृदय में इस पाठ्यक्रम के सम्बंध में, हमारे यहाँ विद्यालयों में एक बड़ी विचित्र आभा का उदय होता रहा है। जिसके ऊपर मानव अपने में एक विचित्रता का प्रदर्शन करता रहा है। क्योंकि अनुसंधान करना ही तो हमारा एक मौलिक सिद्धान्त माना गया है। प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक, अन्वेषण करता रहा है। भिन्न भिन्न प्रकार का अन्वेषण, अनुसंधान करना ही हमारा मूलतव माना गया है।

परमात्मा की अनुपत चेतना

आज का हमारा वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महती का गान गा रहा है क्योंकि परमपिता परमात्मा इस ब्रह्माण्ड का निर्माणवेत्ता है अथवा निर्माण करने वाला है। प्रत्येक वस्तु के मूल में वह विद्यमान रहता है। क्योंकि संसार की कोई वस्तु ऐसी नहीं हैं, जहाँ वह परमपिता परमात्मा न हो, समुद्रों की कोई ध्वनि ऐसी नहीं है, पर्वतों की कोई गुपफा ऐसी नहीं, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। क्योंकि वे सर्वज्ञ है। इसीलिए हमारे वेद के मन्त्रों में, विचारों में आता रहता है कि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः मानो परमपिता परमात्मा की अनुपम चेतना हमें दृष्टिपात आती रहती है। क्योंकि एक—एक ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में, एक—एक परमाणुवाद में मानो देखो, उसी का चित्रण हो रहा है।

हमारे यहाँ बहुत पुरातन काल में महर्षि भारद्वाज इत्यादि मुनियों की चर्चाएँ आती रहती है। मानो उन्होने बेटा! अपने में अन्वेषण, अनुसंधान किया और विचारा कि यह संसार अपने में क्या है? और मानव के आने का, संसार में उद्देश्य क्या है?

तो मुनिवरो! देखो, वेद के आचार्यो ने अन्वेषण करते हुए यह कहा कि प्रत्येक मानव जो संसार में आता है, वह मृत्यु को विजय करने के लिए आता है अथवा मृत्युंजयी बनने के लिए, क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक जो भी क्रियाकलाप होता रहा है चाहे वह मानो मृत्युपराम् चाहे वह अनुष्ठानों के रूप में हो, चाहे योगी, योगेश्वरों के रूप में हो, परन्तु सर्वत्र एक ही मन्तव्य रहता है कि मेरे जीवन में मृत्यु नहीं आनी चाहिए। प्रत्येक मानव मृत्यु से उपराम के लिए मानो प्रयास करता रहा है।

मृत्यु का स्वरूप

जब हम दार्शनिक क्षेत्रों में प्रवेश करते है तो विचार आता है कि यह संसार मानो मृत्यु से आच्छादित हो रहा है, मृत्यु से मानो ओत—प्रोत हो रहा है। तो वेद का वाक् कहता है कि हे मानव! तू मृत्युंजयी बन। क्योंकि तेरी मृत्यु नहीं आनी चाहिए। विचारा गया बेटा! जब वैदिक सिद्धांतों पर, हम वेद के वाङ्मय में प्रवेश हुए तो विचारा गया कि यह मृत्यु क्या है?

तो मेरे प्यारे! आचार्यो ने कहा मृत्युंजं भवितां ब्रह्मे लोकाम् वेद का वाक् कहता है कि मृत्यु कहते है अंधकार को, इसलिए प्रत्येक मानव को अंधकार को त्यागना चाहिए और संसार का जितना भी मानव क्रियाकलाप करता रहा है। उसके गर्भ में केवल एक ही वाक् रहा है कि हमारे जीवन में प्रकाश रहना चाहिए, अंधकार नहीं आना चाहिए। यदि जीवन में अंधकार आ गया तो मृत्यु से घिरा हुआ प्रायः हमारा जीवन हमें दृष्टिपात आने लगेगा।

प्राण की वृत्तियाँ

तो मेरे प्यारे! देखो, जितना भी संसार में क्रियाकलाप है वे सर्वत्र एक मानो देखो, मृत्यु को जानने के लिए, मृत्युंजयी बनने के लिए मानो नाना प्रकार का तपश्चर करता रहता है। मेरे पुत्रो! मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा था, विचार देते हुए कहा था, कि प्रत्येक मानव को अपने में मानो देखो, प्राण की वृत्तियों में रत रहना चाहिए। जिससे मानव का जीवन एक महानता की ज्योति वाला बन जाए, क्योंकि वे ज्योतिर्मयी का प्रयास करते रहते हैं क्योंकि परमपिता परमात्मा के राष्ट अंधकार नहीं रहता। वहाँ अज्ञान नहीं रहता, ज्ञान रहता है। वहाँ मानो देखो, शून्यता नहीं होती क्रियावान रहता है। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, परमपिता को जानना ही हमारा कर्तव्य है।

महर्षि जमदग्नि और महर्षि पारेत्वर की चर्चाएँ

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, मृत्यु के ऊपर अध्ययन करता रहा है। मुनिवरो! वो काल मुझे स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! महर्षि जमदग्नि मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे। मेरे पुत्रो! देखो, उनके यहाँ महर्षि पारेत्वर ऋषि महाराज का आगमन हुआ और उन्होंने उनको आश्वासन दिया। उन्होंने कहा—कहो भगवन्! आज कैसे गम्भीर मुद्रा में विराजमान हो? तो मेरे पुत्रो! देखो, महात्मा जमदग्नि ने कहा कि आज मैं वेदों का अध्ययन कर रहा था मानो प्रत्येक वेद मन्त्र के गर्भ में मैं जाने का प्रयास करता रहता हूँ। आज जब मैं एक वेद मन्त्र के गर्भ में पहुँचा तो मुझे एक प्रश्न उत्पन्न हुआ कि यह संसार मृत्युं ब्रह्मः लोकाम्, यह मृत्यु क्या है? इसके ऊपर हमें विचार विनिमय करना चाहिए।

ऋषि मुनियों का स्वरूप

मेरे पुत्रो! देखो, पारेत्वर ऋषि ने कहा कि इसके सम्बन्ध में ऋषि मुनियों का एक समाज एकत्रित होना चाहिए, जिससे समाज में यह निर्णय हो कि यह मृत्यु क्या है? क्योंकि इसका दार्शनिक ही तो निर्णय दे सकते है। इसके सम्बन्ध में जो विचारक पुरूष होते हैं वही अपने विचार को व्यक्त कर सकते

हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, महात्मा जमदग्नि ने इस वाक् को स्वीकार कर लिया और स्वीकार करने के पश्चात् उन्होंने नाना ऋषियों को निमंत्रित किया। मेरे पुत्रो! देखो, उसमें महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज, चाक्राणी गार्गी देवर्षि नारद, सोमकेतु मुनि वृत्तिका, महर्षि वंगली वातकेतु मुनि महाराज मेरे पुत्रो! देखो, नाना ऋषि मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ। जिन ऋषियों में बेटा प्रवाहण, शिलक और दालभ्य और महर्षि वैशम्पायन, महर्षि तारामणि और मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी यज्ञदत्ताः ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी सुकेता नाना ऋषि, मुनियों का एक समाज एकत्रित हुआ।

और उस एकत्रित होने वाले समाज में बेटा! देखो, महर्षि जमदग्नि मुनि ने देखो, एक वेद मन्त्र का उद्‌गीत गाया और वेद मन्त्र यह कह रहा था मृत्युंजं ब्रह्मे वाचाप्रमाणं प्रह्वि व्रतं देवाः वसु सम्भवाः लोकाम् ये वेद मन्त्र का प्रश्न है, वेद मन्त्र कहता है कि ये मृत्यु क्या है? तो वेद का मन्त्र देखो, उसका उत्तर देता है, कहता है मृत्युंजं मंगलं व्रहे वाचं अंधनं ब्रह्मे वाचो देवाः। मेरे प्यारे! देखो, वेद का मन्त्र कहता है कि अंधकार को त्यागने का नाम ही मृत्यु से उपराम होना है, प्रकाश में जाना है और देखो, अंधकार को अपने में ग्रहण करने का नाम ही मानो देखो, अंधकार रूपों में ब्रहे मृत्यु विराजमान रहती है।

जब ऋषि ने बेटा! ऐसा वाक् उच्चारण किया तो मुनिवरो! देखो, वहाँ नाना ऋषि मुनि इसके ऊपर विचार विनिमय करने लगे। जब विचार विनिमय होता रहा तो चाक्राणी गार्गी उपस्थित हुई और उन्होने कहा कि मेरे विचार में यह आता है कि शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु है। मानो देखो, शरीर का आत्मा से पृथक् हो जाना, शरीर का पृथक् हो जाना, इसी का नाम मृत्यु कहा गया है।

परन्तु देखो, पारेत्वर ऋषि महाराज बोले कि हे देवी! मैं कुछ जानना चाहता हूँ? जब शरीर और आत्मा दोनो का पृथक् हो जाना है तो मानो दोनो का तो अस्तित्व रहता है तो वह मृत्यु क्या है? जिसके ऊपर वह विचार विनिमय करने के लिए तत्पर हुए हैं। क्योंकि यदि हम ये स्वीकार करते है कि यह आत्मा देखो, शरीर से पृथक् है तो उसका भी अस्तित्व है और शरीर का भी अस्तित्व है वो शव है उसका रूपान्तरण हो जाना है। तो रूपान्तरण हो जाने का नाम तो मृत्यु नहीं कहते।

मेरे प्यारे! देखो, चाक्रणी ने कहा प्रभु! मैंने तो केवल इतना ही अध्ययन किया है। आगे मेरा अध्ययन होगा तो मैं आगे चर्चा कर सकती हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि पुनः मौन हो गए। तो मुनिवरो! महर्षि पिप्पलाद मुनि उपस्थित हुए और पिप्पलाद मुनि ने यह कहा कि मेरे विचार में तो यह आता है कि मृत्यु का अभाव है, इस संसार में, मृत्यु कोई वस्तु नहीं है। मेरे पुत्रो! देखो, देवर्षि नारद मुनि महाराज ने उसका समर्थन किया और यह कहा कि वास्तव में यह यथार्थ शब्द है। मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं होती। मेरे प्यारे! देखो, जैसे एक माता अपने पुत्र के लिए व्याकुल होती रहती है और व्याकुल जब हो जाती है तो दार्शनिक उसके समीप जाता है और दार्शनिक कहता है कि हे माता! तू रुदन क्यों मचाती है मानो तू रुदन क्यों कर रही हैं। माता कहती है मेरा पुत्र था, वह न रहा! मेरे पुत्रो! दार्शनिक कहता है कि हे माता! कि आत्मा तेरा पुत्र है या शरीर तेरा पुत्र है। तो मुनिवरो! देखो, माता मौन हो जाती है। यदि वो शरीर को अपना पुत्र कहती है तो शव, तो ज्यों का त्यों निहित रहता है। परन्तु यदि आत्मा को पुत्र कहती है तो आत्मा को माता जानती नहीं है।

जड़, चेतना का स्वभाव

मेरे प्यारे! देखो, माता मौन हो गई। तो विचारा गया कि यह मृत्यु है क्या? मेरे प्यारे! देखो, संकल्पो ब्रह्मणाः वाचप्रवाह लोकाम् वेद का वाक् कहता है कि मुनिवरो! उपाधि तो संकल्प में रहती हैं। उपाधि तो मानो संकल्प मात्र है और देखो, इन दोनो का पृथक् पृथक् हो जाना ये इनका स्वाभाविक गुण है क्योंकि चेतना और जड़वत् दोनो का सदैव देखो, समन्वय नही रह पाता। मेरे प्यारे! देखो, यह विचार विनिमय हो रहा था कि कुछ समय के पश्चात् सन्धि काल आ गया और सन्ध्या का जब समय हो गया, तो सब ऋषि मुनि बेटा! अपने कक्ष में जा पहुँचे।

महर्षि पिप्पलाद मुनि को बहुत समय हो गया था, अपनी गृह स्थली को त्यागे हुए, उनका निकटतम आसन था। मेरे प्यारे! महर्षि पिप्पलाद मुनि महाराज अपने गृह में जा पहुँचे। जब वे अपने गृह में, रात्रि काल में जा पहुँचे तो उनकी पत्नी शकुंतका बड़ी प्रसन्न, जहाँ प्रसन्न, वहाँ बड़ी व्याकुल होने लगी। मेरे पुत्रो! व्याकुल दृष्टिपात करते हुए ऋषि ने कहा – हे देवी! तुम व्याकुल क्यों हो रही हो? उन्होने कहा–प्रभु! मेरा सात वर्षीय पुत्र था, वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। उन्होंने कहा देवी! तुम्हें यह प्रतीत है कि दार्शनिकों के समाज में से मेरा आगमन हो रहा है, और मैं यह निर्णय कर गया हूँ कि संसार में मृत्यु कोई वस्तु नहीं होती। वास्तव में जब मैं विचारता हूँ, गंभीर मुद्रा में मुद्रित होता हूँ तो मुझे मुत्यु का अभाव प्रतीत होता है, वह अभावातीत कहलाता है।

शरीर, परमाणुओं का संघात

मेरे प्यारे! देखो, देवी, बड़ी बुद्धि अमृतम् मानो देखो, दद्दड़ गोत्र में उनका जन्म हुआ था। देवी ने कहा–प्रभु! यह तो मैंने स्वीकार कर लिया, आप के वाक्यों की, मैं अवहेलना नही करना चाहती हूँ। भगवन्! मैं यह जानना चाहती हूँ कि जब ये मृत्यु कोई वस्तु नहीं है तो प्रभु! यह जो मेरा शरीर है यह क्या है? उन्होंने कहा – देवी! तुम्हारा शरीर परमाणुओं का संघात है। परमाणु तो मानो देखो, एक पिण्ड रूप बनकर के अपने रूप में परिणत होते रहते है। मानो ऐसे विज्ञानवेत्ता मानो देखो, इन पिण्डित रूपों को भिन्न–भिन्न रूपों में जानकर के उसको साकार रूप देते हैं। उसी प्रकार यह जो तुम्हारा शरीर है यह मानो एक देखो, पिण्डं ब्रह्माः यह परमाणुओं का संघात है। इन्हीं परमाणुओं को देखो, सुगठित हो जाते हैं। पिण्ड की रचना हो जाती हैं यही परमाणुवाद यदि विकृत हो जाते है तो देखो, पिण्ड का रूपान्तरण हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, शकुंतका बड़ी प्रसन्न हो गई, उन्होने कहा – प्रभु! आपने मेरे प्रश्नों का उत्तर यथावत दिया है। मैं यह जानना चाहती हूँ कि भगवन्! यह मानो देखो, मेरा शरीर यह परमाणुवाद इस रूप में नहीं तो इसके पूर्व यह परमाणुवाद कहाँ रहता था?

शरीर से पूर्व परमाणुओं की स्थिति

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह वाक् श्रवण किया तो उन्होंने कहा देवी! यही परमाणुवाद माता के गर्भस्थल में विद्यमान था। माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है। निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, वह निर्माणवेत्ता माता के गर्भस्थल में देवत्व उसमें विद्यमान रहता है। जब मानो परमाणुओं के साथ में, शिशु का गमन हो जाता है, शिशु प्रवेश कर जाता है तो मुनिवरो! देखो, उसी समय देवत्व आ जाते है। बेटा! देखो, चन्द्रमा अमृत बहाने लगता है, सूर्य प्रकाश देने लगता है मानो पृथ्वी गुरुतव देना प्रारम्भ कर देती है और जल आपोमयी ज्योति प्रदान करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, वह अग्नि ऊष्ण बनाने लगती है और देखो, वायु प्राण देती है। अन्तरिक्ष अवकाश देने लगता है। मेरे पुत्रो! वह प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है जब मैं उसके विज्ञान की विवेचना करने लगता हूँ तो बेटा! उसका अनन्तमयी विज्ञान जब हमारे समीप आता तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं।

धर्म से जीवन

प्रभु के विज्ञान की विवेचना

मेरे पुत्रो! वही मानो देखो, माता के गर्भस्थल में देव अपने में देवत्व का मानो अपना गुरुतव प्रदान कर रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, माता के गर्भस्थल में निर्माण हो रहा है, निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है परन्तु मेरी भोली माता को कोई ज्ञान नहीं है। कौन निर्माण कर रहा है। बेटा! इस मानव के शरीर में 72 करोड़ 72 लाख 10 हजार 202 नाड़ी कहलाती है। वाह रे, मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है जब मैं तेरे विज्ञान की विवेचना करने लगता हूँ तो आश्चर्य आने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में हम जैसे पुत्रो का निर्माण होता है। निर्माण करने वाला जो विश्वकर्मा है वो निर्माण कर रहा है जो मानो देखो, ब्रब्रहे वृतं देवाः जो अपने में धारयामि बना हुआ है।

मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने यह उत्तर दिया कि हे देवी! यही परमाणुवाद मानो देखो, माता के गर्भस्थल में विद्यमान है परन्तु देखो, उस समय शकुन्तका ने कहा – कि प्रभु! यह तो मैंने स्वीकार कर लिया, परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ जब माता का मानो गर्भाशय नहीं होता तो उससे पूर्व जो परमाणुवाद है वह कहाँ रहता है? उन्होने कहा – देवी! यही परमाणुवाद मानो देखो, कुछ माता के रूप में, वीरांगना के रूप में होता है कुछ मानो वीरत्व के रूप में होता है। इन परमाणुओं की रक्षा करने वाला मानो ब्रह्मचारी बन जाता है। उन्ही परमाणुओं की रक्षा करने वाली मेरी पुत्री वीरांगना बन जाती है और वीरांगना बन करके बेटा! अहिंसा परमोधर्म की प्रतिभा में भासने लगती है।

अहिंसा परमो धर्मः में गान

बेटा! मुझे वो काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में मानो देखो, चाक्राणी गार्गी अपने में गान गाती थी, सामगान गाने लगती थी। वेदों का गान गाने वाला बेटा! उद्गीत ही तो गाता है वो गायन रूप में ही तो गाता रहता है। अपने प्रभु की प्रतिभा का वर्णन करता रहता है जैसे माता का पुत्र, माता का गान गाता रहता है। माता प्रसन्न हो जाती है। मेरे पुत्रो! इसी प्रकार जब वेदों का गान गाने वाला अहिंसा परमोधर्मः में जब गान गाने लगता है तो मेरे पुत्रो! देखो, सिंहराज उसके चरणों की वन्दना करता है, सर्पराज उसके चरणों का चुम्बन करने लगता है। मेरे पुत्रो! देखो, इसी प्रकार जब चाक्राणी गान गाती थी तो सिंहराज उनके स्वरों को, उस ध्वनि को अपने में ध्वनित करते रहे।

मुनिवरो! देखो,जब उनसे ऋषि ने प्रश्न किया कि हे देवी! तुम मानो इस प्रकार ये सिंह और सर्पराज तुम्हारे चरणों का चुम्बन क्यों करते है? तो उन्होंने कहा – कौन ऐसा संसार का प्राणी अभागा है जो अपने माता पिता की प्रसन्नता नहीं चाहता। वेदमन्त्र मानो देखो, प्रत्येक वेदमन्त्र में मानो देखो, प्रभु का ज्ञान है, प्रभु का विज्ञान है, प्रभु की रचना की प्रतिभा का मानो उसमें नृत्य हो रहा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार का वर्णन मानो उत्तर पाया तो वे बड़े प्रसन्न हो गए।

प्रभु की प्रतिभा

तो विचार क्या मानो देखो, वह वीरांगना बन जाती है। इन्हीं परमाणुओं की मानो देखो, रक्षा करने वाला मेरे पुत्रो! देखो, गान गाने वाला मानो गान गाता हुआ अपने में वीरत्व बन जाता है। ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। ब्रह्मणं, ब्रह्मे ब्रह्मचरिष्यामि। मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचरिष्यामि बन करके अपने प्रभु का गान गाता है और वह कहता है कि मैं मानो देखो, प्रभु की प्रतिभा में परिणत हो गया हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मवर्चोसि का पालन करता हुआ, मानो एक ब्रह्म है, और एक चरी कहलाता है। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरी कहते है प्रकृति को, जो दोनो को, अंग और उपांगो से जानने लगता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रो! वही तो देवताओं की सभा में सुशोभनीय हो जाता है, वह देवताओं की सभा में नृत करता है। योगेश्वर बन जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी ही योगी है जो अपने प्रत्येक श्वास को मानो ब्रह्मसूत्र में पिरो देता है मानो ब्रह्मवर्चोसि बन जाता है। मेरे पुत्रो! वही तो जब सूत्र का तारतम्य बन जाता है वही तो ब्रह्मसूत्र बनकर के बेटा! ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या, वेद का मन्त्र कहता हूँ ब्रह्मचरिष्यामि गतप्रमाणं मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म और चरी को जान करके मेरे पुत्रो! देखो, व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश कर जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो देवी बड़ी प्रसन्न हुई। उन्होने कहा – धन्य है, प्रभु! मेरे पुत्रो! देवी ने यह प्रश्न किया कि प्रभु मैं जानना चाहती हूँ जब मानो ये वीरत्व और वीरांगनातव नहीं होता तो यह परमाणुवाद कहाँ रहता है?

अन्न के रूप में परमाणु

उन्होने कहा – हे देवी! यही परमाणुवाद मानो देखो, यह अन्न के रूप में विद्यमान रहता है। अन्नादं भूतं ब्रह्माः मेरे पुत्रो! देखो, अन्नों में ही प्राणं बृहे व्रतं ब्रह्मा यह अन्न में ही बेटा! देखो, मानो यह परमाणु रहता है। मेरे प्रभु ने जब सृष्टि का सृजन किया, तो बेटा! देखो, यह सात प्रकार के अन्न को उत्पन्न किया। मेरे पुत्रो! सबसे प्रथम अन्न का नाम, एक पौधा है बेटा! उसमें दो प्रकार का अन्न है, एक को मानव पान कर रहा है, एक को पशु पान कर रहा है। वाह रे, मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, तू कितना महान है, एक ही पौधा उसमें दो प्रकार का अन्न है बेटा! एक अन्न को मेरी प्यारी माता भोजनालय में निर्माण कर रही है, भोजनालय में परिपक्व बना रही है, एक को पशु पान कर रहा है, पशु पय दे रहा है। मानो ओज और तेज की उत्पत्ति कर रहा है। मेरे पुत्रो! कैसा उस मेरे प्यारे प्रभु की महानता है। आज जब मैं इन विचारों में जाने लगता हूँ तो बेटा! मेरा अन्तर्हृदय गद गद हो जाता है और मैं कहता हूँ हे परमात्मन्! तू कितना उज्ज्वल है, तेरी सृष्टि कितनी महान है। मेरे पुत्रो! एक ही पौधा पर दो प्रकार का अन्न है एक को पशु पान करके बेटा! दुग्ध दे रहा है एक अन्न को मानव पान करके बेटा! ओजस्वी बन रहा है, तेजस्वी बन रहा है। अपने तेज से मानो तेजोमयी को जन्म दे रहा है।

साझा अन्न

तो मेरे प्यारे! दो प्रकार का अन्न है एक मानो पशु का अन्न है, एक मानव का अन्न है, जो सब का साझा अन्न कहलाता है। वह जो तृतीय अन्न है वह हूत कहलाता है बेटा! यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके याग कर रहा है और वो याज्ञिक बन करके देखो, अग्नि के मुखारबिन्द में देखो, स्वाहा कह रहा है। वो सर्वत्र देवताओं को पवित्र बना रहा है। मेरे प्यारे! देखो, जब देवता प्रसन्न होते है तो पर्जन्य होता है मानो देखो, उसी से वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है। अन्नाद के मूल में यह नाना प्रकार की व्यंजनों वाली यह पृथ्वी निर्माणित करने लगती है, व्यंजनों वाली बन जाती है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, यह प्रतं ब्रह्माः अन्नादं भूतं ब्रह्माः यह मानो देखो, यह हूत कहलाता है। यह तीसरे अन्न का नाम हूत है और चतुर्थ अन्न का नाम बेटा देखो प्रहूत कहा गया है। यह हूत है वो प्रहूत कहलाया गया है।

धर्म से जीवन

पुरोहित का दायित्व

मेरे प्यारे! देखो, समाज में पुरोहित होना चाहिए, यह पुरोहित ही राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाता है। मेरे प्यारे! मुझे त्रेता का काल स्मरण आता रहता है। त्रेता के काल में बेटा! देखो, महर्षि विश्वामित्र के मनों में, ऋषि मुनियों का समाज एकत्रित हुआ और यह निर्णय किया गया कि तुम अयोध्या में मानो प्रवेश करके राम, लक्ष्मण दोनों को धनुर्विधा प्रदान करो।

मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् महर्षि विश्वामित्र ने महर्षि वशिष्ठ मुनि की आज्ञा पाकर बेटा! अयोध्या में उनका गमन हुआ और जब अयोध्या में जाने के पश्चात् मुनिवरो! देखो, राजा ने कहा – हे भगवन्! आज बिना सूचना के आपका आगमन हुआ है उसके मूल में क्या है? महर्षि विश्वामित्र बोले – कि मैं भगवान् राम और लक्ष्मण को ले जाकर के अपना धनुर्याग पूर्ण कराना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! राजा ने कहा प्रभु! मैं राजा हूँ, ये बाल्य तो किशोर है मानो मैं आपके याग को पूर्ण कराऊँगा। उन्होने कहा – नहीं, मुझे राम, लक्ष्मण दोनो से अपने याग को पूर्ण करना है। मेरे पुत्रो! देखो, राजा अपने में मानो देखो, वह मोह, ममता में परिणत हो गए।

माता कौशल्या के उद्‌गार

मेरे पुत्रो! देखो, जब महर्षि विश्वामित्र के आने की सूचना राजगृह में पहुँची तो मुनिवरो! देखो, माता कौशल्या इत्यादि सब राजलक्ष्मियाँ बेटा! देखो, ऋषि के दर्शनार्थ उनके चरणों की वन्दना की और ये कहा–कहो, भगवन् आप कैसे वृत्त हो रहे है? उन्होने कहा – हे दिव्यासे! मेरी इच्छा है, मैं दण्डक वनों में धनुर्याग कर रहा हूँ। देखो, उसके लिए राम, लक्ष्मण दोनों चाहिए। माता कौशल्या ने कहा–ये तो भगवन्! हमारा सौभाग्य है, आप भगवन्! देखो, राम, लक्ष्मण को ले जाइए, यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला पुत्र, यदि ऋषियों की सेवा नहीं कर सकता तो ये हमारा गर्भाशय दूषित हो जाएगा।

जब ये वाक् उन्होंने कहा – तो बेटा! देखो, राजा कोई उत्तर नही दे सका और महर्षि विश्वामित्र प्रसन्न हो गए। राम, लक्ष्मण दोनों को ऋषि को प्रदान कर दिया। प्रदान करने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, भयंकर वन के लिए गमन करते है। मुझे ऐसा स्मरण हे बेटा! उन्होने धनुर्याग, का अभिप्राय यह था कि राम, लक्ष्मण दोनों को विज्ञान के वाचमय में ले जाना था और मानो देखो, ब्रह्मविद्या, अस्त्रों शस्त्रों की विद्या उन्हें प्रदान कराई।

तो विचार क्या बेटा! वह पुरोहित कहलाते है। वे पुरोहित जन होते हैं। ये पुरोहित भी एक प्रकार का राष्ट्र का अन्न होता है। समाज का अन्नाद कहलाता है, इससे मानव बलिष्ठ होता है। मानो अपने में मनोवृत्तियों को ऊँचा बनाया जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ये चार प्रकार का अन्न समाज के लिए, सर्वत्र मानो देखो, सबका अन्न साझा कहलाता है। यह अन्नादं भूतं ब्रह्माः लोकां मेरे पुत्रो! देखो, इसी अन्न के द्वारा समाज में महान बनता रहता है। मेरे पुत्रो! देखो, यह तीन प्रकार का जो अन्न है वो आत्म कल्याण के लिए अथवा मोक्ष और परमात्मा की प्राप्ति के लिए होता है जैसे हमारे यहाँ देखो, मन, विचार और प्राण इन तीनों के ऊपर अनुसंधान करना है। मानो देखो, मन, वचन और विचार.... **शेष अनुप्लब्ध** 16.9.87 भद्रक उड़ीसा

चरित्र में राष्ट्र ——— 01–10–88

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भाँति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रो का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ हैं और वे यज्ञोमयी स्वरूप है। मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर, हमारे यहाँ विचार विनिमय होता रहा है। इसीलिए हमें उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और उसकी महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाना चाहिए।

प्रकाश की आकांशा

क्योंकि प्रत्येक मानव, जितने भी संसार के क्रियाकलाप कर रहा है, चाहे वे आध्यात्मिक विज्ञान में रत करने वाले हों, चाहे वे भौतिक विज्ञान में रत करने वाले हों। परन्तु उन सब का एक ही मन्तव्य रहता है, कि मैं अन्धकार से दूरी हो जाऊँ और मेरे समीप सदैव प्रकाश रहना चाहिए। तो ये उनके हृदयों में विडम्बना बनी रहती है कि मेरे जीवन में अन्धकार न आए और प्रकाश, अन्तर्हृदयों में निहित रहे। तो इसीलिए जितना भी क्रियाकलाप है, चाहे वह याग रूप में हो, चाहे वह अनुसंधान रूप में हो, चाहे वह राष्ट्रवाद हो, किसी भी प्रकार की प्रणाली हो। परन्तु उस प्रणालियों में एक ही वाक् उस साधक को दृष्टिपात आता रहता है कि जीवन में अंधकार नहीं आना चाहिए, सदैव प्रकाश रहना चाहिए।

परमपिता के आश्रित

तो मुनिवरो! विचार आता है कि ये प्रकाश कैसे उपलब्ध हो? और हम प्रकाश में कैसे रत हो, ये जानने के लिए ,मानव परम्परागतों से बेटा! अनुसंधान करता रहा है। नाना प्रकार के अणु और परमाणुओं में और परमपिता परमात्मा की महती सर्वत्रता में एक आनन्द की पिपासा में लगा हुआ है। आओ मेरे प्यारे! हमारा वेद का मन्त्र यह क्या कह रहा था, कि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है और वह यज्ञोमयी स्वरूप है। मानो याग उसका आयतन, उसका गृह, उसका सदन है। हमें उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर विचार विनिमय कर लेना चाहिए। क्योंकि हमें तो किसी के आश्रित रहना है और जब तक हम आश्रित नहीं रह पाते कही ज्ञान और विज्ञान के आश्रित बन जाते हैं, कहीं परमपिता परमात्मा के आश्रित रहते है, कहीं पंचमहाभूतों के आश्रित रहते है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा के आश्रित रहें। और उसी की आभा में सदैव गुणगान गाते रहें तो हमारे जीवन में एक महानता की ज्योति प्रायः जागरूक हो जाती है।

धर्म से जीवन

विष्णु

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चाएँ या व्याख्या नहीं दे रहा हूँ। हमारा एक, एक वेद मत्रं, नाना प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता है। आज का हमारा वेद मन्त्र कह रहा था विष्णुः रूद्र भागः प्रमाणः व्रततेते, हे विष्णु! तू कल्याण करने वाला है। हे विष्णु! तू पालन करने वाला है। तो जहाँ भी विष्णु का विशेषण आता है, वहीं पालना का प्रसंग आता है। यह वाक् मैने तुम्हे कई काल में वर्णन किया है। हमारे यहाँ विष्णु नाम, जहाँ परमपिता परमात्मा का आता है वहाँ लोकों का नाम भी विष्णु कहा जाता है। परन्तु विष्णु अपनी स्थली पर बड़े विचित्र, रूपों में रत होता रहा है। जिससे मानव उसकी आभा में सदैव रत रहता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ यागों का वर्णन आता रहता है। हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन, परम्परागतों से होता रहा है। चयनां ब्रह्मणं व्रहे देवं ब्रह्माः मेरे प्यारे! देखो, उस याग में तुम्हें ले जाने के लिए आया हूँ, जहाँ धनुर्याग की विवेचना होती रही है। हमारे यहाँ धनुर्याग अपने में बड़ा अनूठा रहा है। परन्तु जहाँ ऋषि मुनियों की स्थलियों पर धनुर्याग होता रहा है वही आधयात्मिक याग भी होता रहा है। क्योंकि हमारे ऋषि, मुनियों की एक बड़ी विचित्र देन रही है कि आधयात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करने का प्रयास किया और पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनो को एक सूत्र में लाने का प्रयास किया। तो बड़ी विचित्र, विचित्र उड़ाने उड़ी जाती रही हैं। परमपिता परमात्मा के इस ब्रह्माण्ड में भिन्न भिन्न प्रकार की मालाओं का वर्णन आता रहता है।

मन्त्रों की माला

परन्तु एक वेद मन्त्र है उसमें भिन्न, भिन्न मन्त्र है और वेद मन्त्रों का जो विषय है वह ब्रह्म है। जब उसे ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया जाता है तो मुनिवरो! देखो, वह प्रत्येक वेद मन्त्र मनका बनकर के वह वैदिकता की एक माला बन जाती हैं। कैसी विचित्र माला है बेटा! जब हमारे समीप मालाओं का वर्णन आता है तो यह ब्रह्माण्ड एक माला के सदृश दृष्टिपात आने लगता है। मेरे पुत्रो! देखो, हमारे यहाँ जब वेद का पठन पाठन किया जाता है। तो उसके भिन्न, भिन्न प्रकार हैं। जैसे माला पाठ का वर्णन आता है। जटा पाठ, घनपाठ उदात और अनुदात्त, तो उनमें एक माला पाठ आता है। मालापाठ का अभिप्राय यह है कि जैसे माला है, एक सूत्र है। उस सूत्र में बेटा! भिन्न, भिन्न मानो देखो, मनके पिरोए जाते है। तो बेटा! देखो, समेरू बनकर के माला बन जाते है। इसी प्रकार जब वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है तो बेटा! वह माला बन जाती है। उस माला को जो धारण करता है उसका कण्ठ सजातीय बन जाता है।

तो मेरे पुत्रो! स्वर्ण से मानव का कण्ठ सजातीय नहीं बनता, जब वह वेद मन्त्रों की अथवा ज्ञान रूपी, विवेकमयी माला को अपनें में धारण करता हैं तो एक प्रकार की माला बन जाती हैं और उसका कण्ठ सजातीय बन करके मेरे प्यारे! देखो, कण्ठ, हृदय से मिलान करके परमात्मा से उसका समन्वय होना प्रारम्भ हो जाता है।

त्रेता काल का धनुर्याग

तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना नहीं देने आया हूँ विचार यह उद्गीत रूप में गाने के लिए आया हूँ कि हमारे यहाँ धनुर्याग की चर्चाएँ महर्षि विश्वामित्र ने, त्रेता के काल में तो मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ। जहाँ दण्डक वनों में बेटा! नाना ब्रह्मचारी अधयपन कर रहे थे और धनुर्याग हो रहा है और धनुर्याग में बेटा! एक वर्ष के पश्चात उनका परीक्षा का फल और मानो दीक्षांत, ऋषि मुनियों के विचार और वे दीक्षांत उन्हें उपदेश दिए जाते है। ये परम्परा हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से मानो वर्णित हो रही है और अपने में देखो, यह राष्ट्रीय परम्परा भी मानी गई है।

तो मुनिवरों देखो, महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में, जब वो दीक्षांत उपदेश होते तो नाना ऋषि, मुनि ब्रह्मवेत्ता आकर के और उनका उपदेश प्रारम्भ होता। तो बेटा! देखो, इससे पूर्व काल में मैं तुम्हे यह प्रकट कर रहा कि व्रणं ब्रह्मणाः मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि भारद्वाज के आश्रम में जो ब्रह्मचारी अधयपन करते थे जैसे ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु और ब्रह्मचारी यज्ञदत्ता और महर्षि पनपेतु और उनकी कन्या शबरी मेरे पुत्रो! देखो, सब निमन्त्रण के कथनानुसार दण्डक वनों में महर्षि भारद्वाज मुनि के आग्राहन होते हुए उनके यान में विद्यमान हो करके वे दण्डक वनों में विराजमान हो गए और महर्षि विश्वामित्र ने उनका स्वागत किया।

विज्ञान की तत्परता

तो मुनिवरो! देखो, अपने ही आसनों पर विद्यमान हो करके ओर आसनों पर वशिष्ठ मुनि महाराज विद्यमान है। तो वहाँ ये विचार विनिमय होने लगा कि विज्ञान अपने में कितना गतिवान बन सकता है। तो मेरे प्यारे! जब ब्रह्मचारी सुकेता से यह कहा गया कि तुम्हारा विज्ञान, तुम्हारी दृष्टि में कितना ऊधर्वा में बन सकता है तो ब्रह्मचारी सुकेता ने यह कहा कि मेरे यहाँ, हमारे आश्रम में मानो देखो, अत्यन्त विशाल विज्ञान की प्रतिभा रही है। पूज्यपाद भारद्वाज मुनि महाराज विद्यमान है इनके क्रियाकलापों को कौन नहीं जानता। मानो देखो, इनके यहाँ यंत्रों में, परमाणुओं में, यंत्राणं ग्रंधववृत्ति प्रमाण वृत्ति देवः मानो देखो, परमाणुवाद का जब विभाजन किया जाता है। तो मानो देखो, उसमें मानवीयता की   धाराओं का जन्म होने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, इस सन्दर्भ में महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने यह कहा कि भगवन्! हे वशिष्ठ! तुम्हे तो यह प्रतीत ही है कि विज्ञान अपनें में कितना तत्पर रहा है।

उद्दालक गोत्र के ऋषि

एक समय ऋषि मुनियों का एक समाज, उद्यालक गोत्र में पहुँच गया और उद्यालक गोत्र के ऋषिवर, महर्षि शिकामकेतु उद्यालक अपने आसन पर विद्यमान थे और उनकी पत्नी भी विद्यमान, परन्तु वो प्रातः कालीन याग कर रहे थे और यागों में परिणत होते, वे मानो ब्रह्मणं वृहिः मुनिवरो! देखो, जब उनके आश्रम की कृतिका सुतम् और उन्होंने बेटा! उनका स्वागत किया। भारद्वाज बोले— कि हम सब ऋषि मुनियों का स्वागत किया और विराजमान हो गए। ब्रह्मचारी के अस्सुतम और ब्रह्मवेत्ताओं को दृष्टिपात करके महर्षि ने कहा कि हे भगवन! आपां ब्रह्मणे देवाः आपका पदार्पण क्यों हुआ? उन्होने कहा— प्रभु! दर्शनार्थं ब्रहे हम आपके दर्शनों के लिए आए हैं। उन्होंने कहा— बहुत प्रियतम। मेरे प्यारे! देखो, कुछ विचार विनिमय भी करना है। उन्होने कहा—प्रभु!

हम विज्ञान की आभा में रत होने के लिए आए है कि आपका विज्ञान, आप की शाला, बड़ी विचित्र है उसको दृष्टिपात करने के लिए आए है। उन्होने कहा– तो आओ, दृष्टिपात करो।

इन्द्रियों पर संयम

मेरे प्यारे! देखो, वहा सबसे प्रथम साकल्य के द्वारा याग होने लगा, जब याग हुआ तो मुनिवरो! देखो, जैसे स्वाहा उच्चारण करते तो उनके चित्र, उनके यंत्रों में दृष्टिपात आने लगे और वे दृष्टिपात करने लगे, उन्होंने कहा एक तो यह विज्ञान है परन्तु हमने याग के माधयम से विज्ञान और अग्नि की धाराओं को जानकर के जैसे एक साधक अपने मन, प्राण और विचारों को एक सूत्र में लाकर के इन्द्रियों के ऊपर संयम करता है इसी प्रकार हमने याग के द्वारा अनुसंधान किया और अनुसंधान करते करते मानो देखो, अपने यंत्रों में, अपने चित्रों का दर्शन करने लगे। आगे अनुसंधान किया तो हमारे जो पिता, महापिता थे उनके चित्रों का दर्शन होने लगा। तो हमने मानो अपने विज्ञान को जानते, जानते यहाँ तक जाना कि हमारे जो पचासवे महापिता है उनका चित्र, उनका क्रियाकलाप और मुनिवरो! देखो, वे अस्सुतं ब्रह्मणाः अग्नं व्रहे हे प्रभु! देखो, उनका हम दर्शन करते रहे, उनके क्रियाकलापों का भी दर्शन होता रहता है।

तो मेरे प्यारे! यह विज्ञान अपने में मानो कितना अनूठा बनकरके रहा है ये विज्ञान मानो देखो, पृथ्वी–विज्ञानवेत्ता इस पृथ्वी के गर्भ में गमन करने लगता है और मुनिवरो! देखो, इसमें से खाद्य, खनिज पदार्थों को जानने लगता है। मेरे प्यारे! ये वार्ता देखो, दण्डक वनों में महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में ऋषि मुनियों का विचार विनिमय में हो रहा था, वह उनकी धाराओं का विचित्र विवेकां ब्रह्मणं वृत्ति विचारस्तु वह विचार हो रहा है। परन्तु वह उनका विचार दे रहे हैं कि देखो, उद्यालक गोत्र के ऋषि अपने विज्ञान में कितनी ऊधर्वा में उन्होंने गमन किया है। मुनिवरो! देखो, वह उनके पचासवें महापिता जिनके देखो, शब्दः अन्तरिक्ष में विद्यमान है। अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके शब्द ही तो बेटा! द्यौलोक में जाता है और अनुसंधान करने पर उसी शब्द का आकार बन करके विज्ञानवेत्ता के समीप आता रहता है।

तो शिकामकेतु उद्यालक मुनि महाराज ने इस विज्ञान को जाना, तो देखो, उद्यालक ने कहा कि हे प्रभु! ये मेरे यहॉं मानो देखो, मेरे पिताओ के दर्शन होते रहते, हमने आगे अग्रणीय बनाए तो सौवें महापिता का भी दर्शन होता रहता।तो मुनिवरो! देखो, यह वार्ता दण्डक वनों में हो रही थी । उन्होने कहा, यह विज्ञान, उद्यालक के कथनानुसार विज्ञान, बहुत ऊर्धा में उड़ान उड़ सकता है और उड़नी चाहिए, क्योंकि विज्ञान अपने में बड़ा विचित्र रहा है।

मेरे पुत्रो! देखो, मुझे वो काल भी स्मरण आता रहता है, त्रेता के काल का, यही वाक् नहीं, मेरे पुत्रों! देखो, वो काल स्मरण आता रहता है। देखो, उस सभा में महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज भी विद्यमान थे महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज से ये कहा कि भगवन्! आप विज्ञान के सम्बन्ध में क्या जानते हैं? प्रभु आपका विज्ञान तो बडा अनूठा है प्रभु! उसके सम्बन्ध में हम जानना चाहते है? मेरे प्यारे! महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने कहा–हे भगवन्! तुम आघ्यात्मिकवाद जानना चाहते हो, या भौतिक विज्ञान? उन्होंने कहा–प्रभु! दोनो प्रकार के विज्ञान को जानना चाहते है। उन्होने कहा– आध्यात्मिक विज्ञान तो अपने में बड़ा अनूठा रहा है।

महात्मा कुक्कुट मुनि द्वारा लंका भ्रमण

देखो, मेरा जो जन्म हुआ है वह अंगिरस गोत्र में हुआ है। अंगिरस गोत्र के मानो देखो, जो सातवे महापिता थे, वे एक समय एकन्त स्थली पर विद्यमान हो करके मौन हो गए। वेद का अध्ययन करते, करते मौन हो गए और 85 वर्षों तक उन्होंने मौन धारण किया और 85 वर्षों के पश्चात् मेरे महापिता मानो देखो, अन्तः करण के ऊपर, अपने संस्कारों के ऊपर, अनुसंधान करने लगे तो मानो देखो, 85 वर्षों में उनका इतना विशाल स्वरूप बन गया अन्तः करण में मानो देखो, जो करोड़ों जन्मों के संस्कार विद्यमान होते उनमें से कुछ लाख जन्मों के संस्कारों को उन्होने प्रत्यक्ष रूप में जानने का प्रयास किया। तो ये आघ्यात्मिकवाद कहलाता है। परन्तु जहाँ तक भौतिक विज्ञान की चर्चाएँ है। भौतिक विज्ञान में तुम्हे यह प्रतीत है कि मैने लंका भ्रमण किया है और लंका के भ्रमण करते, करते मैने उस विज्ञान को जाना है।

परन्तु एक समय जब राजा रावण मुझे भयंकर वनों से, अपनी लंका में लाने का उन्होंने प्रयास किया तो मानो देखो, जब उनकी लंका में मैंने प्रवेश किया, गृह में प्रवेश किया तो उनकी पत्नी मानो देखो, जो सुसुज्ञ और महान कहलाती परन्तु देखो, उन्होने नाना प्रकार के पदार्थों का मुझे पान कराया और पान कराने के पश्चात् राजा रावण ने मन्त्रियों से वार्ता प्रकट करके मेरे समीप आ पहुँचे और यह कहा– कि आइए, मेरी राज सभा और मेरे राष्ट्र का भ्रमण कीजिए भगवन्!

कुबेर भवन

मेरे पुत्रो! देखो, कुक्कुट मुनि कहते है जब भ्रमण किया हमने तो मानो लंका में सबसे प्रथम उस भवन का निरीक्षण किया जिस भवन का निर्माण महाराजा कुबेर ने किया था और महाराजा कुबेर क्योंकि हमारे यहाँ बड़े द्रव्यपति कहलाते थे, तो उन्होने उस भवन का निर्माण किया। तो राजा रावण ने कहा प्रभु! ये हमारा कुबेर भवन कहलाता है और इस कुबेर भवन में नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहता है। मानो देखो, उन्होने व्रन्धं व्रहे लंका की प्रणाली तो बड़ी विचित्र मानी गई है क्योंकि राजा रावण से पूर्व लंका का स्वामी कुबेर था, इसलिए उन्होने भवन का निर्माण किया और महाराजा कुबेर से पूर्व लंका का स्वामी महाराजा महिदन्त और महाराजा महिदन्त ने भी नाना भवनों का निर्माण किया। मानो देखो, महिदन्त से पूर्व इस लंका का स्वामी महाराज शिव था। मेरे प्यारे! देखो, महाराज शिव कैलाश में तपस्या, राष्ट्र किया करते थे परन्तु देखो, लंका पर भी उनका साम्राज्य आ गया था। तो इसलिए देखो, ब्रह्मणं व्रहे संधा ऐसा मुझे प्रतीत हो रहा है बेटा! जैसे आज त्रेता के काल में ही हम भ्रमण कर रहे हो।

लंका के क्रियाकलाप

मेरे पुत्रो! देखो, महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का वो कथन, उन्होंने कहा– कि हे भगवन! स्वर्ण के भवनों का निर्माण कराया और भवनों का निर्माण कराते हुए उन्होने कहा–आओ, भगवन्! मैं आपको लंका के भवनों में जो, जो क्रियाकलाप हो रहा है उसका मैं निरीक्षण कराना चाहता हूँ। उन्होने कहा– हे प्रभु! देखो, ये जो अब मैं तुम्हें गमन करा रहा हूँ, ये स्वर्ण के गृह है जिन का निर्माण महाराजा शिव ने किया था। परन्तु देखो, ये मेरे यहाँ अनुसंधानशालाएँ है और इस अनुसंधानशालाओं में जो मैं आपको दृष्टिपात् करा रहा हूँ ये गुरूत्व परमाणु के ऊपर अन्वेषण होता रहता है। गुरूत्व कहते है

जो पृथ्वी से संबन्धित है। मानो पार्थिव तत्त्व हमारे यहाँ तीन प्रकार के विज्ञान में परमाणु माने गए है। एक परमाणु मुनिवरो! व्रहे है मानो जिसे गुरूत्व कहते है द्वितीय तरलतव है और तृतीय तेजोमयी। ये तीन प्रकार के परमाणु है जिससे मुनिवरो! देखो, इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड की आभा बनी हुई है और मुनिवरो! देखो, इसी प्रकार व्रणं देखो, पांच प्रकार की गतियाँ मानी गई है। प्रसारण, गति, ध्रुवा ऊधर्वा और आकुंचन मुनिवरो! देखो, ये पाँच प्रकार की गतियाँ हैं, जो दृष्टिपात आने वाला, जितना भी ये जगत है, दृष्टिपात आनेवाला जितना भी यह ब्रह्माण्ड है मानो देखो, यह पाँच प्रकार की गतियों में गतिवान हो रहा है और उसी में विज्ञानवेत्ता अपने में विज्ञान की धाराओं का मानो देखो, अपने में विमोचन करते रहते हैं और उसी की धाराओं में रत होते रहते हैं।

प्रकृति की गतियाँ

तो मेरे पुत्रो! मैं विशेषता में न जाता हुआ मैं परिचय देता रहता हूँ, मैं व्याख्या नहीं देने आता हूँ। विचार मुनिवरो! देखो, यह पाँच प्रकार की गतियाँ है, प्रसारण, गति, ध्रुवा, ऊधर्वा और आकुंचन इसी में सर्वत्र विज्ञान, चाहे वह विज्ञान इस पृथ्वी मण्डल का हो, चाहे मंगल का हो, चाहे मुनिवरो! किसी भी लोक लोकान्तरों में विज्ञानवेत्ता अपने में अनुसंधान करने वाले हो। तो मुनिवरो! देखो, वह इन्हीं पाँचो प्रकार की गतियाँ, तीन प्रकार के परमाणु, वायु में गमन कराता हैं ये पाँच प्रकार की गतियाँ प्रकृति की मानी गई है।

तो मेरे प्यारे! इसी में विज्ञान अपने में गतिवान होता रहता है तो उन्होंने, महात्मा कुक्कुट ने कहा कि जब वे पृथ्वी–विज्ञानवेताओं के समीप ले गए तो उन्होने कहा – कि मेरे यहाँ ये पृथ्वी के ऊपर अनुसंधान हो रहा है। कितनी दूरी पर कौन खनिज विद्यमान है, कितनी दूरी पर कौन–सा परमाणु अपने में गतिवान हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होने अप्रतं व्रहे कुक्कुट जी कहते हैं मैंने उसमें भ्रमण किया तो मानो, देखो, पृथ्वी के विज्ञानवेत्ता कितनी दूरी पर, कौन सा खनिज है, कौन सा मानो देखो, परमाणु गमन कर रहा है। जल कितनी दूरी पर शक्तिशाली बन रहा है। सूर्य की किरणें कहाँ, कहाँ क्या, क्या क्रियाकलाप कर रही है। तो मेरे पुत्रो! देखो, उसी में वो रत हो रहा है। उसी में गमन कर रहा है और खाद्यान के ऊपर अन्वेषण करने वाला मानो देखो, कितना खाद्य कितनी दूरी से ये उपज करके मेरे प्यारे! देखो, कितनी दूरी पर अनुवृत्त होता रहता है।

माता वसुन्धरा

तो विचार यह कि राजा रावण के यहाँ नाना विज्ञानवेत्ता बेटा! देखो, इसका अन्वेषण कर रहे है और विचार विनिमय हो रहा है। अरे, जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है। सूर्य की किरण आती है, चन्द्रमा की शीतलता आती है और वह उस जल को मानो तपायमान करा कर, उस जल को अपने में ऐसा निर्माणित कर देती जिससे वाहनों में क्रियाकलाप होने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, स्वर्ण गमन कर रहा है। सूर्य की किरणों के साथ, सूर्य के अप्रतं मानो देखो, स्वर्ण के परमाणुओं का गमन हो रहा है। वे पृथ्वी के गर्भ में रत्नों का निर्माण हो रहा है। हे मेरी प्यारी माँ वसुन्धरा! तू पृथ्वी है। तेरे गर्भस्थल में क्या नहीं है। माता! तू ममत्व को धारण कर रही है ये मानो जननी माता के गर्भ से तेरी ही तो गोद में आता है। तेरे ही आँचल में आता है। तू उसे खनिज खाद्य देकर के तू उसे महान बना देती है और जब जल का भरण कर लेते तो वह मानो समय, समय पर सूर्य की किरणों का जब ताप होता है तो वह वृष्टि रूप में परिणत हो जाता है। तो वही, तो वृष्टि रूप बनकर के, वहीं तो सोम बनकर के, मुनिवरो! देखो, इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करके ये नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। नाना प्रकार के अन्नाद को जन्म देने वाली। मेरे प्यारे! देखो, मम व्रहे यही तो वृत् कहलाया जाता है तो मानो देखो, वह सोमं ब्रह्माः सूर्य का ताप है, चन्द्रमा ग्रहण कर रहा है उससे मेघ बन रहे हैं। मेघ से इन्द्र का आक्रमण हो रहा हैं और वह बेटा! वत्रासुर से संग्राम हो करके, धीमी, धीमी वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है।

यन्त्रो से सूर्य की परिक्रमा

मेरे पुत्रो! देखो, आज मैं विशेषता में नहीं, केवल यह कि मुनिवरो! देखो, राजा रावण के यहाँ इन सब का अनुसंधान हो रहा था, अन्वेषण हो रहा था। राजा रावण ने कहा– आइए, भगवन्। ये मेरे यहाँ सूर्य विज्ञान के ऊपर अन्वेषण होता रहता है। तो राजा रावण के यहाँ ऐसे, ऐसे यंत्रों का निर्माण हो रहा था मुनिवरो! जिन यंत्रों में मानो देखो, विराजमान हो करके वैज्ञानिक जन सूर्य की किरणों के साथ में मुनिवरो! सूर्य की परिक्रमा करने वाले यंत्रों का निर्माण किया जा रहा था। मेरे प्यारे! देखो, सूर्य की किरणों के साथ में गमन करने वाला, हमारे यहाँ आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी सूर्य की किरणों के साथ मानो सूर्य की यात्रा करते रहे और मुनिवरो! देखो, मंगल की यात्रा भी करते रहे।

आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता में ले जाने के लिए नहीं, केवल यह कि मानो देखो, यंत्रो का निर्माण हो रहा है। सूर्य अपनी मानो किरणों के द्वारा अमृत को ऊर्ज्वा को, बिखेर देता है। वही ऊर्ज्वा हैं जो बेटा! पृथ्वी को अपने में धारण कर रही हैं। धारयामि बना रही है। मुनिवरो! देखो, वही किरणें हैं जो तेजोमयी बनकरके प्रकाश में रत कराते हैं वही तो प्रकाश है। मेरे प्यारे! उसी ऊर्ज्वा को जानकर के मानो विज्ञानवेत्ता देखो, सूर्य की परिक्रमा करता रहता है।

परमाणु में ब्रह्माण्ड दर्शन

तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेषता में नहीं जा रहा हूँ, विचार केवल यह मुनिवरो! देखो, जब उन्होने सूर्य अनुसंधानशाला और अग्नि अनुसंधानशाला में पहुँचे अग्नि मानो देखो, अपने में बड़ा नृत हो रहा है। अरे, वैज्ञानिकों ने बेटा! देखो, जैसे आयुर्वेद आचार्य 85 प्रकार की अग्नियाँ स्वीकार करते हैं। आयुर्वेद विज्ञानवेत्ता जब 85वीं धारा का विभाजन करते हैं तो उसमें से अरबों, खरबों प्रकार की अग्नि उत्पन्न हो जाती है। उन धाराओं का जन्म हो जाता है और वही धारा मुनिवरो! देखो, अग्नि की विचित्र धारा बन करके वैज्ञानिक जब उसमें रत होता है तो अणु और परमाणु में चला जाता है। अणु और परमाणु का विभाजन करता है तो बेटा! ब्रह्माण्ड का दर्शन होने लगता है और जब ब्रह्माण्ड का दर्शन होता है तो उसी अणु में से एक मानो त्रिसरेणु का जन्म होता है, उस त्रिसरेणु का विभाजन किया जाता तो उसमें भी ब्रह्माण्ड का दर्शन है। मेरे पुत्रो! कैसी अनन्तता वाला प्रभु का विज्ञान है। आज जब मानव इसके ऊपर अन्वेषण विचार विनिमय करता है तो बेटा! देखो, एक परमाणु है जो माता के गर्भस्थल में शिशु के साथ में, गमन करता है। जब वैज्ञानिकों ने भारद्वाज की विज्ञानशाला में जब उसका विभाजन किया गया तो बेटा! उसमें नाना पुरूषों के चित्र बेटा! उसमें देखो, दृष्टिपात आने लगे यंत्रों के द्वारा। तो माता के गर्भस्थल में भी इसी प्रकार का निर्माणवेत्ता निर्माण करता रहता, निर्माण हो रहा है।

धर्म से जीवन

अति क्रोध में नाग प्राण

तो बेटा! मैं विशेषता में न जाता हुआ केवल यह कि मुनिवरो! देखो, महाराज रावण और महात्मा कुक्कुट ने जब वहाँ से गमन किया, भ्रमण करते हुए उन्होने कहा– प्रभु! ये मेरे यहाँ एक मानो अग्नि– अनुसंधानशाला, अग्नि कहाँ रहती है? अग्नि मानव के शरीरों में प्रवेश करती रहती है। जब मुनिवरो! देखो, परमात्मा का जो एक विचित्र निर्माण है। जब मानव को अति क्रोध आता है तो उस अति क्रोध के आने पर मुनिवरो! देखो, एक नाग प्राण होता है वह उस मानव के शरीर में जो अमृत होता है उसे निगलता रहता है और विष को त्यागता रहता है। इसलिए विष बनकर के जब इतना विशाल बन जाता है तो वे मानव के शरीर से, रूग्ण के रूप में मानो देखो, क्षति के रूप में मुनिवरों! देखो, उद्‌बुद्ध होते रहते हैं। इसीलिए वेद के आचार्यों ने यह कहा है कि हे मानव! तो क्रोधी मत बन, क्रोधी बनेगा तो मानो तू ही अपने आवागमन के संस्कारों को जन्म देता रहता है। संसार तो यह इसी प्रकार गतिवान हो रहा है। हे मानव! तू यदि क्रोध में, क्रोधाग्नि में प्रवेश कर जाता है तो ये क्रोधाग्नि तेरे अमृत को मानो देखो, यह विष बना देती है और विष बना करके वह विष मानो देखो, रूग्णों के रूप में उसकी उद्‌बुद्धता होती रहती है। हे मानव! तू मानो देखो, नाग प्राण है तेरे शरीर में, वह अमृत को निगलता रहता है, उसका विष बनाता रहता है और अमृत मानो देखो, क्रोध आने पर, यह अमृत नष्ट हो जाता है।

एक दिवस और एक रात्रि में चन्द्रमा पर

मेरे प्यारे! विचारवेत्ता कहते है महात्मा कुक्कुट मुनि ने कहा कि राजा रावण के यहाँ इस प्रकार की विज्ञानशाला में क्रियाकलाप होता रहता है। विज्ञान के यंत्रों का, अग्नि यंत्रों का मुनिवरो! देखो, ओर भी नाना प्रकार के देखो, जलास्त्रों का निर्माण होता रहा। तो मुनिवरो! देखो, राजा रावण और महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने आगे भ्रमण किया। वे बेटा! सर्वत्र विज्ञानशाला को दृष्टिपात करके राजा रावण के पुत्र नारान्तक के द्वारा आ पहुँचे और नारान्तक से कहा कि प्रभु! आज मैं तुम्हारी विज्ञानशाला को दृष्टिपात करने आया हूँ। उन्होने कहा– अहो, भाग्य है भगवन्! आइए, विराजिए। तो नारान्तक के यहाँ बेटा! देखो, चन्द्रयात्री विद्यमान रहते, चन्द्रमा की यात्रा करते रहते थे। तो उन्होने कहा– प्रभु! मेरे यहाँ देखो, मैं यन्त्रों में विराजमान होता हूँ। मैंने भारद्वाज मुनि से इन यन्त्रों को प्राप्त किया है। मैं इनमें विद्यमान होता हूँ, तो प्रभु! मैं एक रात्रि और एक दिवस में, मैं चन्द्रमा में चला जाता हूँ। एक दिवस और एक रात्रि इतना मुझे आने के लिए पर्याप्त है।

यान से 72 लोकों में भ्रमण

और यह जो यन्त्र आप दृष्टिपात कर रहे है, यह यन्त्र ऐसा है इसमें विद्यमान हो करके, जब मेरे आश्रम से, विज्ञानशाला से, यंत्र उड़ान उड़ता है तो सबसे प्रथम ये चन्द्रमा में जाता है, चन्द्रमा से उड़ान उड़ता है तो बुद्ध में चला जाता है, बुद्ध से यह उड़ान उड़ता है तो ये शुक्र में चला जाता है, शुक्र से उड़ान उड़ता है तो मंगल में चला जाता है, मंगल से उड़ान उड़ता है तो मृचिका मण्डल में चला जाता है, मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ता है तो म्रेतकेतु मण्डल में गमन कर जाता है। म्रेतकेतु मण्डल से उड़ान उड़ता है तो स्वाति में चला जाता है, स्वाति मण्डल से उड़ान उड़ता है तो मूलकेतु मण्डल में प्रवेश कर जाता है, मूलकेतु मण्डल से उड़ान उड़ता है तो वासकेतु मण्डल में गमन करता है, वासकेतु मण्डल से उड़ान उड़ता है तो यह रोहिणीकेतु मण्डल में चला जाता है, और रोहिणी केतु मण्डल से उड़ान उड़ता हुआ वशिष्ठ में गमन करता है और वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ता हुआ यह अरून्धती मण्डल में चला जाता है। बेटा! मैं लोकों में जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह, उन्होंने कहा– सम्भव ब्रहे, हे प्रभु! यह यान 72 लोकों का भ्रमण करके यह यान पुनः मेरी विज्ञानशाला में गमन कर जाता है।

तो मेरे प्यारे! विज्ञान बड़ा अनूठा रहा है, मुनिवरो! देखो, जब मैंने रावण से यह कहा– रावण! तुम्हारा राष्ट्र तो ऐसा विज्ञान में रत हो गया हूँ जैसे सर्वत्र जगत् एक विज्ञानशाला हो। मानो मैं अपने को स्मरण नहीं कर रहा हूँ। विज्ञान में ही रत हो गया हूँ। मेरे प्यारे! देखो, आगे उन्होने भ्रमण किया, भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, चिकित्सालय में जा पहुँचे कि प्रभु! ये मेरे यहाँ चिकित्सालय है। वहाँ महात्मा भुन्जु के दोनो पुत्र अश्विनी कुमार थे मानो चिकित्सालय में रत रहते हैं। बेटा! नारान्तक अमृतं त्याग करके, ऋषि जब कहते है कि प्रभु! जब मैं उनकी विज्ञानशाला को त्याग करके और चिकित्सालय में आ गया तो मैंने उन दोनो अश्विनी कुमारों से चर्चा की और यह कहा– कि हे प्रभु! मैं गल्म बृहिः सुन्धाः मानो देखो, तुम्हारी गतियों को जानना चाहता हूँ।

आयुर्वेद की गति

मुनिवरो! अश्विनी कुमारों ने कहा– प्रभु! हमारे विज्ञान में मानो देखो, इस शरीर विज्ञान में, आयुर्वेद में इतनी गति कर पाएँ अभी तक, कि मानव के हृदय को और शरीर दोनों को पृथक् पृथक् कर देते हैं और 6–6 माह तक औषधियों में नियुक्त करके और 6 माह के पश्चात् उन्हे मानो एकोकी समन्वय करके पुनः गति प्रदान हो जाती है। हे प्रभु! आयुर्वेद में इतनी गति हमने की है।

तो मुनिवरो! देखो, यहाँ आयुर्वेद आचार्यों की वार्ता कृत करते हुए उनकी देखो, सुषेण से भी बहुत– सी चर्चाएँ हुई उन्होंने महात्मा दधीचि का नाम उद्‌घृत किया और महात्मा दधीचि के लिए उन्होंने कहा– कि ये विज्ञान हमने महात्मा दधीचि से प्राप्त किया। क्योंकि दधीचि और अश्विनी कुमार ये सब 'सम्प्रगी अत्व्रत' रहते थे।

रावण के राष्ट्र में अग्नि

तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण ने आगे भ्रमण कराया, मार्गशाला में ले गए और जहाँ उनके ऊर्ध्वा में मार्गशालाओं में निर्माणं ब्रहे निर्माणवेत्ता मानो देखो, अपने में वृत्त कर रहे थे। तब वे उनके द्वारा पहुँचे तो सुन्दर, सुन्दर मार्ग हैं। राजा रावण के राष्ट्र में तो बड़ी भव्यता थी तो उस समय मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कुक्कुट मुनि कहते हैं कि उस समय, जब मैंने सर्वत्र राष्ट्र का भ्रमण कर लिया, विज्ञानशालाएँ और देखो, समाज को दृष्टिपात किया तो उस समय राजा रावण ने यह कहा कि हे प्रभु! मेरा राष्ट्र आपको कैसा प्रतीत हुआ है?

तो उस समय देखो, मैंने यह कहा था, जो मैंने दृष्टिपात किया उच्चारण किया, उन्होने कहा– कि सम्भवं ब्रह्मे हे रावण! तुम्हारा राष्ट्र तो मुझे बहुत प्रिय लगा है। परन्तु शक्ति, मेरे में नहीं रही, मैं तो तुम्हारे विज्ञान को ही दृष्टिपात करता रहा, परन्तु मेरे विचार में तो प्रभु! यह आया है कि, तुम्हारा यह जो विज्ञान है यह मुझे बहुत प्रिय लगा है। परन्तु उसके पश्चात् भी मुझे अग्नि ही प्रतीत हो रहा है। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है रावण! तुम्हारे राष्ट्र में अग्नि

प्रदीप्त हो जाएगी। तब राजा रावण ने यह प्रश्न किया कि महाराज! ऐसा क्यों? उन्होने कहा– हे रावण! तुम्हे यह प्रतीत है, ऐसा मैं क्यों कह रहा हूँ क्योंकि तुम्हारे राष्ट्र में पृथ्वी– अनुसंधानशाला, जल–अनुसंधानशाला, अग्नि–अनुसंधानशाला, सूर्य–अनुसंधानशाला, चन्द्र–अनुसंधानशाला, लोक लोकान्तरों में जाने वाली अनुसंधानशालाएँ है और यन्त्रं वृहि है मानो तुम्हारे राष्ट्र में देखो, वह रसतम् चिकित्सालाएँ हैं और मार्गशालाएँ है। परन्तु मुझे ऐसा दृष्टिपात नहीं कराया रावण! जिससे तुम्हारे राष्ट्र में कहीं चरित्र का भी निर्माण हो रहा हो और चरित्रशाला तुमने मुझे दृष्टिपात नहीं कराई।

चरित्र निर्माणशाला का अभाव

क्योंकि राजा का जो राष्ट्र है, राजा का राष्ट्र मानो इस विज्ञान से ऊँचा नहीं बनता है लोक लोकान्तरों में जाने से ऊँचा नहीं बनता है, मार्गों से ऊँचा नहीं बनता, तुम्हारा देखो, राजा का राष्ट्र चिकित्सालाओं से भी ऊँचा नहीं बनता, राष्ट्र उस काल में ऊँचा बनता है जब देखो, राजा के राष्ट्र में चरित्र होता है और चरित्र का तुम्हारे यहाँ अभाव, तुमने मुझे कोई चरित्रशाला का दर्शन नहीं कराया है। तो हे रावण! मुझे यह प्रतीत हो रहा है कि तुम्हारी लंका मानो कुछ समय के पश्चात् मानो अग्नि के मुख मे न चली जाए।

अधिकारी को ही अधिकार

तो मेरे प्यारे राजा रावण ने यह स्वीकार किया। कुक्कुट जी ने कहा कि अमृतम् जब मैंने यह कहा कि तुम्हे यह प्रतीत है रावण! जब तुम्हारा राज्याभिषेक हुआ था, महात्मा पुलस्त्य ने तुम्हारा राज्याभिषेक किया, तो उस समय मुझे सभापति बनाया, मैंने तुम्हारे मस्तिष्क का अध्ययन किया और अध्ययन करके महात्मा पुलस्त्य से यह कहा कि ये देखो, राष्ट्र का अधिकारी नहीं है। यहां अधिकारी को अधिकार दिया जाना चाहिए । यदि समाज का कोई अधिपति बनाना है तो आचार्यो का कर्तव्य है कि अधिकारी को अधिकार दिया जाए अनाधिकारी को अधिकार देने से समाज में विकृतता आ जाती है। तो हे रावण! उस समय देखो, पुलस्त्य जी ने स्वीकार नहीं किया। मैंने ये कहा था ऋषि से कि प्रभु! ये रावण तुम्हारा पौत्र है परन्तु यह समाज को विज्ञान दे सकता है, समाज को नाना गृह दे सकता है परन्तु यह समाज को चरित्र और मानवता नहीं दे सकता। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उच्चारण करके मैं तो अपने आसन पर, आसन को त्याग कर भयंकर वन में चला गया।

तो विचार क्या मेरे इन विचारों का मैं इस सभा में तुम्हारी ऋषिवर आया हूँ यहाँ भारद्वाज जैसे विज्ञानवेत्ता है। रावण का जितना वंशलज था सबने भारद्वाज से शिक्षा ग्रहण की थी।

मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मं वृहि कृत्वाः देखो, महात्मा कुक्कुट ने कहा मैं दीक्षान्त विचार देने के लिए नहीं, मैं तो एक विचार देने के लिए आया हूँ कि राजा रावण के राष्ट्र में भी प्रायः इस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ हैं, और तुम यहाँ देखो, धनुर्याग कर रहे हो देखो, मुझे बड़ी प्रसन्नता हैं और देखो, महर्षि विश्वामित्र की अधयक्षता में, जिनका चरित्र बड़ा भव्य है, महान है कि इन ब्रह्मचारियों को जहाँ तुम अस्त्रों शस्त्रों की विद्या प्रदान कर रहें हो वहाँ इनका चरित्र, मानवता और आध्यात्मिकवाद इतना कुशल होना चाहिए जिससे यह अपने कर्तव्यवाद के ऊपर अपने में निष्ठित होकर के कर्तव्यवाद में परिणत हो करके परमात्मा को प्राप्त हो जाए।

चरित्र का अभिप्राय

तो बेटा! देखो, यह वाक्, आज मैं तुम्हे कोई विशेष चर्चा तो देने नहीं आया हूँ, विचार केवल यह कि ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके भिन्न, भिन्न प्रकार का विचार विनिमय करते रहे है। तो धनुर्याग किसे कहते हैं ? जहाँ अणु और परमाणु की शिक्षा वहाँ मानव का चरित्र भी ऊँचा होना चाहिए। चरित्र किसे कहते हैं ? चरित्र कहते है कि मानव को परमपिता परमात्मा को अपना आश्रित बना करके ही, गमन करना चाहिए। यदि हम मानो देखो, ये परमात्मा को अपना आश्रय स्वीकार नहीं करेंगे तो हमारा जीवन नग्न बन जाएगा और नग्न बनकरके जब आश्रय नहीं रहेगा तो मानो देखो, हम अपने में अभिमानी बन सकते है उस विज्ञान का दुरूपयोग कर सकते है और जिस काल में विज्ञान का दुरूपयोग होता है उस काल में मानो देखो, चरित्र और मानवीयता का ह्रास होता है।

अपनेपन का भान

तो ये आज का विचार विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए बेटा! संसार सागर से पार हो जाएँ। हम अपने में अपनेपन का भान करते रहे और जितने भी संसार का क्रियाकलाप है, वे चाहे राष्ट्रवेत्ता हो, चाहे विज्ञानवेत्ता हो। चाहे वे आध्यात्मिकवादी, सब ये चाहते है कि मेरे जीवन में अंधकार न आ जाए सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहे। तो प्रकाश के लिए मानव को तत्पर रहना है। प्रकाश को लाना है, अन्धकार को त्यागना है। ये है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा।

आज का वाक् क्या कह रहा है कि वह परमपिता परमात्मा जो यज्ञ स्वरूप है उसकी उपासना करनी है, वे पुरोहित है। उसका ब्रह्माण्ड है, माता वसुन्धरा की गोद में हम गमन करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्यां रथं मा आपाः रेवं भद्राः

ओ३म् यौ सर्वाः रथं मां गतौ शंनः वायु गतं मा अहं आपाः

ओ३म् यशश्चां ब्रह्मणः **1.10.88**

महात्मा दधीचि का कर्तव्यवाद———–02–3–1989

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आप हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद

वाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि जो परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है और उसका जो ज्ञान और विज्ञान है, वह भी अनन्तमयी माना गया है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके।

क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित हैं। वे सीमा में आने वाले नहीं हैं। इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा के लिए सदैव यह उद्‌गीत गाते रहे हैं कि हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाने वाले बने और उसका जो यह अनुपम जगत है। इस अनुपम जगत को जानने के लिए हम सदैव तत्पर रहें और अनुसंधान करते हुए मानो उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर प्रायः हमारा अन्वेषण होना चाहिए।

इन्द्र

परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र, हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है। क्योंकि वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्ततव माना गया है। आज के हमारे वेद के पठन पाठन में मानो इन्द्र को हमारे यहाँ बड़ी विशेषता दी गई है और वैदिक साहित्य में बेटा! इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा का है। क्योंकि वह इन्द्र है, जो संसार का रचयिता और शासन करने वाला है। वह परमपिता परमात्मा इन्द्र के नाम से सम्बोधित किया जाता है। वेद का मन्त्र कहता है इन्द्रश्चं ब्रह्माः लोकाम् मानो जो लोक लोकान्तरों का स्वामित्व करने वाला है वह इन्द्र है मानो हमारे वैदिक साहित्य में इन्द्र के नाना पर्यायवाची शब्दों की विवेचना भी होती रही है। जहाँ परमपिता परमात्मा का नाम इन्द्र है वहाँ इन्द्र नाम आत्मा का भी है। जो मानो देखो, इन्द्रियों का स्वामित्व करने वाला है और इन इन्द्रियों को चेतना देने वाला है मानो उसे अनुशासन में धारयामि बनाता है वह इन्द्र कहलाता है।

योगेश्वर

तो इसलिए उस परमपिता परमात्मा को इन्द्र और आत्मा को भी इन्द्र कहा गया है क्योंकि वे हमारे अन्तर्हृदय में मानो इन शरीरों में आत्मा इन्द्र बन कर के रहता है। हे इन्द्रो समं ब्रह्माः लोकाम् जो अनुशासन करने वाला है। बेटा! योगेश्वर जब अपने में अनुशासन करता है तो मानो वह इन्द्रियों का नेतृत्व करने वाला योगेश्वर कहलाता है और वह इन्द्र की उपाधि से सुसज्जित हो जाता है तो इसलिए उस परमपिता परमात्मा को और आत्मा को इन्द्र कहते हैं।

परन्तु वेद की आख्यिका कुछ और ही उद्‌गीत गाती रहती है। इन्द्र नाम बेटा! जहाँ परमात्मा और आत्मा का है वहाँ राजा का नाम भी इन्द्र है। बेटा! वह राजा इन्द्र कहलाता है। हमारे यहाँ परम्परागतों से बेटा! एक उपाधि मानी गई है। उन उपाधियों के क्षेत्र में जब हम गमन करते हैं तो मानो देखो, वहाँ राजा का नाम इन्द्र आता है। इन्द्र कहते हैं राजा को और वह राजा इन्द्र बनता है जो 101 अश्वमेघ याग कर लेता है। मेरे पुत्रो! देखो, 101 अश्वमेघ याग का नेतृत्व करने वाले को इन्द्र कहते हैं। परन्तु उस इन्द्र के अमृतं ब्रह्मा लोकाम्, वह जो इन्द्र है, उस इन्द्र के यहाँ घृणा और राजियता भी आ जाती है। जब वह अपने उपाधि को प्राप्त हो जाता है।

माताओं से प्रेरणा

परन्तु मुझे एक आख्यिका स्मरण आ रही है। आज मैं बेटा! तुम्हें उस क्षेत्र में ले जा रहा हूँ जहाँ ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर कर्तव्यवाद में कितने निहित रहे हैं मुझे वह काल स्मरण है बेटा! हमारे यहाँ महर्षि भुंजु के दो पुत्र अश्विनी कुमार, जो बेटा! देखो, आयुर्वेद में बड़े पूर्णत्वं ब्रह्माः पूर्णत्व को प्राप्त होते रहे, वे मानो देखो, अनुसंधान करते आयुर्वेद के, नाना प्रकार की वनस्पति विज्ञान में देखो, रत होते थे। बेटा! उनका 101 वर्ष का अध्ययन रहा था कि हम आयुर्वेद को जानने वाले बने। परन्तु उन्हें यह प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई? एक समय बेटा! देखो, उन अश्विनी कुमारों से, महर्षि दत्तु ने कहा कि हे भगवन, हे अश्विनी कुमारों! तुम यह जो आयुर्वेद के ऊपर अध्ययन कर रहे हो, तुम्हें यह शिक्षा किसने दी है? तो मुनिवरो! देखो, दोनों अश्विनी कुमार बोले – प्रभु! प्रेरणा माताओं से प्राप्त होती रही है। क्योंकि माताएँ जिस प्रेरणा को हमारे हृदयों में प्रवेश कर देती हैं वह प्रेरणा बनी रहती है और उन्हीं प्रेरणाओं के आधार पर हम अपने क्रियाकलापों में रत हो जाते हैं।

चन्द्रमा से सोम

तो मानो देखो, जिस समय अप्रतम् ऐसा हमें माता ने उच्चारण किया, जब हम गर्भस्थल में थे। तो मानो देखो, यह चन्द्रमा, सोम कहलाता है। चन्द्रमा से मुनिवरो! देखो, सोम बन करके वह जब पृथ्वी पर आता है तो माता उसे ग्रहण करती रही है और मुनिवरो! देखो, माता उसे चन्द्रे, अप्रतम् रात्रि काल में, अहिल्या की गोद में जाकर के और वह चन्द्रमा की कांति को अपने में सींचती रहती है मानो देखो, औषध विज्ञान में जितना रस है वह सोम कहलाता है और वह सोम मुनिवरो! देखो, हमें चन्द्रमा से प्राप्त होता है जितना भी देखो अन्न इत्यादि हो या खनिज है मेरे पुत्रो! देखो, उसमें चन्द्रमां की कांतियों की पुट लगी रहती है। तो उसे प्रायः देखो, ग्रहण करने वाले ग्रहण करते रहते हैं।

ब्रह्म की जिज्ञासा

तो मुनिवरो! देखो, अश्विनी कुमार ने जो प्रेरणा पाई वह माता की लोरियों में पाई और माता उन्हें उपदेश देती रहती कि आयुर्वेद को जानो, जिससे तुम्हारी आयु दीर्घ बने और देखो, आयुवान् बनकर के तुम परमपिता परमात्मा की महती को जान सको। मेरे प्यारे! देखो, अश्विनी कुमारों ने 101 वर्ष तक बेटा! औषध विज्ञान को जाना। परन्तु जानने के पश्चात्, उनके हृदय में यह आकांक्षा उत्पन्न हुई कि हम अब आयुर्वेद को जानने के पश्चात्, हम ब्रह्मवेत्ता बनना चाहते हैं क्योंकि प्रत्येक मानव का अन्तरात्मा, प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मैं ब्रह्मवेत्ता बनूं और ब्रह्म की महती को जान करके इस सागर से पार हो जाऊँ।

तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है अश्विनी कुमारों ने ये विचारा, तो वे ऋषि मुनियों के समीप पहुँचे, सबसे प्रथम वह महात्मा भृगु के द्वार पर पहुँचे। महाराजा भृगु ने कहा – आओ, अश्विनी कुमारों! विराजो, वे विराजमान हो गए। उन्होंने कहा – हे प्रभु! हम इसलिए आपके आश्रम की शरण में आए हैं कि हम आत्मज्ञान चाहते हैं? क्योंकि आयुर्वेद हमें पूर्णत्व, जितना हम जानना चाहते थे, हम जान पाए हैं। अब हमारी इच्छा यह है कि हम ब्रह्मवेत्ता बने। तो हे प्रभु! मुझे आप ब्रह्मवेत्ता की शिक्षा प्रदान कीजिए।

धर्म से जीवन

महाराजा इन्द्र का आदेश

मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने यह कहा तो ब्रह्मणं बृहि सम्भवः उन्होंने कहा—कि मैं ब्रह्मवेत्ता की विद्या तुम्हें प्रदान नहीं करुंगा। उन्होंने कहा क्यों? क्योंकि अभी अभी महाराजा इन्द्र, जो त्रिपुरी में वास करते हैं उनके यहाँ से घोषणा हुई है कि अश्विनी कुमारों को जो ब्रह्म विद्या देगा, मानो उसके कण्ठ के ऊपरले भाग को दूरी कर दिया जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा भृगु ने कहा – तो मैं तुम्हें यह विद्या प्रदान नहीं करुंगा। क्योंकि देखो, जिसमें हम रहते हैं उसका हमें पालन करना चाहिए, उनकी वार्ताओं का, जिस राजा के राष्ट्र में रहते हैं।

मेरे प्यारे! देखो, महात्मा अश्विनी कुमारों ने कहा – हे प्रभु! यदि कोई राजा अशुद्ध वाक् उच्चारण करता है तो मानो देखो, उसके लिए हम कैसे तत्पर हो जाएं, कि वह विद्या न प्राप्त की जाए। उन्होंने कहा – तो भई मैं तो ऐसा नहीं कर पाऊँगा।

महर्षि पाण्डुक्त

मेरे प्यारे! देखो, महात्मा ब्रह्मणे क्रदा आन्सुति अस्सुति मुनिवरो! देखो, महात्मा से आज्ञा पाकर अश्विनी कुमारों ने गमन किया और भ्रमण करते हुए वे मुनिवरो! देखो, महर्षि पाण्डुक्त ऋषि महाराज के द्वार पर पहुँचे। पाण्डुक्त ऋषि महाराज ने उनका आदर किया और उन्होंने कहा हे प्रभु! तुम्हारा कैसे आगमन हुआ? अश्विनी कुमारों ने कहा – हे प्रभु! हम ब्रह्म विद्या को पान करने के लिए आए हैं और हमें ब्रह्मविद्या प्रदान कराइए।

अश्वमेघ

मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि यह विद्या तो मैं प्रदान नहीं करुंगा। क्योंकि महाराजा इन्द्र के यहाँ से घोषणा हुई है कि जो इनको विद्या प्रदान करेगा उसके कण्ठ के ऊपर का भाग दूरी कर दिया जाएगा। तो हम इन्द्र के राष्ट्र में रहते हैं। मानो इन्द्र देखो, त्रिपुरी का क्या, इस पृथ्वी का राजा है और वह देवताओं का राजा इन्द्र कहलाता है। और इन्द्र वह कहलाता है जो 101 अश्वमेघ याग कर लेता है। और अश्वमेघ का अभिप्राय यह है कि जो राजा मानो सर्वत्र पृथ्वी के राजाओं को विजय करके, जो याग करता है वह अश्वमेघ याग कहलाता है और वह 101 इस प्रकार का याग करने वाला इन्द्र कहलाता है और वह देवताओं का राजा इन्द्र है। उन्होंने कहा तो प्रियतम।

महात्मा दधीचि

मेरे प्यारे! अश्विनी कुमारों ने वहाँ से भ्रमण करते हुए महात्मा दधीची के द्वार पर पहुँचे। महात्मा ने उनका आदर किया और बोले आओ, अश्विनी कुमार तुम अतिथि स्वीकार करो, तो उन्होंने बेटा! भिन्न भिन्न प्रकार के मानो कन्दमूल इत्यादि पान पराए, पान कराने के पश्चात् उन्होंने कहा कि कहो अश्विनी कुमार तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा – प्रभु! हम इसलिए आए हैं सम्भवं ब्रह्मणः कृतं वृहि व्रतोः हम इसलिए आए है भगवन! क्योंकि हम ब्रह्मविद्या का पान करना चाहते हैं। मेरी मनोनीत इच्छा है कि हम ब्रह्मवेत्ता बने, क्योंकि हमने आयुर्वेद का अध्ययन किया है। 101 वर्ष तक हमने आयुर्वेद के ऊपर अध्ययन किया है नाना वनस्पतियों को जाना है उसके पश्चात् हम जितना जानना चाहते थे, वास्तव में प्रभु का जो यह राष्ट्र है इसमें जो वनस्पति विज्ञान है, वह अनन्तमयी है। परन्तु हम जितना जान पाते थे उतना हमने जान लिया है। हे प्रभु! हमारे हृदय में एक प्रेरणा जागी है कि हमें ब्रह्मवेत्ता भी बनना चाहिए। तो प्रभु हम ब्रह्म की विद्या को पान करने के लिए आए हैं। हमने यह विचारा है कि महात्मा दधीचि ही ब्रह्मविद्या को जानते हैं। महात्मा दधीचि ने उन्हें आसन दिया और महात्मा दधीचि बोले कि ब्रह्मविद्या अवश्य प्रदान की जाएगी।

कर्तव्यपालन

मेरे पुत्रो! देखो, जब महात्मा दधीचि के यह वाक् श्रवण किए गए कि अश्विनी कुमार ब्रह्मविद्या को पान करने के लिए महत्मा दधीचि के आश्रम में गए और उन्होंने यह स्वीकार कर लिया कि मैं तुम्हें ब्रह्मविद्या प्रदान करुंगा। तो मानो देखो, ऋषि मुनियों में एक कौतुक बना और मानो देखो, नाना विचार विनिमय होने लगे, उन विचारों को लेकर के कुछ, महात्मा दधीचि के द्वार पर आए।

महात्मा दधीचि ने कहा कहो, भगवन्! कैसे आगमन हुआ? उन्होंने कहा – प्रभु! हमने श्रवण किया है कि तुम महात्मा अश्विनी कुमारों को ब्रह्मविद्या प्रदान कर रहे हो। उन्होंने कहा—प्रभु! अवश्य करुंगा। उन्होंने कहा – कि राजा इन्द्र के यहाँ से जो घोषणा हुई है उसे आप स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने कहा – कि नहीं, मैं तो कर्तव्य का पालन करुंगा। कर्तव्य यह कहता है कि जो ब्रह्मविद्या को पान करने के लिए आया है। उसे ब्रह्मविद्या देना हमारा कर्तव्य है। हम एक स्थली पर तो राष्ट्र हैं, क्योंकि राजा जो होते हैं वह मानो देखो, ब्रह्मवेत्ताओं के निचले भाग में रहते हैं, ब्रह्मवेत्ता का आसन सदैव ऊर्ध्वा में गमन करता रहता है और बुद्धिमान जो होते हैं, जो आत्मवेत्ता पुरुष होते हैं। वे राजाओं की स्थली से ऊर्ध्वा में चिन्तन करते हैं। तो अमृतं ब्रह्माः लोकाम् क्या ब्रह्मविद्या हम इन्हें प्रदान नहीं करेंगे। उन्होंने कहा – कि इन्द्र के यहाँ से घोषणा हुई है। महात्मा दधीचि ने कहा कि इन्द्र के यहाँ से यह घोषणा बड़ी विशुद्धः, बड़ी अशुद्धता में मुझे दृष्टिपात आ रही है, वे विशुद्ध नहीं है, अशुद्ध है। क्योंकि राजा के हृदय में घृणा आ गई है और जहाँ राजा के हृदय में घृणा आई, व्यक्तिगत से तो मानो उस समय उसकी राष्ट्रीय स्थली से मानो नामोकरण पवित्र नहीं रह पाता। उसके हृदय में यह विचार आ गया कि तेरी इन्द्रपुरी को कोई विजय कर ले। हमारा उद्‌देश्य ये नहीं है, कि इन्द्र की मानो इन्द्रपुरी को विजय करे या ये राजा की स्थली पर विद्यमान हो जाए, ऐसा नहीं परन्तु यह हमारा कर्तव्य है कि हम इनको ब्रह्मविद्या अवश्य प्रदान करें।

कर्तव्यवाद की अनिवार्यता

मेरे प्यारे! देखो, महात्माओं ने कहा – भगवन्! यदि आपके कण्ठ के भाग को दूरी कर दिया, तब क्या करोगे, तब तुम्हारा क्या अस्तित्व रहेगा। उन्होंने कहा – चला जाए, प्राण चले जाए परन्तु मानो अपने कर्तव्य से विहिन नहीं होना चाहिए। यह शरीर तो अवश्य त्यागा जाएगा, यह शरीर आज नहीं तो कल, प्रभु की गोद में चला जाएगा और संस्कार लेकर यह आत्मा चला जाएगा परन्तु देखो, कर्तव्यवाद, मानव के लिए बहुत अनिवार्य है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् उन्होंने प्रकट किया तो मुनिवरो! देखो, ब्राह्मण देखो, अपने आसन को चले गए और भी नाना ऋषि आए। परन्तु महात्मा दधीचि ने कर्तव्य के आगे किसी के वाक् को स्वीकार नहीं किया।

धर्म से जीवन

अश्व के मुखारबिन्द से ब्रह्म विद्या

मेरे प्यारे देखो, ब्रह्मविद्या देने से पूर्व एक समय मध्य रात्रि में महात्मा दधीचि ने कहा – कि तुम मेरी क्या सहायता करोगे? यदि मैंने तुम्हें ब्रह्मविद्या प्रदान की तो अश्विनी कुमारों ने, दोनों ने कहा कि प्रभु आप जो चाहते हैं। उन्होंने कहा – कि मेरा शरीर तो कण्ठ से दूरी हो ही जाएगा। मुनिवरो! उन्होंने कहा – कोई बात नहीं, मेरे प्यारे! देखो, दोनो अश्विनी कुमारों ने कहा प्रभु! हम देखो, अश्व की भाषा को जानते हैं मानो अश्व की भाषा से आप यदि ब्रह्मविद्या प्रदान कर सकें तो हम देखो, उनकी भाषा, उनके क्रियाकलापों को हम जानते हैं प्रभु! मानो देखो, तुम हमें उससे ब्रह्मविद्या प्रदान करो।

तो बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है महात्मा दधीचि बड़े प्रसन्न हुए और दधीचि के कण्ठ के भाग को बेटा! देखो, उन अश्विनी कुमारों ने नाना प्रकार की औषधियों का, उन्होने पिपात बनाया और पिपात बनाकर के उन औषधियों में उनके कण्ठ को स्थिर कर दिया और मानो देखो, अश्व का मुख कहीं से, कण्ठ से लाकर के बेटा! देखो, उनके कण्ठ पर ज्यों का त्यों मानो देखो, अपनी अकृतम् उस पर स्थिर कर दिया।

मेरे प्यारे! देखो, महात्मा दधीचि ब्रह्मविद्या प्रदान करने लगे मानो देखो, अश्व के मुखारबिन्द से ब्रह्मविद्या को उच्चारण करने लगे कि यह जो ब्रह्म है वह सर्वज्ञ है। मानो कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ ब्रह्म, परमपिता परमात्मा न रहता हो मानो देखो, ब्रह्म का चिन्तन करना, ये ब्रह्म का जो अनुपम जगत है ये एक अनुवृत्ति माना गया है मानो देखो, यह महानता में गमन करने वाला है तो अश्विनी कुमारों ने बेटा! देखो, ब्रह्मविद्या को अस्सुतम देखो, पान करने लगे मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मण व्रतेः जब महात्मा दधीचि ब्रह्मविद्या देने लगे तो बेटा! ब्रह्मविद्या में वह पारायण होने लगे परन्तु देखो, इन्द्र को जब यह प्रतीत हुआ तो इन्द्र ने बेटा! देखो, अपने शस्त्रों से महात्मा दधीचि के कण्ठ को दूरी कर दिया।

महात्मा दधीचि को पुनः कण्ठ स्थापना

मेरे प्यारे! देखो, अश्विनी कुमारों ने जो औषधियों में नियुक्त किया हुआ उनका कण्ठ था। बेटा! वह उनके कण्ठ के ऊपर ज्यों की त्यों निहित करके उन्होंने बेटा! देखो, कुछ औषधियां जैसे शैलवृत्तिका, मृतिवेतकेतु, सम्भू गन्ध मेरे प्यारे! देखो, ओर भी नाना प्रकार की, उन्होंने दस औषधियों को एकत्रित कर, उसका पिपात बनाया और लेपन कर दिया। मेरे प्यारे! देखो, उनका कण्ठ ज्यों का त्यों रहा। ब्रह्मविद्या पुनः प्रदान होने लगी और मुनिवरो! देखो, इन्द्र को यह प्रतीत होता रहा परन्तु एक समय उन्होंने कण्ठ को दूरी कर दिया, द्वितीय, ऐसा कोई नियम नहीं था। तो मुनिवरो! देखो, ब्रह्मविद्या उन्होंने प्रदान की। और ब्रह्मविद्या का पान करने वाले अश्विनी कुमार मेरे प्यारे! बड़े प्रसन्न हुए कि हमारा आयुर्वेद भी मानो देखो, सुसज्जित है और ब्रह्मविद्या को पान करना भी महात्मा दधीची का यह कर्तव्य अस्सुतम् माना गया है।

आत्मा का लोक

तो मेरे प्यारे देखो, विचार यह कि ब्रह्मविद्या पान करते रहें। ब्रह्मविद्या वह देते रहे और ब्रह्मविद्या क्या मुनिवरो! देखो, अपने को जानने का नाम ब्रह्मविद्या कहा जाता है। उन्होंने कहा – कि हे अश्विनी कुमारों अपने दर्शन को जानने का प्रयास करो जैसे एक सयम महात्मा जाल्वी के यहाँ बेटा! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धी और त्रितकेतु और यज्ञदत्त तीनों ब्रह्मचारी पहुँचे और उन्होंने देखो, महात्मा जाल्वी से कहा था कि आत्मा का लोक क्या है? तो मानो देखो, उन्होंने वर्णन किया कि आत्मा का लोक यह पंचमहाभूत है।

मेरे प्यारे! देखो, पंचमहाभूतों में क्या है? देखो, सबसे प्रथम पृथ्वी, आपो, अग्नि मेरे प्यारे! देखो, वायु और अवकाश जिसे अन्तरिक्ष कहते हैं ये पंचमहाभूतों से मानों निर्माणित किया हुआ मानो यह मानव का शरीर है और इसमें आत्मा वास करता है। यदि आत्मा नहीं रहेगा, तो इस शरीर का कोई अस्तित्व नहीं। यदि आत्मा के ऊपर मनन और चिन्तन किया जाए तो आत्म स्वरूप मानो अपनी आभा में निहित रहता है।

मानव दर्शन

तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा दधीचि ने कहा कि इस मानव दर्शन के ऊपर विचार विनिमय होना चाहिए। यह जो मानव दर्शन है इस मानव दर्शन के ऊपर हमारा अधिपत्य होना चाहिए। यह मानव दर्शन है, पंचमहाभूतों को जानने से हमें यह प्रतीत हो जाता है। इसमें प्राण सखा है मानों देखो, ज्ञानं ब्रह्म इन्द्रियां है जो मुनिवरो! देखो, वासना से जिनका समन्वय रहता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, यह ब्रह्मवेत्ता अपने में ब्रह्म की आभा में सदैव रत रहे। तो मुनिवरो! देखो, महात्मा दधीचि ने लगभग दो वर्ष तक उन्हें ब्रह्मविद्या में पारायण करा दिया और मुनिवरो! दो वर्ष तक उन्होंने प्राण विद्या को प्रदान किया और उन्होंने कहा कि इस प्राण विद्या को जानों, क्योंकि प्राणविद्या एक चिकित्सा भी कहलाती है, प्राणविद्या एक योग में जाने का नामोकरण भी कहा गया है। जैसे मानों देखो, यदि माता ये जान ले कि यह प्राणविद्या क्या है? तो मानो देखो, माता जब प्राण और अपान दोनों का मिलान करना जानती है तो मानो देखो, अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रकट करने लगती है।

गर्भस्थ शिशु से वार्ता

मेरे पुत्रो! देखो, वह माता कहती है हे आत्मा! तू मेरे गर्भस्थल में विद्यमान है। तेरा अस्तित्वं ब्रह्मे मेरे पुत्रो! देखो, माता उससे वार्ता प्रकट करती है। बेटा! देखो, यह प्राणविद्या बड़ी विचित्र विद्या है। इसी विद्या को पान करने वाले बेटा! देखो, अपने में प्राणायाम करके अन्तरिक्ष में यात्रा करना प्रारम्भ करते हैं। महात्मा अश्विनी कुमार देखो महर्षि दधीचि के आश्रम में, जब उन्होंने प्राणविद्या को जानने का प्रयास किया। क्योंकि महात्मा जहाँ देखो, ब्रह्मविद्या में पारायण थे वहाँ वो प्राण विद्या को भी जानते थे। क्योंकि प्राणविद्या का समन्वय मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्म से समन्व्य रहता है। ब्रह्म से ही ओझो वृत्ति वार्ता प्रकट करने लगते हैं।

प्राणविद्या

मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है प्राणविद्या को जब जानने लगे तो प्राणविद्या बेटा! ऐसी विद्या है जो मुनिवरो! देखो, रेचक, कुम्भक और पूरक ये तीन प्रकार होते हैं प्राणायाम के, परन्तु एक खेंचरी मुद्रा होती है एक मानो देखो, शीतली प्राणायाम होता है जो इनको जानता रहता है। बेटा! वह अपने अन्तरात्मा के, अमृतों को जानने लगता है यदि माता जानने लगती है तो माता बेटा! अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रकट करने लगती है। अपने शिशु से वार्ता प्रकट करने लगती है। तो बेटा! महात्मा दधीचि ने अश्विनी कुमारों को यह विद्या प्रदान की। बेटा! देखो, हमारा यह विचार चल रहा था कि इन्द्र किसे कहते हैं?

धर्म से जीवन

बेटा! देखो, इन्द्र उसे कहते हैं जो मानो देखो, राजाओं का भी राजा होता है। आत्मा को भी इन्द्र कहते हैं जो प्राण कि द्वारा एकाग्र करके बेटा! प्राण की अपान में और व्यान को उदान में बेटा! जो समावेश जानते हैं वो अपने चित्त मण्डल के मानों संस्कारों को भी जानने लगते हैं। मेरे पुत्रों! इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ ये बड़ा गम्भीर विषय कहलाता है योग का, परन्तु विचार यह कि इन्द्र कौन? जो राजा है। यहाँ आत्मा और परमात्मा का नाम इन्द्र है वहाँ राजा का नाम भी इन्द्र है बेटा! और वह कौन सा राजा, जो महात्मा अश्विनी कुमारों को ब्रह्मविद्या प्रदान कर सकता है। मेरे पुत्रो! देखो, महात्मा दधीचि अमृतं ब्रह्मा वे योगेश्वर कहलाते हैं।

हमारे यहाँ दधीचि की भी देखो, कई प्रकार की, विवेचनाएँ मानी गई हैं। जैसे दधीचि नाम बेटा! ऋषि का, दधीचि नाम मुनिवरो! देखो, यहाँ पर्वतों को भी कहा गया है। महाराजा इन्द्र को जब यह प्रतीत हुआ कि देवताओं के लिए संग्राम करना है और दधीचि के यहाँ उनकी अस्थियों से मानो देखो, तुझे एक अप्रतम्, एक यन्त्र का निर्माण करना है जिससे दैत्यों का हनन होना है। तो बेटा! विचार यह, यहाँ महात्मा दधीचि नहीं माना गया है। यहाँ मुनिवरो! देखो, ब्रह्मणे वृतम् दधीचि उस विद्या को जानते थे, वह खनिज कहाँ प्राप्त होगी।

ब्रह्म विद्या रूपी वज्र

तो बेटा! देखो, महाराजा इन्द्र वहाँ से गमन करते हैं और वह महात्मा दधीचि के द्वार पर पहुँचे। महात्मा ने उनका स्वागत किया। वे विराजमान हो गए, बोले – कहो, इन्द्र कैसे आगमन हुआ है? उन्होंने कहा कि प्रभु! मैं उस विद्या को जानना चाहता हूँ क्योंकि मुझे दैत्यों को नष्ट करने के लिए वज्र का निर्माण करना है और वह वज्र का धातु, वे कहते हैं वह महात्मा दधीचि की अस्थियों से ही निर्माण होगा और उससे वह यत्र व्रहे, उससे दैत्यों का नष्ट करना है। देखो, मुनिवरों यहाँ शरीर की अस्थियों का वज्र नहीं बनना था। बेटा! देखो, यहाँ, वज्रं ब्रह्माः देखो, इन्द्र कहते हैं राजा को और देवताओं का राजा इन्द्र आत्माओं को भी कहते हैं बेटा! देखो, आत्मा और दधीचि कहते हैं बेटा! देखो, ब्रह्म विवेचना को दधीचि अस्सुतो कहते हैं।

मेरे प्यारे! जब उन्होंने यह वर्णन कराया कि अस्सुतं ब्रह्मे, वज्र का निर्माण करना है। तो वज्र क्या है? बेटा! वह अमृताम् जिससे दैत्य समाप्त होते हैं वह वज्र है मुनिवरो! देखो, ब्रह्मविद्या का वज्र, और ब्रह्मविद्या से मुनिवरो! देखो, मानव इन्द्र बनता है और इन्द्र बनकर के बेटा! मृत्यु को विजय कर लेता है। एक तो रूप इसका यह बनता है।

द्वितीय रूप यह बनता है कि दधीचि कहते हैं पर्वतों को, और पर्वतों में यह खनिज विद्यमान रहता है। जिससे बेटा! देखो, राजा के यहाँ वैज्ञानिक जन पर्वतों से उस खनिज को जान करके नाना प्रकार के देखो, वज्रों का निर्माण करते है। यन्त्रों का निर्माण करके उससे मानो देखो, असुर प्रवृत्ति जब समाज में बलवती होती हैं तो उसे नष्ट किया जाता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के स्वरूप माने गए हैं। देखो, यहाँ कहीं इन्द्र आत्मा को माना है तो कहीं राजा को माना है। राजा उन वज्रों का निर्माण करता है जिससे बाह्य जगत में दैत्य समाप्त हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, जो खनिज विद्यमान है इसके गर्भ में, पर्वतम् देखो, यहाँ पर्वतों का नाम भी बेटा! दधीचि कहा गया है। उससे वह खनिज को प्रदान कर देते हैं।

इन्द्र वत्रसुर संग्राम

तो मेरे पुत्रों! विचार विनिमय क्या, यहाँ राजा का नाम भी इन्द्र है और इन्द्र नाम बेटा! देखो, विद्युत को भी कहा जाता है वह कौन सी विद्युत? बेटा जो मानो देखो, दक्षिणाय रूपों में गमन करने वाली है। जब बेटा! देखो, मेघ मण्डलों का निर्माण होता है तो मेघों को बेटा! देखो, यहाँ वत्रासुर कहा जाता है। जब यह वत्रासुर मानो बलिष्ठ हो जाता है तो उस समय इन्द्र और शचि जो उनकी पत्नी है और इन्द्र नाम बेटा! विद्युत का है और शचि नाम मुनिवरो! देखो, ब्रह्मणे व्रता देखो, वह शचि नाम वायु का है। जब वायु और इन्द्र दोनों यहाँ कहीं कहीं बेटा! देखो, इन्द्र वायु को माना है और शचि नाम देखो, विद्युत का माना है चलो, यह भी स्वीकार किया जा सकता है।

परन्तु विचार यह कि मुनिवरो! देखो, इन्द्र अपने वज्र को लेकर के वत्रासुर को नष्ट करते हैं। वह जो विद्युत रूपी जो वज्र है मानो देखो, वायु रूपी जो वेग है उसे वह छिन्न भिन्न करके वहाँ बेटा! धीमी धीमी वृष्टि हो जाती है और वृष्टि से बेटा! पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार के व्यंजनों का जन्म हो जाता है। तो बेटा! विचार मानो देखो, इन्द्र नाम बेटा! वायु को भी कहते हैं। शचि नाम विद्युत का है मुनिवरो! देखो, जब दोनों परस्पर बेटा! वत्रासुर कहते हैं। मेघो को उससे वृष्टि प्रारम्भ होती है और वृष्टि के होने पर नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों का निर्माण हो जाता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, यह बड़ा विचित्र एक रूपक माना गया है। जो हमारे वैदिक साहित्य से हमें प्रायः प्राप्त होता रहता है। तो मुनिवरो! देखो, इन्द्र नाम जहाँ वायु का है, इन्द्र नाम मेरे प्यारे! देखो, सूर्य को भी कहते हैं क्योंकि वह नाना प्रकार की ऊर्ज्वा देकर के संसार को प्रकाशमान बनाते हैं, जो प्रकाश को देने वाला है वह इन्द्र कहलाता है।

मानवीय शरीर से संग्राम

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष तुम्हें विवेचना देने नहीं आया हूँ, मैं विचार तुम्हें यह प्रकट कर रहा हूँ कि मुनिवरो! देखो, इन्द्र नाम पर्यायवाची शब्दों में, इन्द्र की बड़ी विचित्र विवेचना प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आती रही है। इन्द्र नाम बेटा! देवताओं का, राजा इन्द्र है और वह देवता कौन है? बेटा! जब देवासुर संग्राम होता है। तो जो देव प्रवृत्ति वाला है वह इन्द्र कहलाता है। मानवीय शरीर में बेटा! देवासुर संग्राम होता रहता है जब योगेश्वर बनने के लिए रमण करता है तो इन्द्र बेटा! अपनी आभा में रत होकर के मुनिवरो! वह योगेश्वर बन जाता है। असुर प्रवृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और देव प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव हो जाता है। तो देवता वह इन्द्र होता है वह ही देवताओं का राजा बनता है।

उपाधियाँ

तो यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या, कि हमारे वैदिक साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द माने गए हैं। पर्यायवाची विवेचना मानी गई है। परन्तु देखो, उनको जानना बहुत अनिवार्य है। उनके ऊपर हमारा मन्थन होना चाहिए। यह मानो बेटा! सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहता है। तो प्रेरणा पाते रहो और अपने क्रियाकलापों में सदैव रत रहो तो बेटा! देखो, विचार क्या कि मुनिवरो! देखो, देवां ब्रह्मणं देखो, वह राजा कितना महान होता है जो 101 अश्वमेघ याग करता है बेटा! वह इन्द्र कहलाता है वह मानो ये विद्याएँ प्राप्त कर यह जितनी भी उपाधि हैं जैसे इन्द्र है, विष्णु है, शिव है, ब्रह्मा है। मुनिवरो! देखो, वशिष्ठ है, शृंगी है यह सब बेटा! देखो, एक उपाधि मानी गई है। इन्हीं उपाधियों से अलंकृत किए जाते हैं। वे मानो देखो, अपनी आभा में सदैव निहित होकर के बेटा! अपनी उपाधियों को प्राप्त करते रहते हैं।

धर्म से जीवन

आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह कि हम इन्द्र को जाने और इन्द्र को जानकर के हम इस सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करुंगा। हमारे यहाँ आयुर्वेद, अश्विनी कुमारों ने जाना हुआ, बड़ा विशेष माना गया है परन्तु दधीचि के क्रियाकलाप और उसके कर्तव्यवाद में कितनी निष्ठा रही है तो हमें यह सब जानना चाहिए। हमें उसके ऊपर मन्थन और अध्ययन करना चाहिए और विचारते हुए बेटा! इस सागर से पार हो जाएँ, ज्ञान और विज्ञान की आभा में रत होकर के मेरी प्यारी माताओं का जीवन प्राणायाम, प्राण विद्या को जानकर के बेटा! देखो, वह अपने गर्भ की आत्मा से वार्ता प्रकट कर रही है।

ऐसा बेटा! मुझे स्मरण है ब्रह्मवेत्ताएँ मेरी पुत्रियाँ रही हैं। जिन ब्रह्मविद्याओं को प्राप्त करके बेटा! सागर से पार होना उनके लिए बहुत वृत्तियों में रत रहा है।

यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि वह आत्मवेत्ता बनने वाला इन्द्र कहलाता है। मेरे प्यारे! आत्मा को जानो कि आत्मा हमारे शरीरों में मानो देखो, जितेन्द्रीय बनकर के जब मानो रहता है तो अन्तरात्मा प्रसन्न रहता है बेटा! वह जितेन्द्रिय बन करके, वह प्रभु को प्राप्त करता है। ये है बेटा! आज का वाक्, ये प्रभु का जो अनुपम जगत् है वह परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ है वह मानो देखो, आत्मा का वास करने, अमृतम वह बेटा! देखो, पंचमहाभूत है यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन।

ओ3म् ब्रह्मः गणाः आभ्यां रथं दिव्याः वाचन्नमः दधिः वायाः
ओ3म् गतोमन्थामाः आपारथं दिव्याः।। **2.3.1989**